ISSN 2277-7660

पर्यावर । संरक्ष । को समर्पित एक अनूठी पारिवारिक, सामाजिक, साहि यक एवं आ या मक मासिक प ि का

वर्षः 68 अंकः 6 जून, 2017

अमर ज्योति

पर्यावरण अंक

समर्पण

वन्य जीवों व हरे वृक्षों के लिए आत्मोत्सर्ग करने वाले सभी अमर शहीदों को शत-शत नमन करते हुए यह पर्यावरण अंक

(06.10.1930–03.06.2011)

भारत के प्रथम पर्यावरण मंत्री 'बिश्नोई रत्न' **चौ. भजनलाल जी,** पूर्व मुख्यमंत्री, हरियाणा
को छठी पुण्य तिथि (3 जून) पर सादर समर्पित।

प्रकाशक :
बिश्नोई सभा, हिसार

संपादक
डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई

सह संपादिका
श्रीमती अनिला बिश्नोई

कार्यालय पता :
'अमर ज्योति'
श्री बिश्नोई मन्दिर,
हिसार - 125 001 (हरियाणा)
फोन : 8059027929
email: editor@amarjyotipatrika.com,
Website : www.amarjyotipatrika.com

सभा कार्यालय दूरभाष :
फोन : 01662-225804

इस पत्रिका में उल्लेखित सभी पद अवैतनिक एवं निष्काम सेवार्थ है।

सदस्यता शुल्क :
वार्षिक : ₹ 100
25 वर्ष : ₹ 1000

"अमर ज्योति में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के वैयक्तिक हैं। संपादक का इनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। लेख संबंधी आपत्तियों हेतु सीधे लेखक से सम्पर्क करें"

'अमर ज्योति' का ज्ञान दीप अपने घर आँगन में जलाइये।

विषय अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
सबद-63	4
सम्पादकीय	6
साखी	7
वैदिक पर्यावरण संचेतना	8
हिन्दू धर्म एवं पर्यावरण	11
गुरु जांभोजी के पर्यावरण चिंतन की प्रासंगिकता	14
वनस्पति वासो	17
प्रकृति के साथ एकात्म भाव	19
पर्यावरण सरंक्षण के उपाय	22
बधाई सन्देश	23
पर्यावरण बावनी	24
बाल कविताएँ	25
साखी (शहीद जगदीश बिश्नोई के सम्मान में)	26
पर्यावरण दोहे, प्रदूषण के दोहे	26
बिश्नोई धर्म के उनतीस नियमों की वैदिक.....	27
पर्यावरण के सच्चे हितैषी गुरु जाम्भोजी	30
एक सदी, खोया बचपन	31
पूरा आदमी (कहानी)	32
पर्यावरण रक्षक व चिंतक गुरु जाम्भोजी की भगवत्ता	34
भावी पीढ़ी को दें प्रदूषण मुक्त समाज का तोहफा	35
वृक्ष लगाओ और पर्यावरण बचाओ	36
प्राकृतिक संस्कृति वाली जीवन पद्धति के महासूत्र हैं.....	38
पर्यावरण जागरूकता में संचार साधनों की भूमिका	39
पेड़ (गज़ल), धरती दुखियारी	41
वर्तमान समय में पर्यावरण एवं जीव संरक्षण.....	42
पर्यावरण प्रहरी	43
पर्यावरण प्रदूषण को कैसे रोकें ?	44

सभी विवादों का न्यायक्षेत्र हिसार न्यायालय होगा।

सबद 64

दोहा

लूणकरण से जैतसी, अश्व ज मांग्यो एक।
लूणकरण दीन्हों नहीं, मन में राखी टेक।

बीकानेर नरेश लूणकरण ने नारनौल को जीतने के लिये उस पर चढ़ाई की। उनका छोटा पुत्र प्रताप तो युद्ध में साथ गया था। उसको तो एक घोड़ा दिया किन्तु बड़े पुत्र जेतसी को उसके मांगने पर भी घोड़ा नहीं दिया और न ही युद्ध में साथ ले गये। वह राजकुमार खिन्न मन होकर श्री देवजी के पास सम्भराथल पर आ गया था। वहां आकर उसने अपनी व्यथा कथा सुनाई। तब जम्भेश्वर जी ने उसको राज्य प्राप्ति का आशीर्वाद देते हुए सबद सुनाया–

सबद-64

ओ३म् मैं कर भूला मांड पिराणी, काचै कन्ध अगाजूं।
काचा कंध गले गल जायसैं, बीखर जैला राजूं।

भावार्थ– हे जेतसी! तुम्हारे पिता लूणकरण आदि सैनिक किसी कमजोर को दबा करके राज्य हस्तगत करना चाहते है। यह कोई मानवता नहीं है। ये लोग अपने झूठे अहंकार के कारण वास्तव में अपने को, देश को तथा मानवता को भूल गये हैं। इसलिए जबरदस्ती किसी दूसरे ऊपर बल प्रयोग करते हैं। इनको यह पता नहीं है कि यह कच्चा शरीर प्राप्त हुआ है। इससे अकाज नहीं करना चाहिए क्योंकि मिट्टी के घड़े की तरह यह जल से गल जायेगा अर्थात् समय आने से पूर्व ही यह नष्ट-भ्रष्ट हो जायेगा। यदि यह शरीर ही नहीं रहेगा तो फिर यह राज्य कौन करेगा तथा राज्य की भी तो सत्ता स्थायी नहीं है, तो फिर ऐसा व्यर्थ का प्रयत्न किसलिए?

गड़बड़ गाजा कांय बिबाजा, कण विन कूकस कांय लेणा।
कांय बोलो मुख ताजो।

जब यह सभी कुछ स्थायी रहने वाला ही नहीं है तो फिर युद्ध में जाते समय ढ़ोल, तुरही, शंख आदि बाजे किसलिए बजाये जा रहे हैं। ऐसी कौन-सी विजय हासिल करने जा रहे हैं। जिस विजय की प्राप्ति का प्रयत्न किया जा रहा है वह तो सभी कुछ कण के बिना थोथा भूसा घास ही लेना है। तो फिर इस निरर्थक घास चांचड़ा के लिये क्यों मुख से कटु अप्रिय झूठे वचन बोल रहे हो। क्या मुख से बोलने मात्र से ही सफलता मिल जायेगी?

भरमी वादी अति अहंकारी, लावत यारी, पशुवां पड़े भिरांति।
जीव विणासै लाहै कारणै, लोभ सवारथ खायबा खाज अखाजूं।

जो लोग नित्य युद्ध में ही रत रहते है वे लोग सदसद् विवेक रहित झूठे वाद-विवाद में रत तथा अत्यधिक अहंकारी हो जाते हैं तथा अपने जैसे लोगों से ही मित्रता रखते हैं। कभी किसी सज्जन पुरुष के पास भी नहीं बैठते। जिससे पशुओं में भी इनका अपनत्व प्रेम, दया भाव नहीं रहता। जिस कारण से अपने लाभ के लिये जीवों को मारते हैं। जिह्वा का रस लोभ, स्वकीय उदर पूर्ति तथा स्वार्थ के लिये अखाद्य तथा पशुओं जीवों को मार कर खा जाते हैं। जब ये लोग पहले पशुओं को मार डालते हैं तो पीछे मनुष्यों को भी मारने में जरा भी दया नहीं करते।

जो अति काले ले जम काले तेपण खीणा, जिहिं का लंक गढ़ था राजों।
बिन हस्ती पाखर विन गज गुड़ियों, बिन ढ़ोला डूमा लाकड़ियो।

जिसने भी देशकाल मर्यादा का अतिक्रमण किया है वह अतिशीघ्र समय से पूर्व ही यमदूतों के हाथ चढ़कर मृत्यु को प्राप्त हो गया। ऐसे लोग इस संसार में बहुत हो चुके हैं। किन्तु उदाहरण के लिये रावण लंका जैसे राज्य में सम्पन्न था। लंका सो कोट समंद सी खाई। लंका जैसा कोट समुद्र जैसी चारों तरफ जिसके खाई थी। किन्तु वह भी नहीं बच सका। इतने साधन सम्पन्न व्यक्ति के भी मृत्यु समय में न तो रथ में जुते हुए घोड़े पाखर कसे हुए हाथी ढ़ोल बजाने वाले डूम तथा न ही अर्थी में कंधा देने वाले पीछे शेष बच पाए थे।

जाकै परसण बाजा बाजै, सो अपरंपर काय न जंपो।
हिन्दू मुसलमानों, डर डर जीव के काजै।

हे हिन्दू, मुसलमानो! जिस अपरंपर परमपिता परमात्मा के दर्शन, स्पर्श से अनेकों प्रकार के अनहद बाजे बजने लग जाते हैं, उन बाजों को सुनते हुए साधक समाधिस्थ हो जाते हैं, ऐसे बाजों को क्यों नहीं सुनते। मृत्यु दु:ख से डरते हुए अपने जीव की भलाई के लिये अमृतमय परमात्मा की शरण ग्रहण करो।

रावां रंका राजा रावां रावत राजा, खाना खोजा, मीरा मुलकां घंघ फकीरां।
घंघा गुरवां सुर नर देवा, तिमर जु लंगा, आयसा जोयसा, साह पुरोहितां।
मिश्र ही व्यासां रूंखां बिरखां आव घटंती, अतरा माहे

कूण विशेषों। मरणत एको माघों।

सामान्य राजा, रंक, राजाओं के राजा, सर्वोपरि सम्राट, खान, खोजी, मीर, जमीदार, गंगा के निवासी फकीर, गंगा गुरु, सुर, नर, नरश्रेष्ठ, कौपीनधारी, नंगे संन्यासी, योगी, ज्योतिषी, साहू, सेठ, पुरोहित, मिश्रा, व्यास, रूंख, वर्षा इत्यादि सभी की आयु घटती जाती है। इनमें काल के सामने किसकी विशेषता है। सभी को काल बराबर क्षीण कर रहा है। बिना हरि की भक्ति के सभी को एक ही मार्ग या तरीके से मरना पड़ेगा।

पशु मकेरूं लहै न फेरूं, कहे ज मेरूं सब जग केरूं।
साचै से हर करै घणैरूं।

बन्धन से मुक्त हुआ पशु भी वापिस बन्धन में नहीं आना चाहता तो फिर मनुष्यों को बन्धन में कैसे रख सकता है। किन्तु हे मानव! तूं कहता है कि यह सम्पूर्ण संसार ही मेरा है, मेरे ही अधीन रहे, मैं ही सभी का स्वामी सदा ही बना रहूं यह कैसे हो सकता है। इसके लिए तेरे को अत्यधिक संघर्ष करना ही पड़ेगा। फिर भी तूं विफल ही रहेगा। जिस वस्तु को तुम उत्तम अच्छी मानता है। उसकी प्राप्ति की इच्छा अधिक करता है। वह वस्तु प्राप्त होना या न होना तुम्हारे अधीन नहीं है।

रिण छाणै ज्यूं बिखर जैला, तातै मेरू न तेरूं।
बिसर गया ते माघूं, रक्तूं नातूं, सेतूं धातूं कुमलावै ज्यूं शागूं।

जो वस्तु तुम्हें प्यारी लगती है वह तो वन में पड़े हुए उपले-छाणें की तरह ही है। जो थोड़े दिन बाद ही बिखर जाता है। इसीलिए वह धन दौलत न तो मेरा है और न तेरा है। यह तेरा मेरा कुछ भी नहीं है। ऐसे धन, यश के लोभी लोग अपने गन्तव्य स्थान जाने के मार्ग को भूल जाते हैं। जिस शरीर को तुम नित्य समझते हो। यह तो रक्त, हड्डी, वीर्य आदि सप्त धातुओं से बना हुआ है। जब तक इसको ये वस्तुएं उपलब्ध रहेंगी तथा इनके ग्रहण करने की शरीर में योग्यता रहेगी, तभी तक यह जिंदा है नहीं तो वनस्पति की भांति कुम्हला कर समाप्त हो जायेगा।

जीव र पिंण्ड बिछोवा होयसी, ता दिन दाम दुगाणी।
आड न पैको रती विसोवो सीझै नाही, ओ पिण्ड काम न काजूं।

जिस दिन जीव तथा शरीर का विछोह होगा उस दिन यह तेरा धन दौलत रुपये कुछ भी काम नहीं आयेंगे। न तो मृत्यु समय में रति पैसा रुपया सहायता करेगा, न ही ये परिवार का सम्बन्ध ही सहायक होगा तथा यह तेरा पंच भौतिक शरीर भी किसी काम का नहीं रहेगा। एक क्षण भी उस घर में रखने लायक नहीं होगा।

आवत काया ले आयो थो, जातै सूकौ जागो।
आवत खिण एक लाई थी, पर जातै खिण न लागो।

जब इस संसार में पंचभौतिक शरीर लेकर आया था तो एक क्षण भर का समय लगा था किन्तु वापिस जाते समय वह काया भी छोड़ कर जायेगा और एक क्षण का भी समय नहीं लगेगा। इस संसार में आते समय तो लाभ में था किन्तु छोड़कर जाते समय में हानि में है।

भाग परापति कर्मा रेखा, दरगै जबला जबला माघों।
बिरखे पान झड़े झड़ जायला, तेपण तई न लागूं।

पूर्व जन्म के कर्मों के अनुसार ही यह जीवन मिलता है तथा इस जीवन में किये हुए कर्मों की रेखाएं खींचती हैं अर्थात् कर्मों के संस्कार स्थिर होते हैं। उन्हीं कर्मों के अनुसार आगे स्वर्ग, नरक या मुक्ति का मार्ग न्यारा न्यारा हो जाता है। किन्तु यह सत्य है कि वृक्ष के पत्ते एक बार जो झड़ जाते हैं वे पुनः वापिस नहीं लगते। उसी प्रकार से यह जीवन एक बार व्यतीत हो गया तो यही जीवन दोबारा लौटकर नहीं आ सकता। आने वाला जीवन इससे सर्वथा नवीन ही होगा।

सेतूं दगधूं कवलज कलियो, कुमलावै ज्यूं शागूं।
ऋतु बसंती आई और भलेरा शागूं।

जिस प्रकार से भयंकर सर्दी ऋतु में कमल की कलियां जल जाती हैं तथा वनस्पति भी कुम्हला जाती है। किन्तु वही बसन्त ऋतु वापिस आने पर फिर से पते फूल फल सम्पन्न हो जाती हैं। उसी प्रकार से कमल व वनस्पति की भांति निर्लेप तथा परोपकारी व्यक्ति यदि एक बार कष्ट में पड़ जाये तो भी समय आने पर फिर प्रफुल्लित हो जाता है।

भूला तेण गया रे प्राणी, तिहिं का खोज न माघूं।
विष्णु विष्णु भण लई न साई, सुर नर ब्रह्मा को न गाई।

हे भूले-भटके हुए प्राणी! तुमने उस परमात्मा तथा मुक्ति का मार्ग नहीं खोजा, व्यर्थ में ही समय व्यतीत कर दिया। तुझे उस परमात्मा की प्राप्ति के लिये बार-बार विष्णु का स्मरण जप एकाग्र मन से करना चाहिये था। उस विष्णु का गुणगान किस देवता, मानव तथा ब्रह्मा ने नहीं किया अर्थात् विपत्ति काल में सभी ने विष्णु को ही याद किया है तथा विष्णु ने ही विपति से छुटकारा दिलाया है।

तातै जंवर बिन डसीरे भाई, बास बसंते कीवी न कमाई।
जंवर तणां जमदूत दहैला, तातै तेरी कहा न बसाई।

हे प्राणी! तूने इस संसार में रहते हुए यदि शुद्ध कमाई नहीं की तो तुझे इस जीवन के समाप्त होने पर कष्ट उठाना पड़ेगा क्योंकि तेरे पास वह शुभ कर्मों का पुण्य नहीं होगा जिससे तूं छूट सकता था। वहां पर तुझे बड़े भयंकर विकराल यमदूत जलाएंगे काटेंगे तब तूं रोयेगा तो तुझे छुड़ाने वाला कोई नहीं मिलेगा और न ही तेरा वश चलेगा।

- साभार 'जंभसागर'

सम्पादकीय

आओ पर्यावरण रक्षा का संकल्प लें

पर्यावरण मानव जीवन का आधार है। वर्तमान मानव ने ज्ञान-विज्ञान का सहारा लेकर अनेक साधन, संसाधन जुटाए हैं। नित नए अविष्कारों ने उसके जीवन को सुखमय बनाने का कार्य किया है। एक ओर जहां विश्व में प्रगति की इबारत लिखी गई है वहीं दूसरी ओर वर्तमान विश्व विभिन्न समस्याओं और संकटों से ग्रस्त है, परन्तु पर्यावरण एक ऐसा संकट है जिससे पूरा विश्व एक साथ चिंतित है। विकसित, अविकसित और विकासशील कोई भी देश इस समस्या से अछूता नहीं है।

पर्यावरण परमात्मा द्वारा प्रकृति को प्रदत्त अनूठा उपहार है जो पृथ्वी को अन्य ग्रहों से श्रेष्ठ बनाता है। दूर-दूर तक लहराते वन, बर्फ से लदी चोटियां, पेड़ों से लदे पहाड़, निर्मल जल से ओत-प्रोत झरने, नदियां और झीलें इस पृथ्वी के शृंगार है, जिनके लिए अन्य ग्रह तरस रहे हैं। अन्य ग्रहों पर जीवन नहीं न होने के कारण है कि उपर्युक्त पदार्थ वहां एक साथ उपलब्ध नहीं हैं। बात स्पष्ट है कि उपर्युक्त सब वस्तुएं नहीं रही तो धरती पर भी जीवन नहीं बचेगा और हमारा अस्तित्व समाप्त हो जाएगा।

पिछली आधी शताब्दी से जिस प्रकार प्रकृति का असीमित दोहन हो रहा है, अगर यही सब कुछ चलता रहा तो मानव जाति का अंत अधिक दूर नहीं है। अधिकाधिक भौतिक सुविधाएं प्राप्त करने और विकास की चकाचौंध में हमारी आँखे चुंधिया गई हैं और हम सामने खड़े खतरे से अनभिज्ञ हो गए है। स्वार्थ के वशीभूत होकर हमने प्रकृति का मूल स्वरूप तहस-नहस कर दिया। प्रकृति के फेफड़े कहे जाने वाले जंगलों का सफाया कर गगन चुम्बी इमारतें खड़ी कर दी, जो हमारी मूर्खता की कहानी कह रही हैं। मशीनीकरण ने हमें मशीन बना दिया है, जिससे हमारी सोचने-समझने की शक्ति और सहृदयता समाप्त हो गई। आज मूर्खता का पुतला बना यह मनुष्य एक और आक्सीजन के प्रदाता वनों पर कुल्हाड़ी चला रहा है तो दूसरी ओर अपने विलासिता के प्रतीक वाहनों और लोभ लालच के प्रतीक कल कारखानों से धुआँ उगल रहा है। इसका परिणाम भी सामने आने लगा है। आज विश्व के प्रमुख 91 देशों के प्रमुख 1100 शहर रहने लायक नहीं रह गए हैं। वायु प्रदूषण में मरने वालों का आंकड़ा दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। अकेले भारत में प्रतिवर्ष प्रदूषण से 12 लाख मौतें होती हैं। लगभग एक करोड़ पशु-पक्षी प्रदूषण की चपेट में आकर अपना जीवन हार जाते हैं। हमारा सुरक्षा कवच 'ओजोन परत' दिन-प्रतिदिन क्षीण होता जा रहा है जिसके परिणाम बड़े गंभीर होंगे।

ग्लोबल वार्मिंग हमारे द्वारा उत्पन्न की गई एक नई समस्या है। पूरे विश्व का तापमान बढ़ रहा है, हिमखण्ड पिघल रहे हैं, समुद्रों का जलस्तर बढ़ रहा है, समुद्र में उठने वाली सुहानी लहरें अब सुनामी में बदलने लगी है। दूसरी ओर सर्दियों में बर्फबारी भी सदियों का रिकार्ड तोड़ रही है। कुछ वर्ष पहले अपने आपको विकसित कहने वाला पूरा यूरोप बर्फ में जम गया था। अन्य विकसित देशों का भी यही हाल है।

जल प्रदूषण भी कम घातक नहीं है। 80 प्रतिशत बीमारियों का जन्मदाता जल प्रदूषण है। आश्चर्य है हम स्वयं अपना जल प्रदूषित करते हैं फिर मजबूरी में उनका पान करते है और परिणामस्वरूप बीमार होकर डॉक्टरों के चक्कर लगाते हैं। मनुष्य से बड़ा मूर्ख और कौन होगा?

अब प्रश्न यह उठता है कि इस वैश्विक समस्या का समाधान कैसे हो? इस समस्या का समाधान एक ही है, कि हम अपनी जीवन दृष्टि व शैली में परिवर्तन करें। भौतिक साधनों का कोई अंत नहीं होता इसलिए संयमित जीवन जीते हुए प्रकृति का अनावश्यक दोहन न करें। गुरु जम्भेश्वर सदृश महापुरुषों द्वारा दिखाए गए पथ का अवलम्बन करें। पर्यावरण प्रदूषण पर घड़ियाली आँसू बहाना छोड़कर कोई धरातली कार्य करें। वर्तमान पेड़ों की रक्षा के साथ-साथ अधिकाधिक वृक्षा रोपण करें, यही जम्भेश्वर भगवान के प्रति सच्ची श्रद्धा होगी और वृक्षों पर प्राण न्यौछावर करने वाले शहीदों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

साखी

वील्होजी कृत बलिदान की साखी

करमणी चलणों इण संसार, संभल कर कर चालिये।
जीवड़ा नै जोखो होय, सोई ओ डर पालिये।
पालिये सो डर चेत अवसर, राख मन अमरापुरी।
करो सारी गुरु फुरमाई, चेतकर करणी खरी।
मान आण पिछाण सतगुरु, पाप से मन पालिये।
चेतणां संसार करमणी, संभल कर कर चालिये।1।
करमणी जपै विसन को नाम, जगत गुरु मन में रहै।
भक्ति तणां न मेले आंण, हीणों वैण न कहै।
वैण हीणों न कहै करमा, रही सिर कंध मांडियो।
सांभरण संग्राम हुवो, मरणै को बीड़ो लियो।
मैल मायाजाल चाली, राख तागो पंथ को।
सुरग सामै पांव परठे, जपै नांव विसन को।2।
करमणी चलती सिंवरियो, श्याम शरीर सत घणों।
करमणी गौरा लिवी बुलाय, ओ अवसर छै आपणों।
आपणों अवसर राम गौरा, लिखी कलम सो नहि मिटे।
जाय चौहटे शीश मांड्यो, लिखी स्याही ना मिटे।
बाहि तेग समांहि आसु, है है कारो बरतियो।
धन्य तेरो ध्यान कर्मा, सीझती साको कियो।3।
गुरु फरमाई खांडा धार, अवसर आपो सारियो।
आपण जीवड़ो कबूल कर, पर जीव यूं उबारियो।
उबारियो जीव अरू जीवा काजै, असुरां खोटो हियो।
रूंखां उपर मरण धार्यो, कीजै ज्यूं करणी कियो।
करणी पाल उजाल सतपंथ, प्रेम तत्व उपाइयो।
जीव काजै प्राण दीन्हे, कीयो गुरु फुरमाइयो।4।
करमां खड़ी छै खेजड़ियां काज, रैवासड़ी के चौहठे।
सम्मत सौला सौ संसार, समय मंझ अरू इकसठे।
इकसठे मंझ और जेठ मासे, किसन पख अरू थावर दिनें।
बीज के दिन कियो पयाणों, सरियो सूधों मनें।
निरवाही नाम न सीख, मोटी पांव दे बेड़े चड़ी।
गुरु परसादे वील्ह बोलै, करमां अरू गौरा खड़ी।5।

भावार्थ- जोधपुर जिले के अन्तर्गत रैवासड़ी बिश्नोइयों का गांव है। उसी ग्राम की रहने वाली करमां और गौरां के बलिदान की कथा इस साखी में वील्होजी ने वर्णित की है। एक दिन गौरां करमां के घर अकस्मात् पहुंची और करमां से कहने लगी-हे करमां! इस संसार में रहकर अपने को जीवन यापन करना है परन्तु बहुत ही संभलकर चलना होगा। जीव को प्रति क्षण खतरा बना ही रहता है इसलिये सावधानी पूर्वक ही चलना है। सदा दुर्गुणों बुराइयों से डरते हुए मन की इच्छा अमरापुर की तरफ होनी चाहिये। जैसा गुरु ने कहा है वैसा ही करें और सचेत होकर कर्त्तव्य कर्म करें। अभिमान को छोड़कर सतगुरु की पहचान करें तथा पाप कर्मों से मन को हटा दें। इस संसार में सचेत होना है और संभलकर चलना है।1।

हे करमणी! विष्णु के नाम का स्मरण करो। जगत गुरु को मन में ही रखें अर्थात् उनका ही ध्यान करें। भक्ति का अहंकार न करें तथा कटु असत्य वचन न बोलें, चुभती बात किसी से नहीं कहें। वहां जमात के लोग वृक्षों की रक्षा करने के लिये अपना सिर देने के लिये तैयार थे। दोनों ओर से भयंकर संग्राम होना निश्चित था। मरने मारने के लिये बीड़ा उठा लिया था। मैं तो मोह-माया को छोड़कर चली आयी हूं। पंथ की रक्षा करना मेरा परम कर्त्तव्य है। मेरा तो स्वर्ग की तरफ पांव उठ चुका है और विष्णु का जप करते हुए यहां तक आ चुकी हूं।2।

हे करमां! मैंने घर से बाहर निकलते ही घनश्याम विष्णु का स्मरण किया था जिससे मेरे शरीर में शक्ति का संचार हुआ है। इस प्रकार से गौरा ने करमां को अपने पास बुला लिया और कहने लगी-इस समय अपना अवसर आ चुका है। यह अपना सौभाग्य है तथा जो कुछ भाग्य में स्याही से लिखा गया है वह कभी मिटने वाला नहीं है। इस प्रकार से करमां और गौरां ने आकर दोनों दलों के बीच में अपना सिर झुका दिया। उधर वृक्ष काटने वालों ने राक्षसी वृति के कारण तलवार चलाई और कहा अब इसे संभालो। उसी समय ही चारों ओर हा-हाकार होने लगा। कवि कहते हैं कि धन्य है गौरां और करमां जिन्होंने प्रत्यक्ष देखते ही देखते अपने प्राणों की बलि दे दी परन्तु वृक्ष नहीं कटने दिये।3।

गुरु ने जो मार्ग बताया था वह तो खांडे की धार जैसा तीखा है। अवसर आने पर इन बहनों ने चलकर दिखाया। अपने आप को बलिदान देना स्वीकार किया परन्तु पराये जीवों की रक्षा करने में वीरता दिखलाई। इस प्रकार परोपकार के लिये अपना शरीर समर्पण कर दिया किन्तु असुरों का हृदय तो कलुषित था, वे क्या जाने परोपकार के महत्त्व को। उन्होंने वृक्षों की रक्षा के लिये मरना सहर्ष स्वीकार किया। जैसा मानव का कर्त्तव्य होता है वैसा ही किया। कर्त्तव्य कर्मों की रक्षा करते हुए पंथ का नाम जगत में उज्ज्वल किया और प्रेम तत्व का पसारा किया। जीवों की भलाई के लिये प्राण दे दिये। जैसा गुरु ने कहा था वैसा ही करके दिखाया।4।

करमां और गौरां ने आत्म बलिदान दिया वह भी खेजड़ी वृक्षों की रक्षा के लिये तथा रैवासड़ी गांव के चौराहे पर सभी के सामने। यह घटना संवत् 1661 के ज्येष्ठ महीने कृष्ण पक्ष शनिवार को घटित हुई थी। उस दिन द्वितिया तिथि थी। उसी दिन गौरां करमां ने इस पंच भौतिक शरीर का परित्याग स्वेच्छा से किया। परमात्मा के बताये हुए मार्ग का पूर्णत: निर्वाह किया और संसार में अपनी महानता का परिचय देकर स्वर्ग से आये हुए विमान पर बैठकर चली गई। गुरु जाम्भोजी की कृपा से वील्होजी कह रहे हैं कि इस प्रकार से करमां और गौरां का बलिदान हुआ।5।

साभार- साखी भावार्थ प्रकाश

वैदिक पर्यावरण संचेतना

पर्यावरण शब्द की निष्पत्ति परि+आवरण इन दो शब्दों के योग से होती है, जिसका अभिप्राय एक ऐसी परिवृत्ति से है जो मानव को चारों ओर से आवृत्त करती हुई उसके जीवन और क्रियाओं को सम्पूर्णता में प्रभावित करती है। इसमें जलमण्डल, स्थलमण्डल एवं वायुमण्डल के समस्त भौतिक एवं रासायनिक तत्त्व समाहित है।

जीवन की सम्भावना पर्यावरण की परिधि में जलवायु एवं भोजन की सम्पूर्ण आपूर्ति के आधार पर ही साकार हो सकती है। समस्त प्राणी स्थलमण्डल से भोजन, जलमण्डल से जल और वायुमण्डल से प्राणवायु प्राप्त कर ही जीवन पथ पर अपने आपको संचरणशील एवं गतिशील करने में समर्थ हो पाते हैं।

जलों से युक्त जलमण्डल,[1] यह पृथ्वी अर्थात् स्थलमण्डल[2] तथा सभी ओर व्याप्त वायुमण्डल[3] ये तीनों मिलकर अपने जीवनयुक्त भागों के योग से इस सम्पूर्ण जीवमण्डल[4] अर्थात् पर्यावरण की संरचना करते हैं। प्रत्येक जीव जीवन के आवश्यक तत्त्वों के रूप में जल, भोजन तथा प्राणवायु ग्रहण करता है। ये तीनों मण्डल एक दूसरे के पूरक हैं जिनका संरक्षण प्राणीमात्र का धर्म है।

प्राचीन समग्र वैदिक वाङ्मय, अद्यतन वैज्ञानिक ज्ञान एवं उपलब्धियों का सर्वोत्तम कोश रहा है इसमे वैज्ञानिक साहित्य की सम्पदा आशातीत समृद्ध रही है, चाहे वह भूगर्भ-विज्ञान हो, चाहे वह प्राणिविज्ञान हो, चाहे वह भौतिक विज्ञान हो, चाहे वह चिकित्सा विज्ञान हो या फिर वह पर्यावरण विज्ञान हो। यह मानव मनीषा की सर्वोत्कृष्ट उपलब्धियों का अमूल्य अंश है। इसमें प्रकृति के साथ तादात्म्य स्थापित कर सह अस्तित्व की भावना से आप्लावित हो जीवन यापित करने वाले मंत्रद्रष्टा ऋषियों ने जीवनदायिनी ऊषा, पृथ्वी, जल, वायु, सूर्य, वन औषधि प्रभृति विविध प्राकृतिक शक्तियों की अन्तर्भावना से अभ्यर्थना की है।

वायु, जल, पेड़-पौधे, वनस्पतियाँ, भूमि, आकाश, सूर्य आदि सभी पर्यावरण के संघटक तत्त्व हैं। वेद में इन सब तत्त्वों को देव नाम से सम्बोधित किया गया है, जिसका आशय दिव्यगुण समन्वय से है, अर्थात् ये सभी तत्त्व अपने दिव्य गुणों के प्रकाशन से पर्यावरण को शुद्ध एवं जीवन अनुकूल बनाते हैं। अथर्ववेद में जल, वायु और औषधियों को पर्यावरण के संघटक तत्त्वों के रूप में परिभाषित किया गया है। ये संसार को जीवन शक्ति देकर उसे प्रभावित करने वाले हैं। अतएव इन्हें छन्द या आच्छादक कहा गया है। ये संसार की समस्त गतिविधियों के प्रवर्तक हैं इनके बिना जीवन असम्भव है। इनके नाम और रूप अनेक हैं इसलिए इन्हें 'पुरुरूपम्' नाम से संकेतिक किया है।

त्रीणि छन्दांसि कवयो वियेतिरे, पुरुरूपं दर्शतं विश्वचक्षणम्।[5]

आपो वातो ओषधयः, तान्येकस्मिन् भुवन अर्पितानि॥

उक्त मंत्र से यह चिह्नित होता है कि वायु और जल की तरह औषधियाँ भी पर्यावरण के घटक तत्त्वों में अन्तर्निहित हैं।

'जीवन शरदः शतम्' का उद्घोष करने वाले वेद शतायु होने के लिए स्वच्छ जल, विशुद्ध अन्न, पवित्र प्राणवायु एवं अकलुषित भूमि को महत्त्वपूर्ण कारक के रूप में व्याख्यायित करते हैं। एक अनुमान के आधार पर इस सम-विषम समन्वित भूग्रह में सम्भवतः डेढ़ करोड़ वर्ष पूर्व मानवीय सृष्टि का सूत्रपात हुआ। मानव की जीवनयात्रा झर-झर की ध्वनि से झंकृत करने वाले झरनों, परम पवित्रपानीय पय धारा प्रवाहित करने वाली कल-कल करती नदियों, वृक्षतरु गुल्मलता प्रभृति वनस्पतियों के संस्पर्श से सुगन्धित मंद-मंद आन्दोल्यमान धीर समीर के कोमल स्पर्शों, परमस्वच्छन्द गगन संचरणशाली पक्षितकुल के सुश्रवणीय चित्ताकर्षक कलरव कूजन एवं चहचहाहट की कर्णप्रिय ध्वनियों के साथ प्रारम्भ हुई, निश्चित रूप से पर्यावरण का यह तत्कालीन स्वरूप नितान्त आह्लादकारी रहा होगा, परन्तु आज औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप बढ़ती नगरीय व्यवस्था से समाज की समस्त ईकाइयों में चाहे वे आर्थिक हों, सामाजिक हों, राजनैतिक हों, धार्मिक हों या फिर सांस्कृतिक हों सर्वत्र महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। जनसंख्या की असम्भावित वृद्धि के परिणामस्वरूप ऊर्जा का अधिकतम उपयोग लोगों की सुख-सुविधाओं एवं आवश्यकताओं की सम्पूर्ति हेतु किया जाने लगा, उपभोक्ता के इस निरन्तर बढ़ते क्रम में लोगों ने प्राकृतिक गैस, कोयला, जीवाश्य, ईंधन आदि का प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया, जिससे उत्पन्न कार्बन-डाई-आक्साइड की

मात्रा वायुमण्डल में आशातीत अवरोधरहित निरन्तर बढ़ रही है। प्रकृति से प्राप्त जल, भूमि एवं वायु का दुरुपयोग अथवा जैवमण्डल द्वारा प्राप्त ऊर्जा का अनुपात से अधिक प्रयोग पर्यावरण प्रदूषण कहलाता है। औद्योगिक प्रगति से उत्पन्न प्रदूषण की समस्या इस हद तक विकृत हो गई है कि कई स्थानों पर तेजाबी (Acid Rain) वर्षा हो रही है, जिसका दुष्प्रभाव जीव-जन्तुओं, भूमि, वनस्पतियों पर स्पष्ट देखा जा सकता है। कल-कारखानों से निकले अपद्रव्य, धुआं, गैस, कूड़ा-कचरा, वाहन विस्तार, वन विनाश, जनसंख्या विस्फोट आदि प्रदूषण के महत्त्वपूर्ण घटक हैं। इनसे पर्यावरण की कलुषता इस सीमा तक बढ़ गई है कि सम्प्रति स्वच्छ जल, स्वच्छ वायु, खाद्य, अन्न एवं निवास योग्य भूमि भी अत्यन्त दुर्लभ हो गई है। आज पर्यावरण की समस्या राष्ट्रीय समस्या ही नहीं अपितु एक वैश्विक समस्या है। यह लगातार सुरसा के मुँह की भांति विकराल से विकरालतम होती जा रही है। इसके समाधान में वैदिक चिन्तन अवलोकनीय है।

वैदिक वाङ्मय में पर्यावरण प्रदूषण एवं पर्यावरण संरक्षण पर प्रकाश डालते हुए भूमि-प्रदूषण, जल-प्रदूषण एवं यांत्रिक उपकरण जन्य विविध प्रदूषणों तथा इनके शोधन के उपायों का निर्देश भी विभिन्न वैदिक ऋतुओं में प्रतिबिम्बित किया गया है-

स्थलमण्डल तथा जलमण्डल, वायुमण्डल से आवृत्त है जो उभय मण्डल के ऊपर गैसीय आवरण बनाता है। इनकी निश्चित कोई अवधि नहीं है, इसमें 200 मील ऊपर तक गैसों की उपलब्धता है। वायु-वाष्प अनिश्चित मात्रा में तथा निष्क्रिय गैसें अत्यल्प मात्रा में उपस्थित होती हैं। निष्क्रिम गैसों को छोड़कर वायुमण्डल की सभी गैसें जीवों के शरीर के चयापचयी घटक के रूप में उपयोग में आती हैं। श्वसनार्थ ऑक्सीजन तथा प्रकाश संश्लेषणार्थ कार्बन-डाईआक्साइड नितान्त अपेक्षित हैं।

'शरीरान्तः संचारी वायुः प्राणः' इस वचन से इंगित होता है कि वायु प्राणशक्ति है, जीवन का अधार है इसके बिना जीवन की संचरणशीलता एवं गतिशीलता सर्वथा असम्भव है। अतएव जीवन के सम्यक् संचालन हेतु वायु प्रदूषण के प्रशमन की नितान्त आवश्यकता है 'ये पर्वताः सोमपृष्ठा आपः। वातः पर्जन्यः आदग्निस्ते क्रव्यादमशीशमन्' इस अथर्ववेदीय ऋचा में पर्वत, जल, वायु, वर्षा और अग्नि को पर्यावरण शुद्ध करने वाले तत्त्वों के रूप में परिगणित किया गया है। ये प्रदूषण को नष्ट करते हैं और पर्यावरण को शुद्ध करते हैं। इसी प्रकार ऋग्वेद के एक प्रसंग में इस प्रकार कहा गया है-

द्वाविमौ वातौ वात आ सिन्धोरापरावतः
दक्षं ते अन्य आ वातु परान्यो वातु यद् रवः।

इस मंत्र का आशय यह है कि श्वास निश्वास रूप दो वायु चलती हैं, एक बार से समुद्र तक तथा दूसरी समुद्र से बाहर के वायुमण्डल तक। हे मनुष्य! यह प्रथम वायु तुम्हें बल प्राप्त कराये और दूसरी वायु शारीरिक दोषों को अपने साथ बाहर ले आये। हे शुद्ध वायु! तुम अपने साथ औषधि को लाओ, हे वायु! शरीर में जो मल है, उसे तुम बाहर निकालो, तुम सब रोगों की दवा हो तुम देवों के दूत बनकर विचरते हो। इसी आशय की अभिव्यक्ति एक अन्य मंत्र से भी होती है-

आ वात वाहि भेषजं वि वात वाहि यद् रवः।
त्वं हि विश्वभेषज देवनां इत ईयसे।[7]

वायु में दो गुण हैं प्राणवायु के द्वारा मनुष्य में जीवन शक्ति का संचार करना और अपान वायु के द्वारा सभी दोषों को शरीर से बाहर करना, इसलिए वायु को विश्व-भेषज कहा गया है क्योंकि यह सभी रोगों और दोषों को नष्ट करता है।

ऋग्वेद के एक अन्यत्र प्रसंग में उक्त तथ्य की परिपुष्टि 'न चिन्तु वायोरमृतं विदस्येत्।'[8] इस ऋचा में संदर्भित की गई है। वायु में अमृत-तत्त्व है, जीवन तत्त्व है, जिसको यहाँ ऑक्सीजन के रूप में सम्बोधित किया गया है जो यह संदेश देता है कि हम ऐसा कोई कार्य न करें जिससे वायु में अमृत-तत्त्व अर्थात् ऑक्सीजन की कमी हो-

यददो वात ते गृहे अमृतस्य निधिर्हितः।[9]
तेन नो देहि जीवसे।

इस मंत्र के माध्यम से भी ऋग्वेद यह घोषित करता है कि हे वायु! तुम्हारे पास अमृत का खजाना है तुम ही जीवनशक्ति के दाता हो, तुम संसार के जनक, भाई, मित्र और सभी रोगों की औषधि हो। ऋग्वेद के एक और मंत्र में भी औषधि देकर आरोग्यता प्रदान करने तथा दीर्घायु होने की कामना से वायु की अभ्यर्थना की गई है-

वात आ वातु भेषजं शुभु मयोधु नो हृदे।[10]
प्राण आयूंषि तारिषत्।

यह सर्वविदित तथ्य है कि कार्बन-डाई-आक्साइड की निरन्तर बढ़ती मात्रा पर्यावरण की कलुषता में महत्वपूर्ण हेतु हैं तो जीवन के लिए अत्यन्त विनाशक है,

यह वृक्षों एवं वनस्पतियों की उदारता है वे शिव की भांति कार्बन-डाई-आक्साइड रूपी विष को स्वयं पीकर मानव जाति के कल्याण के लिए ऑक्सीजन रूपी अमृत का पान करते हैं, इसलिए वेदों का यह निर्देश है कि वायु-प्रदूषण से बचने के लिए वनों में वनस्पतियों का संवर्धन करें-

वनस्पतिं वन आस्थाप्यध्वम्[11]

पुनः ऋग्वेद के एक महत्त्वपूर्ण प्रसंग में निम्न मंत्र द्वारा-

पूर्वीरस्य निष्पिधो मर्त्येषु पुरु वसूनि पृथिवी बिभर्ति।
इन्द्राय द्याव ओषधीरुतापो रयिं रच्छन्ति जीरयो वनानि।[12]

पृथ्वी के अन्दर विद्यमान समस्त खनिजों (रत्न, मणि, पेट्रोल, कोयला एवं तेल) की सुरक्षा के लिए वृक्षों एवं वनस्पतियों को उत्तरदायी घोषित किया गया है। ये वृक्ष और वनस्पतियाँ एक लम्बी प्रक्रिया के द्वारा इन पदार्थों के जनक माने जाते हैं।

यदि व्यक्ति अपने क्षुद्र स्वार्थों में अंधा होकर कार्बन-डाई-आक्साइड का अवशोषण करने वाले वृक्षों एवं वनों पर इसी क्रम से कुल्हाड़ी बरसाता रहा तो वातावरण में कार्बन-डाई-आक्साइड इस मात्रा तक बढ़ जाएगी कि समस्त धन-धान्य, वन, वनस्पतियाँ स्वयमेव नष्ट हो जाएंगी जो समस्त मानवता के लिए एक अभिशाप सिद्ध होगा। ग्रीन हाऊस प्रभाव भी कार्बन-डाई-आक्साइड की बढ़ती मात्रा का परिणाम है जो भू-गर्भ से उत्सर्जित होने वाली तापीय ऊर्जा को वायुमण्डल से बाहर जाने से रोकती हैं। परिणामतः पृथ्वी के औसत तापमान में लगातार वृद्धि हो रही है जो निश्चित रूप से विनाशकारी है। अतः वृक्षों, वनस्पतियों के कर्तन का परित्याग कर सृजन की शुरूआत करनी चाहिए। इस संदर्भ में मंत्रदृष्टा ऋषि के यजुर्वेदीय निम्न कथन विचारणीय हैं-

अयं हि त्वा स्वधितिस्तेतिजानः प्रणिनाय महते सौभाग्याय।
अण्तस्त्वं देव वनस्पते शान्तवल्शो विरोह सहस्त्रवल्शा
वि वयं रुहेम॥[13]

अर्थात् हे वनस्पति! इस तेज कुल्हाड़े ने महान् सौभाग्य के लिए तुम्हें काटा है तुम्हारा उपयोग हम सहस्त्रांकुर के रूप में करेंगे। यहाँ सहस्त्रांकुर का आशय एक के बदले हजार से है। कहने का अभिप्राय यह है कि यदि अत्यन्त आवयकता कार्य हेतु वनस्पतियों एवं वृक्षों का काटना भी पड़े तो उन्हें ऐसी विशिष्ट विधि से काटा जाए कि उनमें सैकड़ों अंकुर फूटने के अवसर हों, जिससे वायु-प्रदूषण के समापन हेतु उनका हजारों गुना उपयोग हो सके। इस वैदिक कथन से यह भी संकेतिक होता है कि हजार वृक्ष लगाने के बाद ही एक वृक्ष को काटना चाहिए। मरुत-मंत्र में अप्रशस्त को काटकर दूर फेंकने का निरूपण मिलता है-

पांति मित्रावरुणाववद्याच्चयत ईमर्यमो अप्रशस्तान्।[14]

'रिणते वनानि' कहते हुए भी ऋषि का संकेत है कि मरुत पृथ्वी के अवांछित तत्त्वों को यथा घास-फूस, अनुपयोगी तृण, वृक्ष आदि को उखाड़कर फेंक देते हैं क्योंकि ये तत्त्व पृथ्वी की ऊर्जा शक्ति को हानि पहुंचाते हैं। वृक्ष एवं वनस्पतियाँ तो प्राणीमात्र की पोषक एवं जीवनाधार होती हैं। अतः इनका संरक्षण किया जाना चाहिए तथा विनष्ट होने से हर सम्भव बचाने का प्रयत्न करना चाहिए-

मा काकं बीरमुद्गहो वनस्पतिम्।[15]

यहाँ काक शब्द 'काकेभ्यो दधिरक्ष्यताम्' की तरह प्राणिमात्र का उपलक्षण है।

सन्दर्भ संकेतः

(1) ऋग्वेद- 5.53.9; (2) वही, 1.168.1, 5.52.3, 54.2-3, 5-6, 6.48.22, 8.7.10; (3) वही, 5.53.6, 54.1-4, 9, 6.48.22, 8.7.16; (4) वही, 5.54.9, 8.7.34, 104.5; (5) अथर्ववेद, 1.81.17; (6) वही, 3.21.10; (7) वही, 4.13.3; (8) ऋग्वेद, 6.37.3; (9) वही, 10.186.3; (10) वही, 10.186; (11) वही, 10.101.11; (12) वही, 3.51.5; (13) यजुर्वेद, 5.43; (14) ऋग्वेद, 1.167.8; (15) वही, 6.48.17।

.....क्रमशः अगले अंक में

- डॉ. उमा जैन
सहारनपुर (यू.पी.)

एक देश जो अपनी मिट्टी को खत्म कर देता है, वह अपने आप को नष्ट कर देता है। जंगल हमारी जमीन के फेफड़े हैं, वे हमारी हवा को शुद्ध करते हैं और लोगों को नयी ऊर्जा देते हैं।

-फ्रैंकलिन रूजवेल्ट

--00--

अपने पैसों के लाभ के लिए वर्षा करने वाले जंगलों को काटना वैसा ही है जैसे भोजन पकाने के लिए किसी प्रभावशाली पेंटिंग को जला देना।

-ओ विल्सन

हिन्दू धर्म एवं पर्यावरण

हिन्दू धर्म में वायु, जल, पृथ्वी और आकाश की शुद्धि पर विशेष बल दिया गया है क्योंकि जल, जंगल, वायु, पृथ्वी और आकाश सभी प्राणियों के जीवन के आधार हैं। वेदों में पर्वतों को रमणीक स्थान के रूप में माना गया है।

वहाँ की वायु शुद्ध होती है। वेदों में पर्यावरण प्रदूषण को नष्ट करने के लिए सौर ऊर्जा के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है। अथर्ववेद में पर्यावरण की शुद्धि का वर्णन करते हुए बताया गया है कि जहाँ पर्यावरण शुद्ध रहता है वहाँ सभी जीवधारी सुखपूर्वक जीवित रहते हैं। हिन्दू धर्म में जल की महता पर भी प्रकाश डाला गया है व जल को जीवन का आधार बताया गया है। जल को जीवन, अमृत, भेषज, रोगनाशक व आयुवर्धक बताया गया है। जल को दूषित करना पाप माना गया है। जल स्रोत मनुष्य के जीवन को सुलभ व सरल बनाते हैं। हिन्दू धर्म में स्पष्ट कहा गया है कि जल को दूषित मत करो व वन-वनस्पतियों को नुकसान मत पहुचाँओ। अथर्ववेद में जल को मानव जीवन का आधर बताया गया है। हिन्दुओं के धार्मिक ग्रन्थ पद्मपुराण में जल के संरक्षण हेतु कहा गया है कि किसी भी जल स्रोत में थूकना, मल विसर्जित करना, कूड़ा-करकट डालना महापाप है इसीलिए हमारे ग्रामीण अंचलों में हमारे पूर्वज जोहड़ों की रखवाली करते थे और उसमें किसी को घुसने की इजाजत नहीं थी। यहाँ तक कि जोहड़ के चारों ओर जो बणियाँ होती थी उनमें भी किसी को शौच आदि जाने की अनुमति नहीं होती थी क्योंकि बरसात के दिनों में इन्हीं बणियों का पानी बहकर जोहड़ में आता था। हिन्दू धर्म में यह मान्यता है कि जो व्यक्ति जल स्रोतों को प्रदूषित करता है वह नरक में जाता है। मनुस्मृति में बड़े कारखानों को प्रदूषण का कारण मानते हुए, उन्हें लगाना महापाप माना गया है। हिन्दू धर्म में विभिन्न नदियों को पूजनीय एवं परम पुण्यमयी माना गया है तथा इनमें स्नान करने से मनुष्य को मुक्ति प्राप्त होती है इसलिए हिन्दू धर्म में विभिन्न तीज-त्यौहारों के अवसर पर स्नान का विशेष महत्त्व है। गंगा स्नान, कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर पुष्कर स्नान, लक्ष्मीतीर्थ में स्नान, ब्रह्मकुण्ड में स्नान, कुंभ स्नान, संगम स्नान आदि का विशेष महत्त्व है। हिन्दू धर्म में पर्यावरण संरक्षण की बात को मध्यनजर रखते हुए शव को जलाया जाता है जो एक अन्तिम एवं श्रेष्ठ संस्कार है। यजुर्वेद में पृथ्वी को माता व आकाश को पिता कहा गया है। यजुर्वेद में नसीहत दी गई है कि जिस प्रकार हम अपने माता-पिता को कष्टों से बचाकर उनकी दु:ख-दर्द में सेवा करते हैं, इसी प्रकार हमें अपनी प्रकृति की भी सेवा करनी चाहिए और उसे प्रदूषण से बचाना चाहिए।

हिन्दू धर्म की मान्यता है कि वृक्ष व विभिन्न वनस्पतियाँ संसार की रक्षा करते हैं व उसे प्राणवायु रूपी दूध पिलाते हैं। वे प्रदूषण को समाप्त करके वायुमण्डल के दोषों को दूर करते हैं। वृक्ष एवं वनस्पतियाँ शिव के रूप हैं जिस प्रकार शिव विष को ग्रहण करके अमृत देते हैं। उसी प्रकार सभी वनस्पतियाँ कार्बन-डाई-ऑक्साइड विष को ग्रहण करके आक्सीजन रूपी अमृत प्रदान करती हैं। वृक्ष फल, फूल, छाया देने के साथ-साथ वर्षा करने वाले मेघों को अपनी ओर आकृष्ट करके वर्षा करवाने में सहायक हैं। वर्षा से ही पृथ्वी पर जीवन चलता है। अथर्ववेद में वृक्ष और वनस्पतियों में सभी देवों का वास बताया गया है। वृक्षों से हमें विभिन्न प्रकार की जड़ी-बूटियाँ भी प्राप्त होती हैं, जिनसे विभिन्न रोगों का निदान होता है। मनुस्मृति में हरे वृक्षों को काटना या कटवाना पाप माना गया है। विष्णुस्मृति में वृक्ष की कटाई के अनुसार दण्ड का प्रावधान है। पीपल अन्य वृक्षों की बजाय अधिक कार्बन-डाई-ऑक्साइड ग्रहण करता व अधिक ऑक्सीजन छोड़ता है इसीलिए गीता में योगीराज श्री कृष्ण ने कहा है कि वृक्षों में मैं पीपल हूँ। पीपल वृक्ष के नीचे ही भगवान बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था। ध्यान के लिए इस वृक्ष की छाया श्रेष्ठ मानी जाती है। इस वृक्ष में भगवान कृष्ण का निवास माना जाता है। हिन्दू धर्म की मान्यतानुसार मृतकों के अन्तिम संस्कार के समय व बाद में सारे कर्मकाण्ड पीपल वृक्ष के नीचे सम्पादित किए जाते हैं। वेदों में अपामार्ग व गुगल भी प्रदूषण रोधक है व जहाँ तक इनकी सुगन्ध जाती है, वहाँ तक कोई बीमारी व किसी तरह का प्रदूषण नहीं रह सकता। पर्यावरण शोधक वृक्षों की महत्ता हिन्दू धर्म में सभी कालों में गाई गई है।

अशोक महान् ने अपने द्वारा स्थापित सातवें स्तम्भाभिलेख में प्रत्येक आठ कोस की दूरी पर कूप-निर्माण तथा वट वृक्ष लगाने की चर्चा की है। अशोक

महान् ने ही सड़कों के किनारे वृक्ष लगाने की परम्परा शुरू की थी ताकि राहगीर भीषण गर्मी से अपने आप को बचा सकें। महाभारत में पेड़-पौधों के जीवन की बहुत प्रशंसा की गई है। कालिदास ने मेघदूत में यक्षिणी द्वारा मन्दार वृक्ष का तथा कुमार सम्भव में पार्वती द्वारा पुत्र की तरह वृक्ष का लालन-पालन करवाया है। पद्मपुराण में कहा गया है कि पीपल वृक्ष लगाने से सम्पति की प्राप्ति होती है, अशोक वृक्ष लगाने से पाप नष्ट होते हैं, इमली का वृक्ष लगाने से लम्बी उम्र होती है। भविष्य पुराण में कहा गया है कि जो व्यक्ति एक पीपल या एक नीम या दस इमली या पाँच आम के पेड़ लगाता है वह नरक में नहीं जाता है। भविष्यपुराण में कहा गया है कि अशोक वृक्ष की पूजा करने वाले व्यक्ति को कभी भी शोक की प्राप्ति नहीं होती।

रामायण में पंचवटी का वर्णन आता है। पंचवटी पाँच वृक्षों पीपल, बेल, वट, आँवला और अशोक पाँच वृक्षों का समूह है। ऐसा माना जाता है कि इन वृक्षों के नीचे बैठकर पंच परमेश्वरों का निर्णय सदैव न्यायोचित होता है। श्रीराम ने बनवास के दौरान पंचवटी की छाया में बैठकर अनीति के वाहकों का विनाश किया था। शास्त्रों में शमी (खेजड़ी) वृक्ष को सभी पापों का नाशक माना गया है। इसमें लक्ष्मी का वास है। बिश्नोई सम्प्रदाय के लोग इस वृक्ष की पूजा करते हैं व अकाल के समय राजस्थान के लोगों का जीवन शमी वृक्ष की फलियाँ खाने से ही बचा है। शमी वृक्ष की रक्षा के लिए ही जोधपुर जिले के खेजड़ली ग्राम की अमृता देवी बिश्नोई के नेतृत्व में सन् 1730 में 363 स्त्री, पुरुष व बच्चों ने अपने प्राणों की आहुति दी जो एक स्मरणीय घटना है।

हिन्दू धर्म में पर्यावरण संरक्षण में यज्ञ का बहुत महत्त्व है। यज्ञ के द्वारा भू-प्रदूषण, जल-प्रदूषण, वायु प्रदूषण व ध्वनि प्रदूषण का निवारण किया जा सकता है। यज्ञ के द्वारा वायु में आक्सीजन व कार्बन-डाई-आक्साइड का सन्तुलन बना रहता है। यज्ञ के द्वारा द्युलोक को प्रसन्न किया जाता है और द्युलोक वर्षा के द्वारा पृथ्वी को तृप्त करता है। इस प्रकार यज्ञ से मेघों का निर्माण होता है जिनसे वर्षा होती है और वर्षा से धरती पर नए जीवन की शुरूआत होती है। पृथ्वी धन-धान्य से सम्पन्न हो जाती है। यज्ञ में किए अग्निहोत्र से अनेकों पदार्थ गैस के रूप में निकलते हैं जो वायु में व्याप्त विषाणुओं का नाश करते हैं। यज्ञ में डाला घी सूक्ष्म रूप में परिवर्तित होकर वायुमण्डल को शुद्ध करता है। छान्दोग्योपनिषद् में कहा गया है कि यज्ञ पर्यावरण में व्याप्त सब दोषों को दूर करके पर्यावरण को पवित्र बनाता है।

हिन्दू धर्म में त्याग व समर्पण की भावना व अनेक साधनाएं हमें याद दिलाती हैं कि प्रकृति हर रूप में पूजनीय है। पहाड़ों, नदियों व वृक्षों की पूजा प्रकृति के प्रति श्रद्धा पैदा करती है। हिन्दू धर्म त्याग पर आधारित है। आज के भौतिकता के युग में उपभोग को नियंत्रित व मर्यादित कर पर्यावरण का संरक्षण किया जा सकता है। हिन्दू धर्म की मान्यता है कि प्रकृति हम सबकी आवश्यकताओं को तो पूरा कर सकती है पर किसी एक व्यक्ति के भी लालच को पूरा नहीं कर सकती। हिन्दू धर्म में जीवों के संरक्षण पर बल दिया गया है। इसीलिए पशु-पक्षियों को देवताओं के वाहन के रूप में जोड़ दिया गया है ताकि जीवों का संवर्धन एवं संरक्षण हो सके। गणेश का प्रिय वाहन मूषक, दुर्गा जी का वाहन शेर, इन्द्र का वाहन गजराज, कृष्ण जी को गाय के साथ दिखाया गया है, शिव जी के साथ बैल, विष्णु जी का शेषनाग व शिव जी के गले में नाग को दिखाना आदि उन्हें देवी देवताओं से जोड़कर मान्यता दी गई है व उनको पूजनीय माना गया है। आज भी भारतीय संस्कृति में इन सबकी पूजा होती है।

हमारे देश में सभी धर्मों व सम्प्रदाओं के मध्य समरसता व भाईचारा बनाए रखने के लिए विभिन्न त्यौहार मनाए जाते हैं। वर्तमान समय में हमारे धार्मिक त्यौहारों व पर्वों में धार्मिकता कम दिखाई दे रहीं है। बदलते परिवेश व पश्चिमी प्रभाव ने पर्वों के उद्देश्यों से हमें दूर कर दिया है। लोग तेजी से पर्यावरण व प्रकृति से दूर भाग रहे हैं व उनके मन व विचार दूषित हो रहे हैं। जल स्रोत तेजी से सूख रहे हैं, पेड़ों का नामों निशान मिटता जा रहा है, यज्ञ-हवन को महत्त्व नहीं दिया जा रहा है, हमारे किसानों ने जैविक खेती की जगह रासायनिक खेती अपना ली है। हम विकृत मानसिकता के तहत प्राकृतिक संसाधनों का दोहन कर रहे हैं। व्यक्ति में भोग व स्वार्थ ने घर कर लिया है। ऐसे में मानव को सोचना होगा कि प्रकृति से सामंजस्य करके ही सुखमय जीवन जीया जा सकता है। यही हिन्दू धर्म की सोच व संकल्पना है जो हमें अपने जीवन में धारण करनी होगी। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि हिन्दू धर्म के सभी ग्रन्थों में व धार्मिक विधि-विधानों में पर्याप्त वैज्ञानिक व्यवस्था है जिनकी अनुपालना करके हम पर्यावरण को सन्तुलित एवं संरक्षित रख सकते हैं। हिन्दू दर्शन में प्रकृति हजारों प्रकार के जीव-जन्तुओं में समाहित है। हिन्दू दर्शन

अनेकता में एकता पर विश्वास करता है। सादा-जीवन व उच्च विचार भारतीय जीवनशैली की विशेषता रही है। सरल उत्पादन व सरल खपत भारत के पारम्परिक ज्ञान का हिस्सा थी। मोटा खाना व मोटा पहनना हमारे पूर्वजों की जीवनशैली थी। जब से हमने मोटा खाना (ज्वार-बाजरा-मक्का-जौ-चना) छोड़ा है व मोटा पहनना (खद्दर के कपड़े) छोड़े हैं तभी से पर्यावरण में असन्तुलन की स्थिति उत्पन्न हुई है। मोटा खाना व मोटा पहनना हमारे परिवेश के अनुकूल थे लेकिन जबसे हमने पतला खाना (गेंहूँ, फास्ट फूड) शुरू किया तभी से हमने आधुनिक खेती के नाम पर रासायनिक खेती करनी प्रारम्भ की। हमने हरित क्रान्ति के तहत रासायनिक खादों, कीटनाशकों, अधिक पैदावार देने वाले बीजों, सिंचाई के साधनों व मशीनीकरण के द्वारा प्रकृति में असंतुलन की स्थिति उत्पन्न कर दी है।

हड़प्पा व मोहन जोदड़ो के उत्खनन में जो पुरातात्त्विक सामग्री प्राप्त हुई है। उसके विश्लेषण से पता चलता है कि उस समय लोग वृक्षों व पशुओं की पूजा करते थे व उनको पालते थे। सिन्धु घाटी सभ्यता से प्राप्त विभिन्न मुद्राओं के अध्ययन से वृक्ष-पूजा की पुष्टि होती है। सिन्धु घाटी कालीन एक मुद्रा में पीपल वृक्ष का अंकन मिलता है जिससे पता चलता है कि आज से हजारों साल पहले भी पीपल वृक्ष का महत्त्व था। सिन्धु घाटी की सभ्यता से सम्बन्धित एक मुद्रा पर एक व्यक्ति झुका हुआ एक पेड़ की पूजा कर रहा है। वृक्ष पूजा के साथ सिन्धु सभ्यता में पशु-पूजा की भी प्रथा थी। जिसमें बैल, बाघ, सर्प आदि मुख्य हैं। भारतीय संस्कृतियों में विद्यमान वृक्ष-पूजा वस्तुत: वैदिक ऋषियों की वन- संरक्षण नीति है। हिन्दू धर्म में देव पूजा एवं वृक्ष पूजा की तरह नदियों की पूजा भी वैदिककाल में प्रचलित थी। वैदिक मंत्रों में जल देवता का उल्लेख मिलता है। महाभारत में नदियों को विश्व की माता कहा गया है। गंगा को समस्त नदियों में सबसे पवित्र माना गया है। अत: हमारी प्राचीन संस्कृति प्रकृति में देवी स्वरूप का दर्शन पाती थी, उसकी अर्चना करती थी व प्रकृति को माता की संज्ञा दी गई है। यही अवधारणा ही पर्यावरण संरक्षण की प्रमुख देन है। इस प्रकार स्पष्ट है कि हमारे प्राचीन मनीषी पर्यावरण के प्रति अत्यन्त निष्ठावान थे। यही कारण है कि प्रकृति से जुड़ी सभी चीजों की वे पूजा करते थे। अत: कहा जा सकता है कि हिन्दू धर्म में व्याप्त परम्पराओं, धार्मिक कार्यों, रीति- रिवाजों और यहाँ तक कि त्यौहारों एवं विभिन्न उत्सवों में भी प्रकृति संरक्षण का पुट देखा जा सकता है।

हिन्दू धर्म में वन्य जीव संरक्षण की अवधारणा : वन्य जीव अदिकाल से ही हमारी संस्कृति, सभ्यता व सामाजिक जीवन के अभिन्न अंग रहे हैं। हमारे देश में विभिन्न प्रकार के जीव-जन्तु पाए जाते हैं जिससे हम जैव-विविधता के क्षेत्र में धनी हैं। हमारे देश में 81000 वन्य जीवों की प्रजातियाँ पाई जाती हैं जो दुनिया के 7 प्रतिशत वन्य जीवों का प्रतिनिधित्व करती हैं। वर्तमान में वन्य जीवों की अनेक प्रजातियाँ लुप्त हो गई हैं व अनेक लुप्त होने के कगार पर हैं। वन्य जीवों के लुप्त होने से प्रकृति में सन्तुलन बिगड़ जाता है व अनेक पर्यावरणीय समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। वन और वन्य जीवों को बचाने की जो बात आज विश्व के विभिन्न देश कर रहे हैं वह भारतीय संस्कृति के लिए कोई नई बात नहीं है।

हमारी संस्कृति शुरू से ही कुदरत प्रेमी रही है। हिन्दू धर्म में जीवों को मारना वर्जित है। 'याज्ञवल्क्य' में लिखा गया है कि यदि कोई व्यक्ति वन्य जीवों का वध करता है तो उसे उतने दिन तक यातना झेलनी पड़ती है जितने बाल उस जानवर के शरीर पर होते हैं। इसी प्रकार 'विष्णु संहिता' में लिखा गया है जो व्यक्ति अपने मनोरजंन के लिए किसी निरापद जीव का वध करता है वह एक मृत व्यक्ति के समान है और उसे किसी भी लोक में सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती। सम्राट अशोक ने अंहिसा का संदेश फैलाकर वन्य जीवों की रक्षा हेतु अभ्यारण्यों की स्थापना की थी।

कई वन्य जीव हमारे देवी-देवताओं के वाहन रहे हैं। स्वयं ब्रह्मा एक सुन्दर हिरण पर सवारी करते हुए दिखाई देते हैं। शिवजी को नंदी बैल की सवारी करते हुए दिखाया गया है, महादेव विष्णु को गले में शेषनाग को हार के रूप में दिखाया गया है। माँ दुर्गा को चीते की सवारी करते दिखाया है, ज्ञान की देवी सरस्वती को हंस पर उड़ान भरते हुए दिखाया गया है, बब्बर शेर को ब्रह्मा का अवतार माना जाता है। उपर्युक्त सभी वन्य जीवों का किसी न किसी देवी-देवता से सम्बन्ध स्थापित करने के पीछे उन जीवों के संरक्षण एवं संवर्धन की भावना रही है। अत: हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि हिन्दू धर्म में वन्य जीवों की रक्षा करना एक पुण्य का कार्य माना जाता है।

-डॉ. रामनिवास यादव
प्राचार्य, जनता कॉलेज, दादरी

गुरु जांभोजी के पर्यावरण चिंतन की प्रासंगिकता

प्रकृति वह शक्ति है जिसने धरती के समस्त प्राणियों की आवश्यकताओं का भार वहन किया हुआ है। इस पृथ्वी पर मनुष्य के जन्म से पहले ही उसके मूलभूत वस्तुओं का नियोजन प्रकृति ने किया, लेकिन जैसे-जैसे मानव विकास करता गया प्रकृति का दोहन भी बढ़ता चला गया। यद्यपि प्राचीन सभ्यताओं के उद्‌भव से ही प्रकृति के महत्व को समझ कर मनुष्य स्वयं को प्रकृति एवं वातावरण के अनुसार ढालता चला गया। किन्तु वर्तमान आधुनिक सभ्यता के युग में मनुष्य ने जहाँ बहुविध एवं चतुर्दिक वैज्ञानिक विकास किया तथा अपनी सुख-सुविधाओं के तमाम साधन एकत्रित किए, वहीं उसने प्रकृति के साथ जबरदस्त खिलवाड़ भी किया, उसने भौतिक सुख-सुविधाओं के संग्रहण में प्रकृति का सारा संतुलन बिगाड़ कर रख दिया है। इसी का परिणाम है कि मनुष्य जीवन का आधार वायु तथा जल का प्राकृतिक संतुलन आज काफी हद तक बिगड़ चुका है, आज पूरा विश्व अनेकानेक खतरे की चपेट में आ चुका है। 'ग्लोबल वार्मिंग' और लगातार बदलते मौसम की मार विश्व की चिंता का मुख्य विषय बना हुआ है। वास्तव में इसके लिए जिम्मेदार भी केवल मनुष्य ही है, जिसने धरती के हरे-भरे वृक्षों एवं जंगलों को काटकर उसके स्थान पर बड़ी-बड़ी इमारतें खड़ी कर दी हैं। उसने धरती को एक कंक्रीट के जंगल में परिवर्तित कर दिया है। चारों ओर गंदगी एवं प्रदूषण ने पर्यावरण की समस्या को और अधिक विकराल रूप प्रदान किया है।

यद्यपि वैदिक काल से ही भारत में पर्यावरण एवं प्रकृति संरक्षण को लेकर ऋषियों-मुनियों के प्रयास सराहनीय रहे हैं, जिन्होंने प्रकृति की रक्षा को धार्मिक मान्यताओं से जोड़ते हुए इसके संरक्षण का कार्य किया। पेड़ों की सुरक्षा हो इसके लिए यह जरूरी था कि उन्हें कटने से बचाया जाए। पीपल, नीम, बरगद आदि अनेक वृक्ष जो दिन-रात वायु को शुद्ध करते हैं, साँस लेने के लिए ऑक्सीजन प्रदान करते हैं, ऐसे वृक्षों को धार्मिक मान्यताओं एवं आस्थाओं से जोड़ना एक दूरदृष्टि का काम था। पर्यावरण को लेकर ऐसी ही दूरदर्शिता एवं चिंता गुरु जाम्भोजी में देखी जा सकती है।

गुरु जांभोजी के प्रकृति एवं पर्यावरण संबंधी विचार उतने ही प्रासंगिक हैं जितने तत्कालीन युग में थे। गुरु जांभोजी का उद्‌भव उस समय हुआ जब भारत में अराजकता की स्थिति थी। समाज, राजनीति और धार्मिक आदि क्षेत्रों में अत्याचार और आडंबरों से बुरा हाल था। धर्म और भक्ति को लेकर ऐसे आडंबर फैले हुए थे जिनसे मासूम जनता त्रस्त थी। राजनीति के क्षेत्र में अव्यवस्था होने के कारण उस समय के भयंकर अकाल, अतिवृष्टि, अनावृष्टि जैसी परिस्थितियों में जनता की समस्याओं को सुनने वाला कोई नहीं था। ऐसी स्थिति में गुरु जांभोजी का जन्म हुआ, उन्होंने वि.सं. 1542 में उनतीस नियमों की आचार संहिता देकर 'बिश्नोई पंथ' की स्थापना की। इन 29 नियमों ने समाज को सहज जीवन यापन करने में न केवल मदद की, अपितु मनुष्य की मुक्ति का मार्ग भी प्रशस्त किया। वास्तव में गुरु जाम्भोजी द्वारा निर्धारित ये नियम सार्वकालिक, सार्वभौमिक और शाश्वत माने जा सकते हैं। यह भटके हुए मनुष्य को राह दिखाने वाले हैं, यदि वर्तमान आधुनिक युग में मनुष्य इन नियमों का पालन करें तो निश्चय ही वह खुशहाल जीवन व्यतीत कर सकता है।

सहज जीवन प्रेमी गुरु जाम्भोजी को भौतिक सुविधाओं से विरत दूर प्रकृति की गोद में रहना प्रिय था,उन्होंने प्रकृति के साथ-साथ वन-संस्कृति को भी बचाने का कार्य किया। आज वनवासी संस्कृति तथा भोग-विलासी भौतिक या शहरी संस्कृति की टकराहट देखने को मिलती है। गुरु जाम्भोजी का जीवन वन-संस्कृति के साथ बहुत गहरे रूप से जुड़ा हुआ था। दूरदृष्टि सम्पन्न एवं दिव्य व्यक्तित्व वाले गुरु जांभोजी वस्तुतः आज के पर्यावरण संकट तथा उससे जुड़े आधुनिक युग की विकट समस्याओं को शायद अपने युग में ही महसूस कर चुके थे। यही कारण था कि वे ताउम्र तत्कालीन समाज को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करते रहे। हालांकि उनकी वाणियों में लिखित रूप में पर्यावरण संरक्षण पर बहुत अधिक नहीं मिलता, वस्तुतः उनके बनाये 29 नियमों में ही कुछ नियम ऐसे हैं जो पूर्णतः प्रकृति एवं पर्यावरण की रक्षा हेतु कहे जा सकते हैं। इन्हें समझकर हम उनके पर्यावरण संबंधी चिंतन को जान सकते हैं।

गुरु जाम्भोजी के 29 नियमों में पर्यावरण से जुड़ा एक नियम है- यज्ञ करना। उन्होंने प्रतिदिन प्रातः एवं सायंकाल को यज्ञ करना आवश्यक बताया है, उनका मानना है कि "नित्य हवन से हम पर्यावरण को शुद्ध रखकर

प्राणी मात्र का भला कर सकते हैं। होम की अग्नि से वातावरण में फैले हुए विभिन्न रोगों के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं और हमारे आसपास का सारा वातावरण सुगंधित हो जाता है। इस तरह नित्य का हवन आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक दोनों ही दृष्टियों से महत्वपूर्ण है।"[1]

पानी, वाणी, ईंधन एवं दूध को छानकर प्रयोग करना–गुरुजी के 29 नियमों में यह नियम अत्यंत महत्वपूर्ण है, जो आज भी अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है। जल और दूध को तो छानकर ही पीना चाहिए, जबकि लकड़ी, कंडे आदि को झाड़ कर प्रयोग लेना चाहिए, वे कहते हैं–

'पानी, वाणी, ईंधणी दूधज लीजे छाण' यह नियम देखने में जितना सरल है उसका महत्व उतना ही अधिक है, क्योंकि बिना छाने पानी पीने से अनेक प्रकार की बीमारियाँ हो जाती हैं। इसके पीछे एक तर्क यह भी है कि पानी को प्रदूषित होने से बचाना है, क्योंकि प्रदूषित पानी सेहत के लिए बहुत हानिकारक हो सकता है, मनुष्य को बीमार होने से बचाने तथा शुद्ध पानी के संरक्षण की बात गुरुजी के इस कथन से स्पष्ट होती है। इसी प्रकार दूध को भी छानकर ही पीना चाहिए, अंजाने में दूध में कोई ऐसा तत्व न चला गया हो जो स्वास्थ्य के लिए अहितकर हो सकता हो। जबकि जलाने से पूर्व ईंधन को अच्छी प्रकार से झाड़ने से उसमें मौजूद निर्दोष जीव के प्राणों की रक्षा होती है, साथ ही जीव के जलने से वातावरण भी प्रदूषित होता है। एक स्थान पर जाम्भाणी कवि कहते हैं–

हत्या करो परजीव की, वन में अगन लगाय।
तीन जन्म दुःख देख कै, चौथे दोजक जाय॥

यह बात तो सर्वविदित है कि जब बिना विचार किए बोला जाता है तो पछताना भी पड़ता है, ऐसे में वाणी का संयमित रूप से प्रयोग गुरुजी उचित मानते थे। गुरु जाम्भोजी ने जिस प्रकार पानी या दूध को छानकर पीने की बात कही है, उसी प्रकार वाणी पर संयम रखने की बात कही है। वे स्वयं बहुत कम बोलते थे, किन्तु जो कुछ भी कहते थे बहुत ही सटीक और सधी बात ही उनके मुख से निकलती थी, यह उनके व्यक्तित्व की एक महत्वपूर्ण विशेषता कही जा सकती है।

गुरुजी ने क्षमा को बहुत महत्व दिया है, उन्होंने कहा है 'क्षमा दया हिरदे धरो,गुरु बताओ जाण'।

क्षमा, नम्रता का ही दूसरा रूप है, दयावान व्यक्ति के हृदय में ही क्षमा का भाव होता है।[2] जिसके हृदय में क्षमा नहीं, दया नहीं वह प्रकृति की मानवीयता के मूल मंत्र को नहीं समझ सकता है, क्योंकि प्रकृति सदैव ही परोपकार करती है। फलों से लदे वृक्ष अपने फल स्वयं नहीं खाते और सरोवर अपना जल स्वयं नहीं पीता। वृक्ष का फल एवं सरोवर का जल दूसरों के लिए ही होता है। यही भावना मनुष्य के अंदर होनी चाहिए तभी वह प्रकृति की रक्षा कर सकता है। जीवों पर दया करने की बात पर गुरु जी कहते हैं– 'जीव दया पालणी, रूंख लीला नहीं घावै' जिस प्रकार मनुष्य को अपने प्राण प्रिय होते हैं, उसी प्रकार पशु–पक्षी सभी को अपने प्राण प्रिय होते हैं। गुरु जाम्भो जी ने कहा है कि 'अपने से कमजोर प्राणियों की रक्षा करनी चाहिए। इस भाव से मनुष्य अनोखे सुख का अनुभव करता है, दया की भावना के बिना मनुष्य निष्ठुर और कठोर बन जाता है। इस नियम की सार्थकता आज भी उतनी ही है जितनी उस युग में थी।'[3] भौतिक सुखों का आकांक्षी तथा स्वार्थ से परिपूर्ण आधुनिक युग में मनुष्य क्षमा, दया और नम्रता जैसे गुणों को भूल चुका है। मनुष्य अपने क्षूद्र लाभ के लिए ही वन तथा वन्य प्राणियों को नुकसान पहुंचाता है, उसके भीतर जब राक्षसी एवं तामसिक वृत्ति जागृत हो जाती है तब वह हिंसक पशु समान हो जाता है। गुरुजी का मानना था कि अन्य प्राणियों को मारकर उनका भक्षण करना मनुष्यता का परिचायक नहीं।

आज मनुष्य अपने भौतिक एवं आर्थिक लाभ हेतु लगातार प्राकृतिक संतुलन को बिगाड़ने का कार्य कर रहा है। वह जिस प्रकार से वन्य प्राणियों का शिकार और जंगलों को निरंतर काटता जा रहा है, उससे धरती का प्राकृतिक संतुलन बिगड़ता जा रहा है। आज जब सरकारें और पर्यावरणविद् कभी हिरणों को बचाने की बात करते हैं तो कभी टाइगर बचाने के लिए 'Save Tiger' का नारा लगाते हैं। अनेक ऐसे पशु–पक्षी हैं जो विलुप्ति की ओर हैं, इसी कारण सरकारें ऐसे वन्य जीवों के शिकार पर पूर्ण पाबंदी लगा रखी है। वास्तव में इनके पीछे केवल यही तथ्य है कि इन वन्य प्राणियों की संख्या लगातार कम होती जा रही है। यदि ऐसा ही चलता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब ये वन्य प्राणी केवल तस्वीरों तक ही सीमित रह जाएंगे। यह एक तथ्य है कि धरती से अनेकानेक जीव धीरे–धीरे विलुप्त होते चले गए, जिनके केवल कल्पना–चित्र ही अब देखे जाते हैं। यही बात गुरु जाम्भोजी ने भी कही थी, वह आज भी उतनी ही सार्थक और प्रासंगिक दिखाई देती है।

गुरु जांभोजी के अनुसार एक नियम है– हरा वृक्ष ना काटें। वर्तमान संदर्भो में पर्यावरण प्रदूषण का मुख्य कारण है– वृक्षों की अंधाधुंध कटाई। वृक्षारोपण के अभाव तथा

पेड़ों की अंधाधुंध कटाई से मानव जाति पर अस्तित्व का संकट मँडराने लगा है। जंगलों में आग लगने से न केवल पेड़ खत्म होते हैं बल्कि वायु प्रदूषण भी होता है। धरती का जल स्तर भी तेजी से घट रहा है। ग्लेशियर भी तेजी से पिघल रहे हैं, जिससे विश्व की कई नदियों में बार-बार बाढ़ आने से मानव-जीवन खतरे में आ गया है। यह सब आखिर क्यों ? आखिर इन सबका जिम्मेदार कौन ? इसका सीधा सा उत्तर है- आज के मनुष्य की महत्वाकांक्षा। मनुष्य ने अपनी अंध-आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हरे-भरे पेड़ों का अंधाधुंध नाश किया है। हम यह भूल गए कि जीवन जीने के लिए शुद्ध हवा और पानी की भी जरूरत है। शायद मनुष्य ने केवल यह सोचा कि वन या जंगल पशु-पक्षियों का बसेरा मात्र है। हमने उन हरे-भरे जंगलों की जगह कंक्रीट के जंगल उगा दिये। अब यहाँ पक्षियों का कलरव नहीं, वाहनों का शोर है। पेड़ों की शीतल छाया नहीं, भवनों में लगे बड़े-बड़े एयर-कंडीशनर से बाहर की ओर निकलने वाली झुलसाती हवा और आसमान से आग उगलता सूरज दिखाई देता है। ऐसे में न ही मानसून में बादल बरसते हैं और न ही शुद्ध एवं ताजी हवा कि बयार चलती है। निरंतर पेड़ों की कटाई का नतीजा है- ग्लोबल वार्मिंग। जिसके कारण ओजोन परत में छिद्र होने से सूर्य से निकलने वाली हानिकारक पराबैंगनी किरणें सीधे धरती पर आने से आज कैंसर जैसी तमाम बीमारियों का संकट उत्पन्न हो रहा है। मनुष्य-जाति के अस्तित्व पर मँडराते इस संकट का केवल एक ही उपाय है- वनों एवं वृक्षों की रक्षा तथा वृक्षारोपण।

गुरु जांभोजी ने मनुष्य को यह तथ्य समझाने का प्रयास किया कि मानव और वृक्ष का आपस में अभिन्न रिश्ता है। मानव जन्म से लेकर मृत्यु तक वृक्षों पर ही आश्रित है, इसलिए उन्होंने मनुष्य को वृक्ष से प्रेम करने की शिक्षा दी और स्थान-स्थान पर भ्रमण करते हुए इसी भावना का प्रचार-प्रसार किया। गुरु जांभोजी के वृक्ष-प्रेम की भावना का उनके मतावलंबियों पर गहरा प्रभाव पड़ा, वे न तो हरा वृक्ष काटते थे और न ही किसी को काटने देते थे। संवत् 1787 में हुए खेजड़ली बलिदान अविस्मरणीय घटना है। जोधपुर से लगभग 25 किलोमीटर दूर खेजड़ली गांव में वृक्षों की रक्षा करते हुए 363 स्त्री-पुरुषों ने अपने प्राणों का बलिदान दे दिया। संभवत: इसी की प्रेरणा स्वरूप आधुनिक युग में पेड़ों की रक्षा के लिए 'चिपको आंदोलन' भी हुआ। वस्तुत: आज पर्यावरण की रक्षा करने के लिए इसी संवेदना की आवश्यकता है। पर्यावरण संरक्षक गुरु जांभोजी ने पर्यावरण संरक्षण के लिए जो उपाय बताए हैं, उन सभी का पालन करें तो वर्तमान में पर्यावरण संबंधी सभी समस्याओं से बचा जा सकता है।

गुरु जांभोजी ने हरे वृक्ष को काटना जीव हत्या के समान बताया है, पर्यावरण की रक्षा के लिए मनुष्य और अन्य प्राणियों के संतुलन बनाए रखने के लिए गुरु जी ने वृक्ष ना काटने का नियम बनाया था, उनका मानना था कि 'वृक्ष प्राणवान हैं, इसलिए जीव दया की भावना के कारण अन्य प्राणियों की रक्षा की तरह वृक्षों की भी रक्षा करना आवश्यक है। इन्हीं सब कारणों के आधार पर गुरु जांभोजी ने हरे वृक्ष न काटने की आज्ञा दी।'[4] धरती को जल से सराबोर करने वाली वर्षा का आधार वृक्ष ही होते हैं, मरु-भूमि में वर्षा इसीलिए नहीं होती क्योंकि वहाँ वृक्ष नहीं होते। वहीं मृदा संरक्षण के लिए भी पेड़ जरूरी हैं, उपजाऊ भूमि के कटाव को रोकने के लिए पेड़ ही सहायक होते हैं। गुरु जांभोजी ने पर्यावरण की रक्षा हेतु लोगों को वृक्ष लगाने के लिए और वृक्षों से प्रेम करने की भावना को प्रेरित किया। गुरु जी का यह नियम आज की पर्यावरणीय दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। आज लोगों को अधिक से अधिक वृक्ष लगाने और उनसे प्रेम करने की आवश्यकता है। अत: हमें आज मनुष्य के अस्तित्व पर आए संकट को दूर करने के लिए वनों की रक्षा तथा वन्य प्राणियों की सुरक्षा करने का दृढ़-संकल्प लेना होगा।

संदर्भ ग्रंथ-

1. बिश्नोई पंथ और साहित्य-पृष्ठ- 21
2. गुरु जांभोजी का जीवन दर्शन, पृष्ठ-56
3. वही, पृष्ठ 257
4. बिश्नोई पंथ और साहित्य, पृष्ठ-24

सहायक ग्रंथ-

1. जम्भसागर, टीकाकार- कृष्णानंद आचार्य, जांभाणी साहित्य अकादमी

-डॉ. दर्शन पाण्डेय

सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

शिवाजी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

पर्यावरण में उन तत्वों को या ऊर्जा की उपस्थिति को प्रदूषण कहते हैं जो मनुष्य द्वारा अनचाहे उत्पादित किए गए हों।

-लॉर्ड केनेट

वनस्पति वासो

इस अति प्रगतिशील युग में सम्पूर्ण विश्व को चिन्तित कर रहा है- यह दूषित वातावरण। अति सर्वत्र वर्जयेत' होती है। अब बहुत आगे बढ़ चुके हैं वापिस लौटने की तो कल्पना ही नहीं कर सकते। रावण अति बुधन्तो था जिससे स्वयं को विनाश की ओर ले गया। प्रकृति का ऐसा ही नियम है उत्थान के बाद पतन आता है। प्रकृति में छुपी हुई रहस्यमय वस्तुएं खोज ली हैं जिससे अब तक इस नादान बालक मानव से छुपाकर रखी थी। इस समय हजारों फुट नीचे गहराई में छिपी हुई जहरीली वस्तुएं मानव ने खोज कर निकाल ली हैं और उसका उपयोग कर रही है जिससे प्रकृति के साथ खिलवाड़ हुआ है और विकृति आ रही है। इससे कुछ भी नहीं बच पाएगा। सभी कुछ ध्वंस हो जायेगा, किन्तु यह बेचारा मानव अब कर भी कुछ नहीं सकता, लाचारी है। जीव-जन्तु, पेड़-पौधो, मानव, पशु, पक्षी आदि का संतुलन बिगड़ गया है। ये एक दूसरे के पूरक थे किन्तु अब मानव का पलड़ा भारी हो गया है। संतुलन पूरी तरह से बिगड़ चुका है। यह धरती मनुष्य के बोझ से बोझिल है। धरती को खोदकर उसमें छुपी हुई आवश्यक व अनावश्यक वस्तुओं का दोहन हो चुका है। तेल, गैस, कोयला, जल, अन्न, पेड़, पौधे, सभी जीव-जन्तु धरती पर या अन्दर सूक्ष्म, स्थूल रूप से प्राप्त है।

ओजूं मंडल छायो ॥29॥

गदिं मेर पगांठो परबत, मनसा सोड़ तुलायो'

ऐ जुग चार छतीसां और छतीसां, आश्रा बहै अंधारी ॥29॥

धैर्य धारण, ध्यान रूपी धरती ही माता है। जिसकी कोख से सभी जन्म लेते हैं और माता का दुग्ध पान, अन्न खा करके अभिवृद्धि को प्राप्त होते हैं। गुरुदेव कहते हैं यह धरती है, मेरा ध्यान है, इस वनस्पति के रूप में अवस्थित होता हूं क्योंकि यह वनस्पति हरी-भरी है। इसलिए हरियाली में निवास करने वाले विष्णु को भी हरि ही कहते हैं- **हिन्दू होयकर हरि क्यों न जप्यो। कांय दहदिस दिल पसरायो ॥67॥**

हरियालो हरि आण हरू, हरि नारायण देव नरू ॥102॥

हृदय हरि सिंवरीलो, कृष्णी माया चौखण्ड किरसाणी, जंबूदीप चरीलो ॥

यदि हरि से संपर्क करना है तो वनस्पति निवासी हरि का हरियाली में ही दर्शन सुलभ है, हरि ही नारायण विष्णु जल रूप से क्षीर सागर में शयन करते हैं। यही वनस्पति ही क्षीर सागर है जो हराभरा धरती को करता है। इस हरियाली को काटना नहीं चाहिए। '**कांय काटयो वनरायो**'- 71

वनस्पति में हरि का वास है इसलिए इसी वनस्पति से हमें जीवनी ऊर्जा शक्ति मिलती है जितने हम इस वन के नजदीक रहेंगे उतने ही हमें जीवनी शक्ति ऊर्जा प्राप्त होगी। जिससे हमारा शरीर, मन, बुद्धि स्वस्थ रहेगी तो हम जीवन यापन आनन्दपूर्वक करते रहेंगे। इसके विपरीत हम वन से शून्य ऊसर भूमि में जाएंगे तो हमें ऊर्जा शक्ति से वंचित रहना पड़ेगा। स्वस्थ जीवन जीने में कठिनाई होगी। इन पेड़-पौधों से हमारा निकट सम्बन्ध है। एक दूसरे पर आश्रित है और पेड़ जो आक्सीजन छोड़ते हैं वह हमारे लिए जीने का मूल आधार हैं।

एक पलक में सर्व संतोषा, जीया जूण समाई ॥84॥

गुरुदेव कहते हैं कि सभी जीवों योनी को एक पलक में ही संतुष्ट कर देता हूं क्योंकि मैं किसी स्थान विशेष में नहीं हूं। सर्वत्र जीव योनियों में समाहित हूं। सभी को अन्न, जल से संतुष्ट करता हूं क्योंकि

रूप अरूप रमूं पिण्डे ब्रह्मण्डे, घट घट अघट रहायो।
अनन्त जुगा में अमर भणीजूं ना मेरे पिता न मायो ॥

रूपवान अरूपवान घट-घट अघट में सर्वत्र समाया हुआ हूँ। मैं अमर हूँ। जन्म-मरण से रहित हूं, मेरे माता- पिता कोई नहीं है। मुझे सांस्कृतिक वस्तुओं की आवश्यकता नहीं है क्योंकि मैं तो सभी में ज्योति जीव रूप में विद्यमान होकर सर्वत्र रमण करता हूं। उस वनस्पति वन, वन्य जीवों को काट करके कैसे सुखी हो सकते हो। मैं तुम्हारी आत्मा हूं, कुकर्म करने पर मैं

तुम्हें अन्तर की आवाज देता हूं किन्तु तुम उस आत्मा की आवाज को सुनते ही कहां हो ?

इस समय की भयावहता को देखते हुए गुरु जम्भेश्वर जी ने मानव मात्र को 550 वर्ष पूर्व ही सचेत कर दिया था। 'लीलो रूंख नहीं घावै' तथा उनतीस नियम बतलाते हुए सर्वप्रथम प्रातः उठने से लेकर शाम को सोते समय तक नियमों से मानव को जोड़ा था।

प्रातःकाल स्नान करना, शील संतोष शुचि प्यारो सांझ आरती गुण गायो। हवन करो हितचित तथा प्रेम से। जल वाणी इंधणी छांण कर लेना।

क्षमा करो, दया रखो, चोरी, निंदा, झूठ तथा व्यर्थ का वाद-विवाद ना करो, अमावस्या का व्रत रखना चाहिए तथा भजन भगवान विष्णु हरि का करो। नशीली वस्तुओं से दूर रहो तथा नीला वस्त्र न पहनें, सूतक तीस दिन का तथा ऋतु धर्म में पांच दिन स्त्रियां घर के कार्य से पृथक् रहे इत्यादि नियम ही पर्यावरण रक्षा हेतु हैं। हमारा शरीर, मन, इन्द्रियां आदि स्वस्थ रहेंगे तभी सुखी जीवन यापन कर सकेंगे। इसलिए कहा जा सकता है कि ये नियम पर्यावरण की रक्षा के सच्चे प्रहरी हैं।

गुरु जाम्भोजी के शिष्य बिश्नोइयों ने हरे वृक्ष नहीं काटने दिये; स्वयं कट गये। बहुत से उद्धरण जाम्भाणी साहित्य में उपलब्ध है। इस समय भी बिश्नोई अपने खेतों में, घरों में, किसी स्मृति में वृक्ष लगाना अपना धर्म समझते हैं। इसलिए बिश्नोई के घर, ढाणी में, मार्ग में, वृक्षों की घनी छाया में उनके पशु पक्षी मानव आदि विश्राम करते हैं और विशेष रूप से खेजड़ी मिलेगी, जो पुष्टिकर एवं निरोग होती है तथा 'सर्वरोग हरो निम्ब' भी स्वास्थ्यवर्धक है। ये वृक्ष ही समय पर वर्षा करवाते हैं जिससे सम्पूर्ण वनस्पति फूलती-फलती है तथा छाया देते हैं। आने वाली सर्द-गर्म हवाओं को भी यही वृक्ष रोकते हैं और माता की तरह अपने पालकों को सुरक्षित करती है। यदि हम कहें कि-

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्व मम देव देव॥

तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। वन्य जीवों की रक्षा हेतु सदा तत्पर रहने वाला यह पंथ अपने प्राणों का बलिदान देकर भी जीवों की रक्षा कर रहे हैं। यह प्रत्यक्ष देखा जा सकता है।

सम्पूर्ण संसार श्वांस गति में विघ्न होने से चिंतित है। इस सुन्दर सृष्टि को कैसे बचाया जा सकता है। इसके लिए दिव्य देव जम्भेश्वर जी के बताये हुए नियमों का अनुसरण सम्पूर्ण संसार को करना होगा क्योंकि यह कार्य किसान ही अच्छी प्रकार से कर सकता है। उनके ही पास जमीन है वे ही भूस्वामी हैं। भारतीय सरकार को भी चाहिए कि इस ज्वलंत समस्या के समाधान हेतु किसान के दरवाजे पर जाना होगा और उन्हें अपनी-अपनी भूमि में पेड़ लगाने की प्रेरणा देनी होगी।

केवल मौखिक आश्वासन या ज्ञान देने से कुछ नहीं होगा। उन्हें आर्थिक सहायता देनी होगी। पेड़ों को पनपाने के लिए समय देना होगा। हरा वृक्ष न काटा जाये। अपने आप सूखने पर उस पेड़ का स्वामी वह किसान ही होना चाहिए जिसे वह अपने कार्य में ले सके। उससे आर्थिक लाभ ले सके। इस प्रकार की योजना बनानी होगी यदि इस धरती पर इस खूबसूरत मानव को जिंदा रहना है तो अन्यथा यह पर्यावरण दूषित महाकाल सभी को निगल जाएगा। '**कालोस्मि लोकं क्षयकृत प्रवृद्धो।** -गीता

इस पर्यावरण दिवस पर बैठकर सभी बुद्धिजीवियों को इस पर विचार अवश्य ही करना चाहिए।

-आचार्य कृष्णानन्द
अध्यक्ष, जाम्भाणी साहित्य अकादमी,
बीकानेर मो. : 9897390866

चिड़िया पर्यावरण का एक संकेतक है। अगर वे मुसीबत में हैं तो इसका मतलब हम भी बहुत जल्दी मुसीबत में आने वाले हैं।

-रोजर टोरी पीटरसन

प्रकृति के साथ एकात्म भाव

बिश्नोई समाज में वृक्ष और वन्य जीवों पर आघात सहन नहीं किया जाता है। जब कोई दूसरा ऐसा करने का प्रयत्न करता है, जिससे ये जीव भयभीत होते हैं तो इनका भयहरण करने के लिए बिश्नोई अपने प्राणों का भय त्यागकर इनके प्राणों की रक्षा करता है। ऐसी परिस्थिति में कोई मूर्ख किसी बिश्नोई से प्रश्न करता है कि वृक्ष और वन्य प्राणी तुम्हारे क्या लगते हैं? तो बिश्नोई का एक शब्द का उत्तर होता है- भाई। आज के घोर भौतिकवाद के युग में बिश्नोई का उत्तर हास्यास्पद प्रतीत होता है। वृक्ष जो निर्जीव से लगते हैं, काटे और जला लिये, यही तो इनकी नियति है, इनमें भला कोई प्राण हो सकते हैं तथा वन्य जीव तो शक्तिशाली का आहार है। वृक्ष और वन्य जीवों को 'भाई' कहना बड़े साहस की बात है, यह विज्ञान सम्मत चाहे ना हो पर शास्त्र सम्मत अवश्य है। हमारे प्राचीन धर्मग्रन्थ इन्हें मनुष्य का भाई ही मानते हैं। आदिकवि महर्षि वाल्मीकि ने इसका उल्लेख किया है। महर्षि वाल्मीकि प्रणीत श्रीमद्वाल्मीकिय रामायण के अरण्यकाण्ड के चौदहवें सर्ग में वर्णन आता है- प्रजापति दक्ष के साठ यशस्विनी कन्याएं हुई, जो बहुत ही विख्यात थी। उनमें से आठ सुन्दरी कन्याओं को प्रजापति कश्यप ने पत्नी रूप में ग्रहण किया। जिनके नाम इस प्रकार हैं- अदिति, दिति, दनु, कालका, ताम्रा, क्रोधवशा, मनु और अनला। अदिति के गर्भ से देवता उत्पन्न हुए, दिति के गर्भ से दैत्यों का जन्म हुआ, मनु ने मनुष्यों को जन्म दिया। दनु ने अश्वग्रीव नामक पुत्र को जन्म दिया और कालका ने नरक और कालक नामक दो पुत्रों को जन्म दिया। ताम्रा ने क्रौंची, भासी, शयेनी, धृतराष्ट्री तथा शुकी इन पांच विश्वविख्यात कन्याओं को उत्पन्न किया। इनमें से क्रौंची ने उल्लुओं को, भासी ने भास नामक पक्षियों को, शयेनी ने परम तेजस्वी बाजों और गिद्धों को, धृतराष्ट्री ने सब प्रकार के हंसों और कलहंसों को जन्म दिया। क्रोधवशा ने दस कन्याओं को जन्म दिया, जिनके नाम हैं- मृगी, मृगमन्दा, हरी, भद्रमदा, मातंगी, शार्दूली, श्वेता, सुरभी, सुरसा और कद्रूका। इनमें मृगी की संतान सारे मृग हैं और मृगमन्दा के ऋक्ष, सृमर और चमर हैं। हरी के संतानें सिंह, वानर, लंगूर हैं। भद्रमदा के एरावती नामक पुत्री हुई जिससे गजराज ऐरावत का जन्म हुआ। मातंगी की संतानें हाथी हैं। शार्दूली से व्याघ्र उत्पन्न हुए तथा श्वेता से दिग्गज नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। क्रोधवशा की पुत्री सुरभी ने रोहिणी और गन्धर्वी नामक दो पुत्रियों को जन्म दिया। रोहिणी ने गौओं को जन्म दिया और गन्धर्वी ने घोड़ों को पुत्र रूप में प्रकट किया। सुरसा ने नागों और कद्रू ने पन्नणों को उत्पन्न किया। कश्यप पत्नी अनला ने समस्त वृक्षों को जन्म दिया। महर्षि वाल्मीकि कहते हैं कि यह इतिहास गिद्धराज जटायु ने भगवान श्रीराम को सुनाया था और जटायु ने स्वयं को महाराज दशरथ का मित्र बताया था।

आज के जमाने में ये बातें हंसाने की सामग्री मात्र प्रतीत हो सकती है। कोई भी यह मानने से इंकार कर सकता है कि एक स्त्री के गर्भ से वृक्षों और पशुओं का जन्म कैसे हो सकता है? यह बिल्कुल असंभव बात है। पर ये सृष्टि के आदिकाल की बातें हैं। जब महान् शक्तिसम्पन्न ऋषियों ने अपने संकल्प से सृष्टि की रचना की थी, संकल्प से तो कहीं भी, कुछ भी उत्पन्न किया जा सकता है, संभव है उस समय प्रजापति कश्यप की पत्नियों ने इन वृक्ष एवं जीव प्रजातियों की माता बनना स्वीकार किया हो और कश्यप ने संकल्प से सृष्टि का निर्माण किया हो। आज के अति आधुनिक विज्ञान के युग में कुछ भी संभव है, आविष्कारकर्ता किसी भी ऐसे यन्त्र का निर्माण करने में सक्षम है जिस पर सहसा विश्वास करना संभव नहीं है पर नित नये हो रहे विज्ञान के चमत्कार हमारे सामने हैं। फिर उन प्राचीन दिव्य ऋषियों की शक्ति पर हम अविश्वास कैसे कर सकते हैं जिन्होंने तपोबल से प्राप्त सिद्धि से इन जीव प्रजातियों को उत्पन्न किया हो।

बात चाहे जो भी हो, हमारे विचार- विमर्श का केन्द्र बिन्दु यह है कि बिश्नोई वन्य जीवों और वृक्षों को भाई मानता है। इस भ्राताभाव की पुष्टि विश्व का प्राचीनतम ग्रन्थ वाल्मीकि रामायण करता है। त्रेतायुग में भगवान के अवतार के रूप में श्रीराम के श्रीमुख से उद्धृत वाल्मीकि रामायण और गोस्वामी तुलसीदास कृत श्रीरामचरितमानस में अनेक जगह प्रसंग आता है जब वे कहते हैं कि- 'तुम मुझे भाई भरत के समान प्रिय हो या भाई लक्ष्मण से अधिक प्यारे हो।' यह वह युग था जब भाई-भाई के बीच में परस्पर विश्वास का

सागर प्रबल हिलोरे लेता था, किसी भी प्रकार की विषम परिस्थितियां भी उनके सम्बन्धों में खटास उत्पन्न करने का कारण नहीं बन सकती थी। श्रीराम और भरत का उदाहरण हमारे सामने है जब वे राज्य को गेंद बनाकर ठोकर मार रहे हैं, भाई-भाई के प्रेम को बिगाड़ने में राज्य का प्रलोभन भी कारण नहीं बन सका था। परन्तु कलियुग में परिस्थितियां बदलती हैं। मध्यकाल में जब श्री जाम्भोजी का अवतार होता है तब तुच्छ स्वार्थ के लिए ही भाई को भाई का दुश्मन बनता देखा गया। धन सम्पत्ति और राज्य प्राप्ति के लिए भाई को भाई मारने भी लगा था। तब इस प्रबल विश्वास के रिश्ते की भी नींव हिल चुकी थी। उस समय कलिपावनावतार श्री जाम्भोजी ने मनुष्य को उस जूने रिश्ते की याद दिलवाई थी कि केवल एक गर्भ से जन्म लेने वाला सहोदर ही तुम्हारा भाई नहीं है जो स्वार्थवश तुम्हें कभी धोखा नहीं दे सकता।

श्री जाम्भोजी कलियुग में एक विचित्र उद्घोषणा करते हैं- 'भाई नाऊं बलद पियारो' (सबद 9)। यहां बलद चराचर प्रकृति के प्रतिनिधि के रूप में है, यह मनुष्य के साथ अंग-संग रहने वाला जीव है। श्री जाम्भोजी इसका नाम लेकर सभी जीवों की ओर संकेत कर रहे हैं। वास्तविक बात तो यही है कि मनुष्य स्वार्थवश धोखा कर सकता है पर प्रकृति स्वार्थवश कभी किसी से धोखा नहीं कर सकती, क्योंकि प्रकृति में कभी स्वार्थ होता ही नहीं। वह तो केवल परमार्थ ही करती है। इसलिए निश्चिन्त होकर इस पर विश्वास किया जा सकता है। मनुष्य जब प्रकृति के समीप जाता है तो वह फूलों के रूप में हंसकर उसका स्वागत करती है। फलों और स्वच्छ, मीठे जल के रूप में उसका आतिथ्य करती है। मनुष्य उसका आतिथ्य स्वीकार करके फल, फूल और छाया देने वाले वृक्ष को काट देता है। निर्मल जल को प्रदूषित करके विश्वासघात करता है। आज के मनुष्य पर सूरदास के एक भजन की दो पंक्तियां बहुत सटीक बैठती हैं-

मो सम कौन कुटिल खल कामी।
जिन तनु दियो ताहि बिसरायो, ऐसो नमक हरामी॥

मनुष्य का यह शरीर प्रकृति के पांच तत्वों से बना है। प्रकृति के पांच तत्वों को जब मनुष्य प्रदूषित करता है तो इसका सीधा असर मनुष्य के शरीर पर पड़ता है और उसे इसके भयंकर दुष्परिणाम भोगने पड़ते हैं। यह है अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारना। असीम कृतघ्नता और विश्वासघात है, यह उदाहरण हमें वाल्मीकि रामायण के प्रसंग में मिलता है जब रावण सीता का अपरहण करता है तो सीता उस समय वहां पर पशु-पक्षियों, वृक्षों, नदी को सम्बोधित स्नेहिल प्रकृति को पुकारा जो उस समय परिवार के समान प्रतीत हो रही थी। उस समय सीता अपहरण रूपी भयंकर दुष्कृत्य को देखकर देवता और तपस्वी प्रसन्न हो रहे थे कि अब रावण का विनाश संभव है। प्रकृति के लिए वह दृश्य असहनीय था। प्रकृति का प्रत्येक अंग उस समय सीता के समवेत स्वरों में विलाप कर रहा था। वाल्मीकि रामायण के अरण्यकाण्ड के बयानवे सर्ग में 34 से 41वें श्लोकों तक इसका बड़ा कारुणिक वर्णन मिलता है-

"रावण के वेग से उत्पन्न हुई उत्पातसूचक वायु के झरोखों से हिलते हुए वृक्षों पर नाना प्रकार के पक्षी कोलाहल कर रहे थे। उन्हें देखकर ऐसा जान पड़ता था मानो वे वृक्ष अपने सिरों को हिला-हिलाकर संकेत करते हुए सीता से कह रहे थे कि- तुम डरो मत।' जिनके कमल सूख गए थे और मत्स्य आदि जलचर जीव डर गये थे, वे पुष्करिणियां उत्साहहीन हुई मिथिलेश कुमारी सीता को मानो अपनी सखी मानकर उनके लिए शोक कर रही थी। उस सीताहरण के समय रावण पर रोष-सा करके सिंह, व्याघ्र, मृग और पक्षी सब ओर से सीता की परछाई का अनुसरण करते हुए दौड़ रहे थे। जब सीता हरी जाने लगी, उस समय वहां के पर्वत झरनों के रूप में आँसू बहाते हुए, ऊँचे शिखरों में अपनी भुजाएं उठाकर मानो जोर-जोर से चीत्कार कर रहे थे। सीता का हरण होता देख श्रीमान् सूर्यदेव दु:खी हो गये। उनकी प्रभा नष्ट हो गई तथा उनका मुखमंडल पीला पड़ा गया। वहां झुण्ड के झुण्ड एकत्र हो सब प्राणी विलाप कर रहे थे। मृगों के बच्चे भयभीत हो दीन मुख से रो रहे थे। सीता को इस हालात में देखकर वन का प्रत्येक अंग भय के मारे थर-थर कांपने लगा।"

यह है प्रकृति के साथ एकात्म भाव, सीता ने वन में निवास करने वाले पशु-पक्षियों, वृक्षों, नदियों, जलाशयों, पर्वतों को कितना स्नेह दिया होगा, जो उस समय चराचर जगत सीता की विपत्ति में पिघल पड़ा था।

आज का समय ठीक इसके विपरीत है, प्रकृति के साथ स्नेहभाव रखना तो दूर की बात है, प्रकृति को केवल भोग्या समझा जाता है। पश्चिम जगत की तीव्र भोगवादी विचारधारा, जिसने सम्पूर्ण विश्व को आप्लावित कर लिया। प्रकृति का काल साबित हुई। उस विचारधारा का

प्रकृतिवादी, आध्यात्मिक भारत भूमि पर रहे दो सौ वर्ष के शासन ने यहां की मूल संस्कृति पर जबरदस्त आघात किया। पशु-पक्षियों, वृक्षों, नदियों, पर्वतों की पूजा करने वाले इस समाज को गंवार समझा गया और सम्पूर्ण विश्व में इसका उपहास उड़ाया गया। अंग्रेजों के यहां से जाने के बाद भी वह विचारधारा कर्णधारों के मन, मस्तिष्क में कायम रही तथा पर्यावरण संरक्षण को कभी प्राथमिकता में नहीं रखा गया। यहां तक कि इस विषय को विकास में बाधक तत्व माना गया। पर्यावरण संरक्षण के लिए जो थोड़ी बहुत सक्रियता दिखाई देती है उसकी वजह है अन्तरराष्ट्रीय सेमिनारों में पर्यावरण को बचाने के लिए बढ़ता दबाव। वास्तव में तो विश्व बिरादरी, अन्तरराष्ट्रीय पर्यावरण सम्मेलन करने वाले तथा दुनिया के देशों को पर्यावरण सुधार की सलाह देने वाले और दुनिया के सारे देश, कोई भी पर्यावरण संरक्षण के लिए गम्भीर नहीं है। इसमें केवल एक भारत का ही दोष नहीं है। भारत का केवल इतना ही दोष है कि हम विश्व के अन्य देशों से यह आशा नहीं कर सकते कि वे पर्यावरण को बचाने के लिए आगे आएंगे क्योंकि उन लोगों के सांस्कृतिक संस्कारों में यह बात नहीं सिखाई जाती, जबकि युगों से ही भारत की संस्कृति पर्यावरण संरक्षक रही है। पर अंग्रेजों के दीर्घ शासन और उनके बाद के शासन ने राजधर्म में भारतीय संस्कृति का अनुशीलन नहीं किया। अंग्रेजी शासन ने जो व्यवस्थाएं यहां स्थापित की, वे भारतीय संस्कारों के बिल्कुल विपरीत थीं। भारत का स्वभाव कभी भौतिकवादी रहा नहीं था। यह इस पर बलात थोपी गई व्यवस्था थी, पर राजसत्ता ने इस व्यवस्था को अंगीकार कर लिया तो जनता-जनार्दन भी इस व्यवस्था में ढ़लने के लिए विवश हो गई, जिसका परिणाम आज सबके सामने है- पर्यावरण की अपूरणीय क्षति।

इस सबके बावजूद भी बिश्नोई समाज के लिए गौरव करने की बात है कि इस समाज ने इस पर्यावरणघाती व्यवस्था को कभी स्वीकार नहीं किया तथा चुपचाप अपने तरीके से इस व्यवस्था से लड़ता रहा। पर्यावरण संरक्षण की जो बात भारतीय धर्मशास्त्रों में प्रचूर मात्रा में लिखी गई थी। भारतीय जनमानस में इस बात की चेतना सदैव रही है पर भौतिक व्यवस्था ने इस चेतना को कुन्द कर दिया और पर्यावरण संरक्षण के निमित्त यह चेतना सम्पूर्ण जगह निष्प्राण सी हो गई। भारतीय संस्कृति के रग-रग में समाई इस चेतना को बलात रोका गया तो, जिस प्रकार एक जगह बांध बनाकर पानी को रोक दिया जाए, उस बांध में पानी का आगम तो निरन्तर होता रहे पर निकासी की व्यवस्था न होने पर बांध को कितना ही मजबूत कर लो, किसी एक जगह से पानी का वेग फूट पड़ेगा, कुछ ऐसा ही इस जगत के साथ हुआ जब सब जगह यह पर्यावरणीय चेतना रूक गई तो आखिर में यह चेतना सम्भराथल के ऊँचे धोरे पर फूट पड़ी, जैसे किसी शिखर पर ज्वालामुखी फटा हो, यह उस ज्वालामुखी की तरह नहीं था जिसका धुआं और गर्द सम्पूर्ण वातावरण को विषाक्त कर देता है। यहां की ज्वालामुखी रूपी यज्ञवेदी से निकलने वाला धुआं मानव को पर्यावरण संरक्षण का संकल्प करवा रहे थे। युगों से राजाओं, सामन्तों, अभिजात्य वर्ग द्वारा मृगया के नाम पर संहार किया गया मृग, निर्भय होकर देव के चरण चुम्बन कर रहा था। सदियों से शांत हुई यज्ञाग्नि जो एक बार पुनः सम्भराथल पर प्रज्ज्वलित हुई थी। उसे यहां आने वाला प्रत्येक जिज्ञासु अपने घर में स्थापित कर रहस्य बता रहे थे। तभी तो पांच सदियां बीत जाने के बाद भी किसी बिश्नोई से वन्य जीवों और वृक्षों के साथ उसका सम्बन्ध पूछा जाता है तो अनायास ही उसके मुख से निकलता है- 'भाई'।

सन्दर्भ ग्रन्थः

1. श्रीमद्वालक्ष्मीकीय रामायण- गीताप्रेस, गोरखपुर।
2. सबदवाणी।
3. भजन-क्षुधा, गीताप्रेस, गोरखपुर।

-विनोद जम्भदास कड़वासरा

गांव हिम्मतपुरा, त. अबोहर, जिला फाजिल्का

मो. : 9417681063

पृथ्वी हमें अपनी जरूरत पूरी करने के लिए पूरे संसाधन प्रदान करती है लेकिन लालच पूरा करने के लिए नहीं।

-महात्मा गांधी

--00--

हवा और पानी को बचाने, जंगल और जानवर को बचाने वाली योजनाएं असल में मनुष्य को बचाने की योजनाएं हैं।

-स्टीवर्ट उडैल

पर्यावरण सरंक्षण के उपाय

ईसा से 326 वर्ष पूर्व महान सिकंदर ने सिंधु नदी पार कर भारतवर्ष के प्रतापी महाराजा पौरुष को शिकस्त दी। सिकंदर पौरुष के निर्भीक व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हुआ और जीता हुआ राज्य उसको वापस लौटाया। पौरुष का एक डायलाग बड़ा कमाल का था। उसने सिकंदर से कहा- इतनी दूर तुम केवल कब्जा करने की भावना से आये? हां तब तो कोई बात थी अगर पानी के सम्बन्ध में युद्ध करते। मेरा यह तथ्य लिखने का यह भाव है कि चौबीस शताब्दी पहले भी जल हमारे लिए इतना महत्वपूर्ण था जितना आज है।

आज का मनुष्य ऐसी स्थिति में है कि वह जीवन में इतने सुख-सुविधा पाने के बाद भी रोग मुक्त नहीं है। क्यों नहीं? इसका जवाब है कि कुदरत के साथ खिलवाड़ करना है तो उसके दुष्परिणाम भी अवश्य भुगतने पड़ेंगे। प्रथम बात! वृक्ष धन की अंधाधुंध कटाई। तरक्की के नाम पर सड़कें, कारखाने, हाउसिंग कॉलोनी, फ्लाईओवर निर्माण के लिए वृक्षों की बलि चढ़ाई जा रही है। लोहा, कंक्रीट और प्लास्टिक की बनी हुई ये सब गर्मी के मौसम मे गर्मी को और बढ़ाती है और सर्दी मे सर्दी को बढ़ावा देती है। इस तरह सड़क पर यातायात के साधन बढ़ने से पैट्रोल और डीजल की खपत से पर्यावरण मे तापमान का बढ़ना मनुष्य की सेहत के लिए हानिकारक सिद्ध हो रहा है।

अगर हम वायु प्रदूषण की बात करते हैं तो स्थिति और भी संवेदनशील है। कारखाने, बड़े-बड़े थर्मल प्लांट, परमाणु प्लांट, इनकी कार्यशैली से बन रही रसायनिक गैस, हमारी संजीवनी बूटी आक्सीजन का सत्यानाश करती चली जा रही है।

इस बवाल को बढ़ाने में हमारे किसान भाई भी कम भागीदार नहीं है। पर्यावरण जागरूकता न होने की वजह से उन्होंने धान और गेहूं काटने के बाद बचे हुए भूसे का इलाज मात्र एक माचिस की तीली ही समझ रखा है। मगर उसके धुएं से बनी जहरीली गैस का उनके पास कोई जवाब नहीं।

सबसे महत्वपूर्ण मसला है जल के सम्बन्ध में। जल के बारे में उपरोक्त विचार कि जल सदियों पहले भी जीवन के लिए जरूरी था और आज भी है। पर्यावरण के संरक्षण के लिए जल का अधिकाधिक होना आवश्यक है।

जमीन सारी की सारी खेती अधीन होने के कारण वृक्षों का सफाया हो गया। पेड़ ही एक मात्र साधन है मौसम को खुशगवार बनाने का। बो बात खत्म हो गई इनके खत्म होने से। सर्द और गर्म ऋतु अपने सही समय से आगे-पीछे होने के कारण अब सावन में इंद्र देवता मेहरबान नहीं होता और आषाढ़ में लू नहीं चलती।

जमींदोज जल पहुंच से बाहर होने वाला है। मनुष्य ने अपने पांव पर कुल्हाड़ी मारने की कोई कमी नहीं छोड़ी। वायु, जल और धरती का प्रदूषण इतनी तेजी से बढ़ता जा रहा है कि अगली दहाई में पीने के लिए जल और सांस लेने के लिए शुद्ध वायु नहीं मिलेगी। धरती हमें खाद्य पदार्थ बांटती है और यह खुराक भी प्रदूषित हो रही है। इस वजह से मिट्टी, पानी और वायु में विकार से अनेक प्रकार के रोगों से लोग ग्रस्त हो गये है।

प्रदूषण की गम्भीर समस्या से निपटने के लिए इस की रोकथाम बहुत जरूरी है। रोकथाम के दो मुख्य पक्ष हैं- कानून की सख्ती से पालना और लोगों को अपनी जिम्मेदारी के प्रति जागरूक करना। रुंख मनुष्य का सबसे अच्छा मित्र है, जन्म से मौत तक। प्रदूषण को दूर भगाने में यह सबसे बड़ा सहायक है। वृक्ष लगाना मुहिम को युद्ध स्तर पर प्रचार के रूप में लिया जाये। प्रत्येक स्कूल और कॉलेज में विद्यार्थियों को एक पेड़ लगाना और उसका लालन-पालन करना अनिवार्य किया जाये। रेडियो, टीवी, पोस्टर और फिल्म के जरिए इस प्रसार-प्रचार को कौमी स्तर पर प्रोत्साहन दिया जाये।

हरी क्रांति की वजह से हमारी नदियों के होंठ खुश्क हो गये। भूमि की उपजाऊ शक्ति खत्म हो गई। श्री मान पोलानी जो बहुत प्रसिद्ध भू-विज्ञानी है, का कथन है कि सरमायेदारी की प्रक्रिया कुदरत को संपत्ति में बदलना है! मकसद है कुदरत को दौलत में तबदील करना। पर्यावरण विचारकों ने चेतावनी दी है कि अगर हमने इस ओर ध्यान नहीं दिया तो प्रलय कोई दूर नहीं। इसलिये हमें ज्यादा से ज्यादा वृक्षारोपण करने के कार्य को प्राथमिकता देनी चाहिए।

गुरु जम्भेश्वर जी ने सन् 1485 ई. में बिश्नोई समाज की स्थापना इस मकसद के लिये की थी कि वन्य जीव और रूंख हमारे देश की धरोहर है और इसकी रक्षा ही हमारा सर्वश्रेष्ठ धर्म है।

- **सरदार मोहिंदर सिंह 'राही',** बरनाला, पंजाब
मो. 93560-92469

बधाई सन्देश

संजय बिश्नोई सुपुत्र स्व. श्री शीतल प्रसाद, निवासी ग्राम फतेहपुर बिश्नोई, जिला मुरादाबाद की पदोन्नति उत्तराखण्ड पुलिस में उपाधीक्षक के पद पर हुई है। आपको सराहनीय सेवा पदक से 2016 में सम्मानित किया गया था। वर्तमान में आप माननीय त्रिवेंद्र सिंह रावत, मुख्यमंत्री उत्तराखंड के मुख्य सुरक्षा अधिकारी के रूप में नियुक्त हैं।

मोहित बिश्नोई सुपुत्र श्री साधुराम बैनीवाल, निवासी गंगवा, हाल 1394, सैक्टर 16-17, हिसार की नियुक्ति ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स, मेरठ कैंट में सहायक प्रबन्धक के पद पर हुई है।

डॉ. आनन्द बिश्नोई, एडवोकेट सुपुत्र श्री राजकुमार बिश्नोई (ADJ Retd.), निवासी पंचकुला को चण्डीगढ़ का अतिरिक्त राजकीय अधिवक्ता (वरिष्ठ मण्डल) नियुक्त किया गया है।

डॉ. अंशुल बिश्नोई सुपुत्री श्री ओमप्रकाश जांगू, निवासी हिसार ने वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान से बायो-साईंस (प्लांट माइक्रोबायोलॉजी) में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की है।

विष्णु पूनियां सुपुत्र श्री शैलेन्द्र पूनियां, निवासी गांव सदलपुर, जिला हिसार ने गांव परपाड़ी, छत्तीसगढ़ में आयोजित 26वीं राष्ट्रीय थ्रो-बॉल प्रतियोगिता में हरियाणा प्रदेश की तरफ से प्रथम स्थान प्राप्त कर स्वर्ण पदक प्राप्त किया।

प्रियंका सुपुत्री श्री लादूराम साहू, निवासी गांव चोरा हाल बेंगलोर, कर्नाटक ने 12वीं की बोर्ड परीक्षा में 95.33% प्राप्त कर समाज का नाम रोशन किया है।

हितेश सुपुत्र श्री आसूराम बिश्नोई खिलेरी, निवासी वाडाभाडवी भीनमाल हाल बेंगलोर, कर्नाटक ने 10वीं की बोर्ड परीक्षा में 92% प्राप्त कर समाज का नाम रोशन किया है।

आप सबकी इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर बिश्नोई सभा, हिसार व अमर ज्योति पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई व उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

पर्यावरण बावनी

1. हंस वाहिनी हेत सूं, म्हां पर राखो मेर।
आखर हिवड़े ऊपजे, लीली करदो लेर॥
2. अतिचाह 'ज उर ऊंमहै, अंट खेंच्या अचूक।
रूंख रखावण ने मची, करड़ी जग में कूक॥
3. जबरा तूठा जंभेसर, जग तारण जगदेव।
अंत करण ऊजालियो, टणकी राखी टेव॥
4. बावनी बड़ी जोर री, पर्यावरण प्रचार।
रूंख भला जिण राखिया, सतवीरां रो सार॥
5. रूंख न दिखे रोही में, घोड़ा घाते काळ।
मिनख चालिया मालवे, ढोर डांगर बेहाल॥
6. पर्यावरण रा पारखी, जगतगुरु जम्भेस।
पावन पंथ चलावियो, दरसण मुरधर देस॥
7. गुणतीसां री गांठ में, पर्यावरण प्रचार।
जीव रूंखा री जाण ने, समझे जन संसार॥
8. खेत तो खाली हुया, काटते जाते पेड़।
मानो अब तो मानवी, छोड़ो इणसूं छेड़॥
9. मिनख जमारो बन गयो, जीवन रो जंजाल।
पेड़ न काटे पापिड़ो, करड़ा घण कंगाल॥
10. धजा फरूखी धरम री, सब रो लीनो सार।
माला दी मन भावणी, भवे सो भव सूं पार॥
11. पेड़ों में परमेसर बसे, पूजो कर प्रणाम।
दाय न दूजा देवता, राजी इण सूं राम॥
12. नहाओ नित रा नेम सूं, प्रभाते री पौर।
भजो हरी ने भाव सूं, जप गुणतीस जोर॥
13. काला नीला कावरा, कदे न राखो कोड।
धारो कपड़ा धोळिया, हुवै न ज्यां री हौड़॥
14. पाणी बाणी दूध ने, सदा 'ज लेवो छाण।
होम करो नित हेत सूं, जीव दया री जांण॥
15. नित नेम ने राखता, सूतक दिनड़ा तीस।
पांच ऋतुवंती पालतां, समझो बिसवा बीस॥
16. प्रीत पुरबली पालतां, हद रूंखां सूं हेत।
चावा हुयग्या चोखले, खेजड़ियां हद खेत॥
17. माता माने खेजड़ी, सब देवां सिरमौर।
पूजे इण ने प्रेम सूं, प्रभाते री पौर॥
18. धरम गुणतीस धारतां, रूंख रुखाळण काम।
रूंखां खातर जान दे, जग में जबरो नाम॥
19. धरम खंभ ने धारिया, इण कुळ रा आधार।
दीपक जेड़ा जगमगे, जाणे जग संसार॥
20. रूंख रुखाण आगथा, मारवाड़ रे मांय।
रंग दीजे रामासड़ी, हियो हिलोळा खाय॥
21. संवत सोला सौ भला, ऊपर इगसठ आंण।
जेठ अंधारी जाणजो, थावर री थरपाण॥
22. अबखी बगत आवत ही, कड़के सिर पर काळ।
सतगुरु राखे शरण में (तो), बांको हुवे न बाल॥
23. प्रण राखतां पंथ रो, अमर नांव आधार।
हुंस घणेरी हिवड़े में, खरतर खांडे धार॥
24. करमां बोली कड़कती, हद खेजड़ियां हेत।
गोरां गजब इन्याव हैं, चेत सके तो चेत॥
25. रूंख कटावे रावजी, अपणे खेत तमाम।
धक्को लगावै धरम नै, करड़ो खोटो काम॥
26. गोरां बोली गरब सूं, मरणों पण मंजूर।
अवसर भलो न आवसी, साको करां जरूर॥
27. साधू सबदां परखीजे, भीड़ पड़्या धर नार।
सती सूरमां परखीजो, रण बाजे रणकार॥
28. करमा गोरां कोड सूं, सुमर स्याम रो नाम।
खड़ी बाथ भर खेजड़ी, आज धरम रो काम॥
29. हिरदा जीव्या हरखते, खरी 'ज धरम खुमार।
सीस कटाया सान सूं, खाकर सतियां खार॥
30. करमां गोरां री कथा, कथै 'ज कर कर कोड।
सतिया सुणता ओजके, हद री लागे होड॥
31. मायड़ वाली कोख री, सदा 'ज राखी सान।
हिवड़े वाली हूंस सूं, दियो सीस रो मान॥
32. काटी खड़िया किड़कता, रूंख रुखाळण काम।
कीरत कहीजे कोड सूं, सिंवर सवेरे साम॥
33. खून न सूख्यो खाळ में, हद रामासड़ी हाल।
खेजड़ला में खीज रह्यो, घण ठाकुर गोपाल॥
34. तेज गांव तिल्वासणी, खेजड़ला रे पास।
खेतां वाली खेजड़ी, गजब गोप ने रास॥
35. खातो पिवतो रावजी, खड़ग धारियो खास।
खड़ खड़ खबर खड़गी ने, पल में पूग्या पास॥
36. पांचो पीथो पालिया, पेड़ काटणो पाप।
ठाकुर बोल्या ठहकता, छोड़ो थारी छाप॥
37. दुसमण आया देखिया, खून गयो है खोल।
नेतू खिलजी मोटजी, बोल्या इण विध बोल॥
38. रूंख न काटो रावजी, भलो 'ज राखो भाव।
बात धरम री बोलतां, मरणो म्हाने चाव॥
39. खड़ी बाथ भर खेजड़ी, नेतू खिवजी नाम।
भले मोट बड़भागियो, करण धरम रो काम॥
40. किरपो कालो कोढियो, किरत गुणो कठोर।
धड़ धरती पर पाधरा, खड़गी खड़िया जोर॥
41. फागण चाल्यो फटकारे, चेत चमकियो जौर।
संवत सतरा सौ सही, आफत भाई और॥
42. पग पग सूरा परखिये, पावो वीर प्रकास।
ऐड़ो बूचो ऐचरो, प्रगटियो पोलास॥
43. खेतां हरियल खेजड़ी, पोलासां रे पास।
करमहीणो करमुड़ो, उल्टी राखी आस॥
44. रूंख कटया रात रा, जाणे काला चोर।
पागीपे पग छाणियां, परभाते री पोर॥
45. अकड़ अणूंती धरतां, नरसी काढ्यो नाम।
जीव नरक में जावसी, धिन खेजड़ली धाम॥
46. साबत धरम राखण सदा, आया हो अगवाण।
काटिया पण हटिया नहीं, जबरी राखी जाण॥
47. तेग उठायो तेस में, रतने कर कर रीस।
संभीरा सूत आन सूं, सीस दियो बगसीस॥
48. सूरो सुरग सिधावियो, ऊजळ राखी आण।
कदे न भूलां कीरती, जग आखे में जाण॥
49. झीमा जायो लाडलो, हरखी 'ज हद अपार।
कुल ऊलाजो कर गयो, भल ऊमा भरतार॥
50. जग इसड़ा जोधा नहीं, मोत्यां मूंगो मोल।
जोया जुग में नी मिले, लिये ताकड़ी तोल॥
51. सतरा सौ सितयासिये, और खड़ाणों एक।
रूंखा हित मरण रो, लिखियो लंबो लेख॥
52. वीरां री घण वीरता, बंशी सांच बखाण।
जस गाइजे 'ह जोर रो, खेजड़ली री खाण॥

-मास्टर बंशीलाल ढाका
बाड़मेर
मो.: 09460538429

बाल कविताएँ

दीर्घायु वृक्ष

जब भी याद आता वह विशाल दीर्घायु वृक्ष
याद आते उपनिषद्! याद आती
एक स्वच्छ सरल जीवन शैली! उसकी
सदा शान्त छाया में वह एक विचित्र-सी
उदार गुणवत्ता जो गर्मी में शीतलता देती
और जड़ों में गर्माहट।
याद आती एक तीखी
पर मित्र-सी सोंधी खुशबू, जैसे बाबा का स्वभाव।
--00--
याद आती पेड़ के नीचे सबके लिए
हमेशा पड़ी रहने वाली
बाघ की दो चार खाटें
निबौलियों से खेलता एक बचपन....

-**सिद्धि वाशिष्ठ,** हिसार

पेड़ लगाओ पेड़ लगाओ

पेड़ लगाओ, पेड़ लगाओ।
सारे मिलके पेड़ लगाओ॥
पेड़ों से हमें मिले ऑक्सीजन।
जिससे जिंदा रहते हैं॥
पेड़ों से हमें मिलती छाया।
जिससे ठण्डी हवा मिलती है॥
पेड़ों से हमें मिलते कपड़े।
जिससे तन को ढकते हैं॥
पेड़ों से हमें मिलती औषधियाँ।
जिससे बीमारी भगाते हैं॥
पेड़ों से हमें मिलती पुस्तक।
जिसे पढ़कर ज्ञान बढ़ाते हैं॥
पेड़ों से हमें मिलती वर्षा।
जिससे फसल उगाते हैं॥
अब हर दिल की यही पुकार!
पेड़ लगाओ, पेड़ लगाओ॥

-**वैशाली,** सिरसा

कौन सिखाता?

कौन सिखाता है चिड़ियों को
चीं-चीं, चीं-चीं करना?
कौन सिखाता फुदक-फुदक कर
उनको चलना फिरना?

कौन सिखाता फुर से उड़ना
दाने चुग-चुग खाना?
कौन सिखाता तिनके ला-ला
कर घोंसले बनाना?

कौन सिखाता है बच्चों का
लालन-पालन उनको?
माँ का प्यार, दुलार, चौकसी
कौन सिखाता उनको?
कुदरत का यह खेल
वही हम सबको, सब कुछ देती।
किन्तु नहीं बदले में हमसे
वह कुछ भी है लेती।

हम सब उसके अंश
कि जैसे तरू-पशु-पक्षी सारे।
हम सब उसके वंशज
जैसे सूरज-चांद-सितारे।

-**प्रियंका बिश्नोई**
बड़ोपल, फतेहाबाद

एक बीज

मिट्टी का गहरा अंधकार, डूबा है उसमें एक बीज,
वह खो न गया, मिट्टी न बना, कोदों, सरसों से शुद्ध बीज।

उस छोटे उर में छुपे हुए, हैं डाल-पात औ स्कंध-मूल,
गहरी हरीतिमा की संसृति, बहु रूप-रंग, फल और फूल!

वह है मुट्ठी में बंद किये, वट के पादप का महाकार।
संसार एक! आश्चर्य एक! वह एक बूंद, सागर अपार!

बंदी उसमें जीवन-अंकुर, जो तोड़ निखिल जग के बंधन।
पाने को है निज सत्त्व, मुक्ति! जड़ निद्रा से जग, बन चेतन।

आ: भेद न सका सृजन रहस्य, कोई भी! वह जो शुद्र पोत।
उसमें अनंत का है निवास, वह जग जीवन से ओत प्रोत!

मिट्टी का गहरा अंधकार, सोया है उसमें एक बीज।
उसका प्रकाश उसके भीतर, वह अमर पुत्र! वह तुच्छ चीज?

- **राजबाला ऐचरा**
बीकानेर

साखी

(शहीद जगदीश बिश्नोई के सम्मान में)

नोखारा गाँव जेगला, प्राण दिया देशहित सही बीसवा बीस।
जूझ पड्या बे तो नक्सलियाँ सूँ, बिकाणैं रा बिश्नोई जगदीश।
जाम्भोंजी री पुण्य भूमि जेगला, खूब लड्या बे मिट्या अवनीश।
छत्तीसगढ़ में वीर भिड्या, हो न्यौछावर दिया देश रक्षा में शीश ॥1॥

माया अरू घर-बार सुहावणा, देशभक्ति में गया छाय।
देशवासियाँ नै सुरक्षित राखिया, देश बीकाणै रै माँय।
बिश्नोई राखै देश प्राणियाँ, सदा बे चालै गुरु री राह।
गुरु जम्भेश्वर रखावै तो रहे, अमर बलिदानी री राह ॥2॥

जहाँ दीठा तहां रक्षा करी, जाणै जगदीश देशभक्ति री सार।
देशवासी जम्भगुरु री सीख, वीरता अरू साहस ही ततसार।
जेगला नोखा अर्जूनराम रै बेटै, दे दी बलि बही खून री धार।
नाम अमर म्हारों कर दीन्हों, जगदीश तज भारत तणों संसार ॥3॥

रैण नैं गाँव जेगळा बीकानेर मां, नक्सलियाँ बे तणी फौलाद।
पापी नक्सली धर्म मानै नहीं, जो निर्दोषां नै मारै करके वाद।
बिश्नोई धर्म रा पक्का रहै,बे है शिरोमणी बिश्नोई री औलाद।
वीर मिल चालै गुरु फरमाई, दूर छोड़ सै थौथा वाद-विवाद ॥4॥

नोखा देश बीकाणै रा गाँव जेगळा, जगदीश बलि कहावियो।
तज भारत माँ हित शरीर, लाल अर्जुन रो अमर कहावियो।
बिश्नोई जेगळै रा मानवी, देश रा नागरिक बचावण आवियो।
साख बिश्नोई देहड़ू री बधायी, अमर नाँव जग मां करावियो ॥5॥

कर्‌या प्रेम माँ भारती सूँ, देश रा बड़ भागी वीर धीर जै।
दीन धर्म-नियम सुरक्षित राखतां, परमार्थ में गम्भीर जै।
नाम विष्णु अमृत पाहळ, ना हुय्या मुश्किल में अधीर जै।
गुरु जम्भेश्वर रा नियम मानै, अहिंसा राखै सूरवीर जै ॥6॥

पग-पग माँ री रक्षा करी, बलि होवै ले विष्णु री शरणाई।
जद पूगा बिश्नोई जवान, जगदीश वीरता दिखा दी भाई।
जद आयौ बिश्नोई रो लाल, नक्सली दुष्ट सारे थरारायी।
जग में पुण्य बड़ा कमाया, जगदीश वीरता री राह दिखाई ॥7॥

सी.आर.पी.एफ. रा जवान जगदीश, थारी साख भरै संसार जै।
गुरु जम्भेश्वर री कृपा घणी, जो होवै सीधा भव जल पार जै।
देश धर्म पै पक्का रह्या, किया भारत नै माता जिसा प्यार जै।
सुकरत करता स्वर्ग गुरुधाम, थानै 'पृथ्वीसिंह' कहै विचार जै ॥8॥

-पृथ्वीसिंह बैनीवाल
313, सैक्टर-14, हिसार-125001
मो.: 094676-94029

पर्यावरण दोहे

वृक्षों को मत काटिए, वृक्ष धरा श्रृंगार,
हरियाली वसुधा रहे, बहे स्वच्छ जलधार।
नदियाँ सब बेहाल हैं, इन पर दे दें ध्यान,
कचरा निस्तारित करें, बन जाएँ इंसान।
जैविक खेती है भली, धरती हो आबाद,
गोबर को अपनाइए, बचे रसायन खाद।
अदरक गमलों में उगे, उगें टमाटर लाल,
छत पर खेती भी करें, जीवन हो खुशहाल।
इसे आज ही त्यागिये, कभी न होती नष्ट,
पोलिथिन या प्लास्टिक, धरती को दे कष्ट।
कीट नाशकों का जहर, वार करे यह गुप्त,
पशु पक्षी बेहाल हैं, आज हुए कुछ लुप्त।
दूध पिलाते जो हमें, वही बने आहार,
इनसे कैसी दुश्मनी, क्यों होता संहार।

-अम्बरीष श्रीवास्तव, दिल्ली

प्रदूषण के दोहे

शुद्ध नहीं आबो-हवा, दूषित है आकाश,
सभ्य आदमी कर रहा, स्वयं सृष्टि का नाश ॥1॥
ओजोन परत गल रही, प्रगति बनी अभिशाप,
वक्त अभी है चेतिए, पछ्ताएंगे आप ॥2॥
अंत निकट संसार का, सूख रही है झील,
दूषित है वातावरण, लुप्त हो रही चील ॥3॥
हथियारों की होड़ से, विश्व हुआ भयभीत,
रोज परीक्षण गा रहे, बरबादी के गीत ॥4॥
नदिया क्यों नाला बनी, इस पर करो विचार,
जहर न अब जल में घुले, ऐसा हो उपचार ॥5॥
आतिशबाजी छोड़कर, ताली मत दे यार,
शोर पटाखों का बहुत, होता है बेकार ॥6॥
गलोबल वार्मिग कर रही, सभी को सावधान,
प्रदूषण पर लगाम कस, मत बन तू नादान ॥7॥
कुदरत से खिलवाड़ पर, बने सख्त कानून,
पहले दो चेतावनी, फिर काटो नाखून ॥8॥
ऊँचे सुर में लग रहे, जयकारे दिन-रात,
शोर प्रदूषण हो रहा, भक्तों की सौगात ॥9॥
नियमित गाड़ी जांच हो, तो प्रदूषण न होय,
अर्थदण्ड से भी बचे, सदा चैन से सोय ॥10॥
दूषित जल से हो रही, मछली भी बेचैन,
हैरानी इस बात से, मानव मूंदे नैन ॥11॥
सूखा-बाढ़-अकाल है, कुदरत का आक्रोश,
किया प्रदूषण अत्यधिक, मानव का है दोष ॥12॥

-महावीर उत्तरांचली, देहरादून

बिश्नोई धर्म के उनतीस नियमों की वैदिक पर्यावरणीय अवधारणा

आज के इस वैज्ञानिक युग में आवागमन और दूर संचार के साधनों से सारा विश्व एक हो गया है। इसी कारण आज बढ़ती हुई जनसंख्या, मनुष्य का स्वार्थी, विलासी भौतिक दृष्टिकोण, औद्योगिकरण एवं बढ़ती हुई पूंजीवादी व्यवस्था ने विश्व के सामने पर्यावरण प्रदूषण की एक भयंकर समस्या खड़ी कर दी है। इस समस्या ने मनुष्य के अस्तित्व को ही खतरे में डाल दिया है और उसके सारे भौतिक विकास पर एक प्रश्नचिह्न लग गया है। इसी कारण आज विश्व के सभी देश किसी एक समस्या पर चिन्तित हैं तो वह है- 'पर्यावरण प्रदूषण की समस्या'।

गुरु जाम्भोजी की सबदवाणी का मुख्य उद्देश्य भी "जीयां नै जुगती अर मुवां नै मुगती है" अर्थात् युक्तिपूर्वक भौतिक जीवन जीना और मृत्यु के बाद मोक्ष की प्राप्ति करना। यही कथन उनकी सबदवाणी में विस्तार से प्राप्त होता है उनके उपदेशों में मनुष्य को बताया गया है कि क्या करने से लाभ हैं और किससे हानि। उनके बताये मार्ग पर चलने से व्यक्ति का भौतिक जीवन भी सुखी हो जायेगा और मोक्ष भी प्राप्त हो जायेगा। मनुष्य के भौतिक जीवन की सफलता एवं मोक्ष प्राप्ति में पर्यावरण की शुद्धि का भी महत्वपूर्ण योगदान है। इसी बात को ध्यान में रखकर उन्होंने उनतीस नियमों की आचार संहिता अपने अनुयायियों के सामने प्रस्तुत की थी तथा सबदवाणी में भी स्थान- स्थान पर अपने उपदेशों के द्वारा पर्यावरण की शुद्धता एवं सन्तुलन पर बल दिया है।

वह प्रत्येक वस्तु जो किसी वस्तु को चारों ओर से घेरती है एवं उस पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालती है वह पर्यावरण कहलाती है। काल, दिशा, आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी एवं वनस्पतियां ये सात पदार्थ पर्यावरण हैं। वह प्रत्येक वस्तु जो किसी वस्तु को चारों ओर से घेरती है एवं उस पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालती है वह पर्यावरण कहलाती है। काल, दिशा, आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी एवं वनस्पतियां ये सात पदार्थ पर्यावरण हैं। पर्यावरण स्वच्छता के लिए वैदिक यज्ञ का विशेष महत्व है। अथर्ववेद में "यज्ञो विश्वस्य भुवनस्य नाभिः" कहकर समस्त ब्रह्माण्ड को बांधने वाला नाभिस्थल यज्ञ को बताया गया है। हवनीय द्रव्य जो अग्नि में डाले जाते हैं उनसे जो धुआं एवं भाप उत्पन्न होती है वह वातावरण को शुद्धता प्रदान करती है जिससे हमारा परिवेश स्वस्थ व निर्मल होता है।

गुरु जाम्भोजी द्वारा बताये गये उनतीस नियमों का यदि सूक्ष्मता से अवलोकन करें तो यह बात पूर्णरूप से स्पष्ट हो जायेगी कि उन्होंने पर्यावरण को कितने व्यापक रूप में ग्रहण किया था और उसी को ध्यान में रखकर उन्होंने इन उनतीस नियमों के पालन की बात कही थी। प्रकृति के प्रमुख घटक तीन हैं- मानव, वनस्पति एवं मानवेत्तर प्राणी। इनमें मानव अपनी रक्षा करने में स्वयं समर्थ है और शेष दोनों की रक्षा भी मानव इच्छा पर निर्भर है। मानव का हित दोनों को सुरक्षित रखने में है। इसी से प्रकृति के विभिन्न आयामों में सन्तुलन रह सकता है और पर्यावरण भी शुद्ध रह सकता है। इन्ही सब तथ्यों को समझकर गुरु जाम्भोजी ने अपने अनुयायियों को उनतीस नियमों की एक ऐसी आचार संहिता दी है, जिसमें पर्यावरण व जीव संरक्षण का समावेश है जिसका अनुसरण कर वह सुखी जीवन -यापन कर सकें। प्रकृति के तीनों घटकों की सुरक्षा हेतु यदि हम उनतीस नियमों के सार को समझें तो वन एवं वन्य जीवों की रक्षा करने व वैदिक यज्ञ करने से प्राकृतिक प्रदूषण रोका जा सकता है। प्रातः स्नान, 30 दिन सूतक, 5 दिन ऋतुवन्ती धर्म का पालन करने से शारीरिक प्रदूषण से मुक्ति पा सकते हैं। धूम्रपान, मद्यपान, माँस भक्षण आदि का त्याग कर बीमारियों से मुक्ति पा सकते हैं। व्रत, जप शील, संतोष से मानसिक शुद्धता बनाई जा सकती है। शेष अजर को जरना, दान करना, वाद विवाद, निन्दा, चोरी करना व झूठ न बोलना से सामाजिक प्रदूषण रोका जा सकता है।

चारों वेद, छः शास्त्र, अट्ठारह पुराण, गीता, भागवत् रामायण, महाभारत तथा सद्ग्रन्थों में से मन्थन करने के बाद सम्पूर्ण मानव समाज का भला करने वाले 29 सूत्र श्री जम्भेश्वरजी ने छटनी करके एक माला में पिरोए। इन सूत्रों को जीवनगत करने से तात्कालिक परिस्थितियों में परिवर्तन तो निश्चित था ही, साथ ही ये सूत्र देश काल व हर परिस्थिति में सर्वमान्य सत्य व प्राणीमात्र के लिए हितकारी हैं। इनका सम्बन्ध किसी विशेष देश, काल या वर्ग से न होकर समस्त संसार तथा शाश्वत मानव मूल्यों के साथ जुड़ा हुआ है। ज्यों-ज्यों समय आगे बढ़ता जा रहा है, इनकी सार्थकता त्यों-त्यों और अधिक प्रभावी होती दृष्टिगत हो रही है। उनतीस नियमों में से एक-एक पर यदि विस्तार से प्रकाश डाला जाए तो एक-एक ग्रन्थ तैयार हो सकता है

परन्तु यहां संक्षेप में पर्यावरण की दृष्टि से परिचय प्रस्तुत कर रही हूं ताकि वर्तमान सन्दर्भ में, इनकी उपादेयता को गंभीरता से अनुभव किया जा सके। प्रकृति के प्रथम घटक मानव के सन्दर्भ में निम्न नियमों को देखते हैं –

1. **तीस दिन सूतक:** तीस दिन सूतक से अभिप्राय है कि शिशु जन्म के समय, जच्चा बच्चा पूर्ण विश्राम करे, पौष्टिक आहार ले तथा जच्चा प्रसूति गृह से बाहर न निकले, प्रसूतिकक्ष तथा उस घर को सूतक का घर मानकर, बाहर के लोग कम से कम वहां आएं। शिशु जन्म के समय माता के शरीर की अत्यधिक ऊर्जा खर्च होती है तथा माता व शिशु की रोग निरोधक क्षमता कमजोर पड़ जाती है। ऐसी स्थिति में प्रथम तो, उनका बाहरी सम्पर्क कम से कम हो ताकि किसी बीमारी के जीवाणु उनके शरीर में प्रवेश न कर सकें। तीस दिवस का यह प्रसूति–गृह प्रवास बाहरी प्रदूषण तथा घातक जीवाणुओं से रक्षा कवच का कार्य करता है। नवजात शिशु का शरीर जन्म के समय बहुत कोमल व नाजुक होता है, उसे बाहरी सम्पर्क से बचकर रहने की तथा एक सामान्य शरीर–ताप की आवश्यकता रहती है जिसे वह निरन्तर अपनी माँ के शरीर के साथ रहकर ही पा सकता है।

अत: यह तीस दिन सूतक का नियम पूर्णत: वैज्ञानिक तथा स्वास्थ्य की दृष्टि से एक ऐसा शाश्वत नियम बनने के योग्य है जिसे विश्व स्वास्थ्य संगठन अपनाकर, समस्त संसार की जच्चाओं–बच्चाओं का भला कर सकता है तथा आने वाले शिशुओं को एक स्वस्थ जीवन का आधार दे सकता है।

2. **पाँच ऋतुवन्ती नारी:** ऋतु धर्म का सम्बन्ध एक विशेष आयु वर्ग की प्रत्येक स्त्री के साथ जुड़ा हुआ है। संसार की हर नारी इस प्राकृतिक प्रक्रिया को सहन करती है। इस नियम के अन्तर्गत यह व्यवस्था है कि ऋतुकाल में वह स्त्री पाँच दिन तक सामान्य गृहकार्य से मुक्त रहे। अपने शयनकक्ष में पूर्ण विश्राम करे। वह यथासम्भव कम से कम शारीरिक परिश्रम करे व दूसरों के सम्पर्क से दूर रहे। किसी मांगलिक कार्य होम–जाप तथा उत्सव त्यौहार में सक्रिय भागीदार न बने। एक तरह से यह समय प्रकृति द्वारा नारी देह के शुद्धिकरण का समय है।

वैज्ञानिक दृष्टि से इस नियम का आधार शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य है। डाक्टरों का मानना है कि ऋतुकाल में शरीर से कुछ ऐसी ऊर्जा किरणें निकलती हैं, जो अन्य सामान्य स्त्री पुरुषों के लिए घातक होती हैं। अत: पाँच दिन तक ऋतुमती का अलग रहना, विश्राम करना, उसके स्वास्थ्य व सामाजिक दृष्टि से अति आवश्यक है। यह एक शाश्वत व सार्वभौम नियम है। समस्त विश्व समाज इसे अपनाकर नारी जाति एवं मातृशक्ति के कल्याण का भागीदार बन सकता है।

3. **सेरा करो स्नान**

सेरा से अभिप्राय सवेरा अर्थात् प्रात:काल सूर्योदय से पूर्व स्नान करना अति हितकारी एवं उत्तम कर्म माना जाता है। इससे तन में स्फूर्ति आती है, मन प्रसन्न रहता है। रात में विश्राम करने व नींद से शरीर के करोड़ो रोमछिद्र बन्द हो जाते हैं या सुस्त पड़ जाते हैं। प्रात: नित्यक्रिया से निवृत्त होने के पश्चात् स्नान करने से, बन्द रोम द्वार खुल जाते हैं और शरीर प्रात:कालीन शुद्ध वायु ग्रहण करता है जिससे विभिन्न अंगों में रुका हुआ रक्तसंचार पुन: सामान्य गति से होने लगता है।

प्राकृतिक चिकित्सा विज्ञान मानता है कि प्रात: कालीन नियमित शीतल जल से स्नान करने वालों को सिरदर्द, रक्तचाप या चर्म रोग का शिकार नहीं होना पड़ता। गुरु महाराज ने कहा है– 'तन मन धोइये, संजम होइये'।

4. **शील सन्तोश शुचि प्यारो॥**

सज्जनता, सन्तोष और पवित्रता इन गुणों का सम्बन्ध मानव मन की पावनता ये है। शील का अर्थ है सद्वृत्ति, विनम्र स्वभाव, राग द्वेष रहित चरित्र। सन्तोष रूपी धन तो एक ऐसी औषधि है जो असन्तोष, हाय तौबा, ईर्ष्या अहंकार, बैचेनी आदि कई मानसिक और शारीरिक व्याधियों को दूर करती है। शील और सन्तोष मानव चरित्र के आभूषण हैं यही आन्तरिक पवित्रता के आधार हैं। इस नियम का आयाम विश्वव्यापी है। संसार के प्रत्येक संन्यासी व दार्शनिक ने इन गुणों की प्रशंसा मुक्त कंठ से की है। शील, सन्तोष और पवित्रता से हीन किसी सभ्य, सुसंस्कृत मानव समाज की तो कल्पना भी नहीं की जा सकती।

5. **द्विकाल संध्या करो, सांझ आरती गुण गावौ।**

सूर्योदय व सूर्यास्त का समय चिन्तन, मनन एवं भक्ति भाव से परमात्मा के गुणगान का बताया गया है प्रात:काल मनुष्य अपने दैनिक कार्यों को आरम्भ करते समय उदित होते सूर्य के साथ दिनभर करने वाले कार्यों का चिन्तन करता है व ईश्वर से उन कार्यों की सफलता के लिए प्रार्थना करता है। इसी प्रकार सायं काल की संध्या के समय किये गये कार्यों का मनन करता है व आत्म मंथन करता है कि कहीं अपनी राह से भटका तो नहीं या मानवीय मूल्यों के विरुद्ध तो कोई कार्य नहीं किया, जाने अनजाने में

किसी को कोई कष्ट तो नहीं पहुँचाया। अपने जीवन का अमूल्य दिन व्यर्थ तो नहीं गंवाया, कोई ऐसा शुभ व पवित्र कार्य किया है, जो उसकी पूंजी बन सके। संध्या का समय वह समय है जब नदियों का नीर स्थिर होने लगता है। समस्त वनस्पति जगत व प्राणी जगत एक विशेष मानसिक स्थिति में पहुँच जाता है, ऐसे समय आत्मचिन्तन करना तथा परम सत्ता को याद करना अपने चरित्र का परिमार्जन करना है। द्विकाल की संध्या एक तरह से जीवन के प्रारम्भ व अन्त का प्रतीक है, ऐसे सन्धि काल में आत्म-चिन्तन करना अति गुणकारी, लाभकारी एवं शुद्ध है।

6. होम हित चित्त प्रीत सूँ होय, बास बैकुण्ठो पावो।

होम करना अर्थात् नित्य यज्ञ करना एक अति पवित्र सत्कर्म है। भारतीय वैदिक साहित्य में यज्ञ की महिमा एक निर्विवाद सत्य है। यज्ञ सृष्टि संरचना का प्रतीक है। अथर्ववेद में "यज्ञो विश्वस्य भुवनस्य नाभिः" कहकर समस्त ब्रह्माण्ड को बाँधने वाला नाभिस्थल यज्ञ को बताया गया है- सूर्य समुद्र की किरणों की आहूति देता है, समुद्र आकाश को जल वाष्प, आकाश धरती को वर्षा जल, धरती प्रकृति को वनस्पति, फसलें, फल-फूल, अनाज और ये सब उर्जा के रूप में प्राणी मात्र को जीवन देते हैं। गुरु महाराज ने अपने शिष्यों को होम की जोत में अपने नित्य दर्शन देने की बात कही है, यहां गुरु महाराज का अभिप्राय प्राणियों को दर्शन के बहाने नित्य यज्ञ के लिए प्रेरित करना भी था जिससे मानव पर्यावरण के प्रति सचेत रहे। यज्ञ का देवता अग्नि शक्ति का प्रतीक है, शक्ति रहित संसार जड़ है। होम के साथ हित, यानी लोक कल्याण की भावना प्रमुख है, चित्त, यानी यज्ञ की आहूति मनोयोगपूर्वक देना ही सार्थक है। प्रीत शब्द प्रकृति एवं शेष जगत के साथ गहरे लगाव का प्रतिपादक है।

जा दिन तेरे होम न जाप न तप न किरिया।
गुरु न चीन्हू पंथ न पायो।

ऋग्वेद में कहा गया है कि यज्ञीय धुँए व सुगन्धित आहुति द्रव्यों से सम्पूर्ण वातावरण और वायुमण्डल प्रदूषण रहित हो जाता है-

त्व ंनो वायवेशामपूर्व्यः सोमानां प्रथमः प्रीतिमर्हसि,
सुतानां प्रीतिमर्हसि।

वर्तमान सन्दर्भ में वैज्ञानिक दृष्टि से यदि होम की समीक्षा की जाये तो इसके द्वारा पर्यावरण शुद्ध होता है, शुद्ध पर्यावरण वर्षा एवं जीवनदायी तत्वों का दाता है। यज्ञ की अग्नि असंख्य रोगाणुओं एवं जीवनघाती कीटाणुओं को नष्ट करती है। अनेक प्रयोगों द्वारा यज्ञ के लाभों को परखा गया है। यह भी सामने आया कि नित्य यज्ञ करने वाला व्यक्ति मौसमी बुखार, चर्मरोग, हृदय रोग एवं कैंसर जैसी बीमारियों का शिकार नहीं होता। इस प्रकार नित्य यज्ञ से प्राणी शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक लाभ तो प्राप्त करता ही है, साथ ही पर्यावरण को भी शुद्ध रखता है।

7. पानी बाणी ईन्धणी, दूध इतना लीजै छाण।

इस नियम में गुरु महाराज ने मनुष्य को पर्यावरण के प्रति सचेत करते हुए कहा है कि पाणी अर्थात् छना हुआ जल, कीट-कीटाणु, जीव-जन्तु, घास-फूस एवं कुछ सीमा तक रोगाणुओं से मुक्त होता है। स्वास्थ्य की दृष्टि से छना हुआ जल ही पीना चाहिए क्योंकि बिना छना जल नेहरुआ अर्थात् बाला जैसी बीमारी का कारण बनता है। स्वास्थ्य विज्ञान की दृष्टि से बिना छना जल कई घातक जानलेवा बीमारियों को मनुष्य के शरीर में पहुंचा देता है गुरु महाराज ने पानी की शुद्धता पर जोर देते हुए बिश्नोई पंथ का नियम बना दिया। आज की फिल्टर प्रणाली पानी छानने की उत्तम विधि है। ऋग्वेद में जल को अमृत व सर्वभैषज्यमय बताया है- **अप्स्वन्तरमृतप्सु भेषजम**।

8. शुद्ध व सच्ची वाणी बोलें: उच्चरित शब्दों का अनुकूल शब्द सुनकर श्रोता का तन-मन प्रफुल्लित हो जाता है वहीं एक अप्रिय शब्द उसके तन-मन में आग लगा देता है। छाणी बाणी एक ऐसा सुनहरा नियम है जो व्यक्ति को घर बाहर, देश-विदेश सर्वत्र आदर दिला सकता है और मानवीय गुणों का परिचायक है। मधुर बाणी का मोल मानव समाज ही नहीं अपितु मानवेत्तर प्राणी भी समझते हैं। मनुष्य के मानसिक सन्तुलन व आन्तरिक पर्यावरण के लिए यह नियम अति आवश्यक है।

..... क्रमशः अगले अंक में

-डॉ. वीना बिश्नोई
सहायक प्रोफेसर (संस्कृत विभाग)
कन्या गुरुकुल महाविद्यालय,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
मो. 7351666621, 9319566621

उस दशा या स्थिति को प्रदूषण कहते हैं जब मानव द्वारा पर्यावरण में विभिन्न तत्वों या ऊर्जा का इतनी मात्रा में संग्रह किया जाता है कि वे पास्थितिकी तंत्र द्वारा आत्मसात करने की क्षमता से अधिक हो जाते हैं।

-आर.एफ. दासरमन

पर्यावरण के सच्चे हितैषी गुरु जाम्भोजी

सृष्टि के पालनहार तीनों लोकों के स्वामी श्री हरि के अवतार भगवान गुरु जम्भेश्वरजी जिन्होंने वि.स. 1508 में इस राजस्थान की मरुभूमि पर अवतार लिया था। जो इतने वर्ष तक इस भूलोक पर मानव जाति को उनके कल्याण के लिये शिक्षा देते रहे और वि.सं. 1593 में 85 वर्ष की उम्र में स्वेच्छा से लालासर साथरी में हरी ककहेड़ी के नीचे शरीर त्यागकर अपने मूल निवास विष्णुधाम को प्रस्थान कर गए।

आज जहां भारत ही नहीं, पूरे विश्व में इस बात पर जोर दिया जा रहा है कि हरे वृक्ष लगाओ, काटो नहीं, अन्यथा हमें ताजी हवा, ऑक्सीजन, स्वच्छ पानी व बिना वर्षा के कारण गम्भीर अकाल का सामना करना पड़ेगा। जिसका अहसास विष्णु के अवतार गुरु जाम्भोजी को पहले से हो गया था। इसलिये उन्होंने 29 नियमों में से कुछ नियम ऐसे भी बनाए कि जिससे पर्यावरण संतुलन बना रहे, नहीं तो पृथ्वी व इस पर रहने वाले मनुष्य व जीव जंतु कैसे सुरक्षित रहेंगे? जिस तरह आजकल प्रदूषण फैल रहा है और वैज्ञानिकों के अनुसार ओजोन परत में छेद होने की बात कुछ वर्षों में सामने आई है तो ऐसे पृथ्वी के अस्तित्व पर संकट के बादल छा रहे हैं। इस पृथ्वी व इस पर रहने वाले मनुष्य, जीव जंतु व प्राणियों को शिक्षा देने हेतु जाम्भोजी ने इस मरुभूमि पर अवतार लिया और बिश्नोई धर्म की स्थापना कर 29 नियमों में से कुछ नियम पर्यावरण के संतुलन को ध्यान में रखकर बनाए।

गुरु जाम्भोजी ने समराथल धाम पर बिश्नोई धर्म की स्थापना सम्वत् 1542 में की। गुरु महाराज ने 29 धर्म नियमों की आचार संहिता का अपने शिष्यों, भक्तों और अनुयायियों को पालन करने के लिए आदेश दिया। इन धर्म नियमों में 20वां धर्म नियम है जीव दया पालणी, रूंख लीला नहिं घावै। उन्होंने बहुत पहले ही अनुभव कर लिया था कि वृक्ष धरती के शृंगार ही नहीं, पशु-पक्षियों के पोषक भी हैं।

गुरु जाम्भोजी के 29 नियमों में एक नियम पर्यावरण संरक्षण के लिए वृक्षों के साथ यज्ञ के महत्व को भी बताया था कि पर्यावरण की शुद्धि यज्ञ से भी होती है, जिसे जाभाणी साहित्य में होम (हवन) कहा जाता है। उन्होंने संध्या वंदन में होम करने का विधान भी घोषित किया था। इसलिए जलवायु की शुद्धता हेतु जाम्भोजी ने अपनी सबदवाणी में नित्य हवन करने का उपदेश दिया है। इसी संदर्भ में पर्यावरण संरक्षण के लिए यज्ञों के महत्व विधिवेत्ताओं ने भी मान्यता प्रदान की है। हवन के इस महत्व के पीछे एक कारण यह भी है कि बिश्नोई पंथ में हवन की ज्योति में गुरु जाम्भोजी के दर्शन माने जाते हैं। आज विज्ञान ने भी हवन के महत्व को स्वीकार कर लिया है। हवन से प्रदूषण नष्ट हो जाता है और संपूर्ण वातावरण शुद्ध हो जाता है। बिश्नोई पंथ में घरों में जो प्रतिदिन हवन होता है, उससे घर का वातावरण शुद्ध रहता है और मन्दिरों में होने वाले सामूहिक हवन से समाज का वातावरण शुद्ध रहता है।

जाम्भाणी सबदार्थ सबद 73 में गुरु जम्भेश्वरजी कहते हैं-

"हरी कंकेड़ी मंडप मैड़ी। जहां हमारा बासा॥"

अर्थात् हे जिज्ञासु! तुम देख रहे हो, यहां हरा कंकेड़ी का वृक्ष जिसके नीचे हम बैठे हैं, यही अभी हमारे लिये महल और मेड़ी है, परंतु यदि हम अपने विराट रूप को प्रकट करें तो यह संपूर्ण चार खण्ड पृथ्वी और इसके नव महाद्वीप थर. थर कांपने लगे। अंत में गुरु जाम्भोजी का यही कहना है कि जहां-जहां भी हरियाली होगी, वहां मेरा वास होगा।

पर्यावरण संरक्षण पर गुरु जाम्भोजी की प्रेरणा से ही बिश्नोई समाज के नर-नारी पेड़ों व जीवों पर समय-समय पर और आज भी बलिदान देते रहे हैं और आज भी दे रहे हैं। जिसमें वर्ष 1730 में जोधपुर जिले के खेजड़ली गांव में श्रीमती अमृती देवी बिश्नोई के नेतृत्व में 363 बिश्नोई नर-नारी का पेड़ों से चिपककर अपने सिर कटवा लेना, सम्पूर्ण भारत ही नहीं, विश्व के लिए अनूठा उदाहरण व बलिदान है। हमारे देश में हर वर्ष पर्यावरण के लिए अच्छा कार्य करने पर भारत व राज्य सरकारों द्वारा प्रशस्ति पत्र व नकद राशि का भुगतान भी किया जाता है। इस कार्य में बिश्नोई समाज के योगदान की सराहना की जाती है और

जिन्होंने इसके लिए बलिदान दिया है, उनको याद भी किया जाता है।

वृक्षादि स्थावर सब सृष्टि,
ब्रह्म रूप यह जान समष्टि।
इनमें नाना जीव बिराजै,
चेतन रूप सकल वपु छाजै।
बिना विचारे इन्हें नहीं हरना,
काट बाढ़ घर में नहीं धरना॥

अर्थात् "वृक्ष आदि परमपिता परमात्मा की स्थावर (अचर) सृष्टि (रचना) है। समष्टि दृष्टि से इसे परमात्मा का रूप ही जानना चाहिए। इन वृक्षों में भांति-भांति के असंख्य जीव आश्रय पाए हुए रहते हैं। जो चैतन्य रूप में परमात्मा के पूर्ण शरीर के अंग स्वरूपा हैं। अस्तु- बिना सोचे-विचारे इन्हें काटना नहीं चाहिए। वृक्षों को काटकर घर में नहीं रखना चाहिए।"

-नीरज बिश्नोई
अजमेर (राजस्थान)
मो.: 9414220447

एक सदी

तपती धरती
छाँव तलाशेगी
नदियाँ लौट जाएंगी
पहाड़ों की ओर
एक सदी जड़ होगी।
आखिरी जंग

टुँटी आते ही
चुड़ियों का शोर मचता
जरा-सा घड़ा
आगे-पीछे होते ही
बात में बात निकलती
और उलझ पड़तीं
चेहरे पर लिपटी चुन्नियाँ
धूल फाँकती
चौपाल पर बीड़ियाँ फूँकते
निठल्ले दाँत
बड़े चाव से चमकते
सुरमे में दहकती आँखें
हँसतीं.....
आखिरी जंग
यही होगी।
टुँटी आना- सावर्जनिक नल में पानी आना

- **शर्मीला** (शोधार्थी)
हिंदी विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय,
चण्डीगढ़

खोया बचपन

धरती है गोल, शून्य से झांककर तो देखो।
कक्षा में बैठे बैठे, किताबों से पढ़कर मत फेंको।
वह पढ़ाई भी कैसी, जो बचपन से जवानी तक रूलाती है।
भविष्य तो बन जाएगा, पर खोये बचपन की याद आती है।
जनक के जनक ने सुनाई थी जो कहानियाँ।
राजा एक ही होता था, कई होती थी रानियाँ।
शैतानी भी ऐसी, कि याद आते ही आंखें भर आती हैं।
भविष्य तो बन जाएगा, पर खोये बचपन की याद आती है।
रुपया एक लेकर भी, उमड़ते भाव अरबपति वाले।
भूलाएं नहीं भूलते, बचपन की निकर के रंग-बिरंगे नाले।
रूठने मनाने कि वो घड़ियाँ, सुनहरे पंख लगा उड़ जाती है।
भविष्य तो बन जाएगा, पर खोये बचपन की याद आती है।
अगर जीते जी है स्वर्ग कहीं, तो वो है जिंदगी का पहला दौर।
मुझे फिर से लौटा वो समा, कभी बना था सिपाही कभी बना चोर।
सुनी थी जो लौरियां, लगता है मां आज भी गाती है।
भविष्य तो बन जाएगा, पर खोये बचपन की याद आती है।

-नवीन बिश्नोई
ज्वाला कॉलोनी, नई मण्डी घड़साना
श्रीगंगानगर, राजस्थान
मो.-08290632352

जलवायु का बदलना एक गंभीर समस्या है और इसे पूरी तरह से हल करने की आवश्यकता है। यह एक बहुत बड़ी जिम्मेवारी होनी चाहिए।

-बिल गेट्स

कहानी

पूरा आदमी

काले सांपों जैसी कोलतार की सड़को पर दिन भर गाड़ियों की चिल्ल पोंऽऽऽ के बीच में आदमी भी रेंगते, हांफते रहते है। यह शहर भी अन्य शहरों की तरह अखबारों की खबरों व चाय की चुस्कियों के साथ दिन की शुरूआत करता है और लगभग आधी रात मांस, मच्छी, मदिरा, चोरी चकारी, गंदगी व ताक-झांक करते हुए बिस्तरों से लेकर फुटपाथों तक पसर जाता है। जून की गर्मी में धधकता यह शहर काले चश्मों, टोपियों, गमछों की ओट में दुबकने के प्रयास करते-2 जब थक जाता है तो पेड़ों और प्रकृति के बारे में भी एक आध बार सोच जरूर लेता है।

जब लू के थपेड़ों ने दर्शन सिंह को लगभग अधमरा कर दिया तो वह उछल कर सड़क किनारे खड़े पीपल के पेड़ के नीचे जा बैठा। जहां बहुत से गधे, कुत्ते, सांड, गायें, कीट, पतंगे पहले से ही काबिज थे। वह उन्हीं के बीच लगभग फंस गया था। उसके शरीर के हर हिस्से से पसीने की बूंदें टपक रही थी। आंखों के आगे लाल-लाल दृश्य तैर रहे थे। कुछ देर सुस्ताने के बाद उसने ऊपर की ओर देखा, तो यकीन हुआ कि वह सचमुच घने छायादार पीपल के नीचे बैठा है। पीपल की पत्तियां लू में भी खिलखिला रही थी, जिनकी ओट में गिलहरी, चिड़िया, तोते, कबूतर, उछलकूद मचा रहे थे। पेड़ पर चल रहे उत्सवों ने एक क्षण के लिए उसके भीतर चल रही (कुल्हाडिया सोच) की धार को कुंद कर दिया था। वह उठा और पेड़ के तने को अपनी बाहों में भरने लगा। उसके मस्तिष्क में गुणा भाग की मशीनें चलने लगी। इतने फिट चौड़ाई, इतने फिट लम्बाई, इतना वजन, ऊपर भी खूब माल भरा है, अगर यही टाली का पेड़ होता तो मैं एक लाख रुपये दे देता। यह तो पीपल है, इसे काटने कौन देता है? बहुत से विचार आए और गए। वह अपनी इस व्यापारी सोच पर ना जाने क्यूं घिन्न कर बैठा। उसके मन में उपजी कुल्हाडिया सोच को जानकर एक साथ पेड़ की पत्तियां घुंघरुओं की तरह बज उठी, अजीब सी खड़खड़ाहट के बाद लम्बी चुप्पी पसर गई..... इस चुप्पी में हजारों साजिशें कैद थी।

दर्शन सिंह पेड़ काटने का काम करता है, यही उसका रोजगार है। लम्बे-चौड़े कुल्हाड़े, आरियां, छेनियां, हथोड़े, रस्से, ट्रैक्टर, ट्रॉलियां, बीसियों मजदूरों के लाव लश्कर के साथ जब वह गांव से बाहर निकलता है तो पेड़ों पर चीखो पुकार मच जाती है। पेड़ों पर निर्भर रहने वाले जीवों को पता है कि दर्शन सिंह क्या-क्या कर सकता है। खेतों में खड़ी लाखों की फसलें चाहे किसानों का मरते दम तक साथ ना छोड़े फिर भी किसान दस बीस हजार के पेड़ काटवाने से नहीं चूकते। ताऊ जगमाल खेजड़ी ना कटवाने पर अड़ा रहा, फिर मन डोला तो पच्चीस हजार मांग बैठा। मौका देख दर्शन सिंह ने बाईस हजार में सौदा तय कर लिया। धर्म और नियम धन के आगे कमजोर पड़ गए। दर्शन सिंह ने ताऊ से कहा था हर पेड़ की उम्र होती है जब वह बूढ़ा हो जाता है तो खुद कष्ट भोगता है। खेजड़ी के पेड़ के हाथ कौन लगाता है जी। ये तो मैं खतरा उठा रहा हूँ, कहीं पत्रकारों को पता चल गया तो उन्हें भी टुकड़े फैंकने पड़ेगे। ट्रॉली सड़क पर चढ़ने के बाद तो ना जाने कौन-कौन पीछे लग जाते हैं, (मरे हुए ऊँट के पीछे कुत्तों की क्या कमी है) सबको खिलाने के बाद मेरे पास क्या बचेगा 'लट्टू'। जर्दा थूक कर दर्शन सिंह ने पंजाबी में बहुत सी गालियां उगल दी। ताऊ जगमाल बीड़ी के धूँए को मूँछों के आस-पास घुमाते हुए बोला- 'चल तूं दे, बाईस हजार ही, पर नगद लूंगा।' दोनों ने एक-दूसरे को तोल लिया था।

चूल्हे में आग न जले तो पेट की आग भभकने लगती है, फिर पाप, पुण्य, धर्म, अधर्म को कौन देखता है। चार बेटियों और एक बेटे का बाप दर्शन सिंह भी अपवाद कहां था। घर को चलाने के लिए सालभर में लगभग सौ पेड़ काट डालता, लेकिन फिर भी घर था कि मरियल ऊँट की तरह पांव ना उठा रहा था। जैसे-तैसे करके दो बड़ी बेटियों की शादी कर दी, जिससे खर्च और कर्ज दोनों बढ़ गए। रिश्वत के खेल में हर साल नए-नए लोग जुड़ जाते, पटवारी, पुलिस, तहसीलदार, वन अधिकारी, पत्रकार, ब्लैकमेलर तरह-तरह के लोग। आरा मशीन मालिकों व पेड़ काटने वाले लोगों ने इन सब लोगों को मुंह बंद रखने की कीमतें तय कर रखी थी। फिर भी कोई न कोई विवाद दो चार लाख से कम में शांत नहीं हो पा रहा था। इस बीच एक डाली दर्शन सिंह के पांव पर क्या गिरी महिनों बिस्तर पर पड़ा रहा। जब पांवों पर खड़ा हुआ तो गांव वालों ने उसे नया नाम दे दिया 'दर्शन लंगड़ा'। जो पास में था सब दवाओं की भेंट चढ़ गया। ऊपर से लम्बरदार जी से दस हजार का कर्ज और लेना पड़ा। एक बार फिर से उसने कुल्हाड़ा उठा लिया, फिर से वही पक्षियों की चीख पुकार, अपने आलनों और बच्चों को बचाने के लिए चर्र चर्र, चूं चूं, कांव कांव, हुद हुद का शोर मचने लगा पर कुल्हाड़े नहीं रुके.....। कटाई के बाद में बचे हुए अवशेषों को रोते पक्षियों की मूक पीड़ा का ब्यान कौन ले। अनकही को वाणी कोई नहीं दे सकता।

इधर दर्शन की बड़ी बेटी ने एक मृत बच्चे को जन्म दिया था। जिससे पूरे घर पर महिनों तक कुल्हाड़े चलते रहे। मन थक भी गए थे और टूट भी। बेटी तो लगभग विक्षिप्त सी

हो गई थी। मौन था बस मौन, जिसकी राख के भीतर दबी आग अब भी कहीं सुलग रही थी। उस दिन दर्शन सिंह खूब रोया था लेकिन अब वह चुप है।

जनवरी के महीने की सर्दी में भी उसका माथा पसीने से तर है। पगड़ी को सिरहाने लगी खूंटी पर टांग कर वह उदास स्वर में ही बोल रहा है। आज वह अपने कर्मो की किताब खोले बैठा है, एक एक अक्षर को बांचता जा रहा है। उसी के अर्थों में उलझा पुलझा वह बोला नसीब कौर (पत्नी)- ''तू ये मत सोचना कि दिल और दिमाग सिर्फ बंदों (आदमियों) के पास ही होता है, ये जिनावर आदमी से ज्यादा स्याणै होते हैं। नसीब कौर ने ध्यान से देखा कि आज दर्शन के चेहरे पर कुछ अलग ही भाव है। उसने अपने जूड़े को ठीक किया, चुन्नी को सिर पर रखकर जब वह हल्का सा मुस्कुराई, तो दर्शन सिंह के चेहरे का रंग बदल गया। वह बोला- नसीबे!- 'मेरे पास पेड़ काटते समय के बहुत से अनुभव हैं, जिन्हें मैंने तुम्हें कभी नहीं बताया क्योंकि तुम हमेशा कहती थी कि पेड़ काटने का काम छोड़ दो। कोई दूसरा काम कर लो पर मैंने तुम्हारी बात नहीं मानी। आज मेरे सामने वो तस्वीरें नाच रही हैं, जो हर कटने वाले पेड़ के साथ मेरा पीछा कर रही है। वो तोतों की चीख पुकार, गिलहरियों का रुदन, चिड़ियों की चीं ची, मक्खियों की भिन्नाहट, कोवों की कांव-कांव और न जाने क्या-क्या मेरा पीछा कर रहा है। वे आखिरी सांस तक हमारे कुल्हाड़ों को रोकने का प्रयास करते। हम उतने ही उग्र होकर उन्हें पत्थर मारते, भगाते। यह जंग आदमी और जानवरों के बीच होने वाली जंग थी। जिसमें जीतना हमें था क्योंकि हम चाहते थे कि जीने का हक सिर्फ आदमी को ही मिले, अगर हमारे बाद किसी को थोड़ी बहुत जीने की आजादी है तो वह हमारी कृपा पर निर्भर है। 'आज मैं जानवारों की अदालत में खड़ा हूँ, गवाह भी मैं हूँ, अपराधी भी मैं ही हूँ और जज भी मैं ही हूँ लेकिन फैसला नहीं कर पा रहा हूँ कि ये काम अगर मैं नहीं करुंगा तो कोई दूसरा करेगा। पेड़ों को काटने व उजाड़ने वालों की कमी थोड़ी है यहां।' नसीब कौर ने कहा - 'दर्शन! कितना अच्छा होता अगर हम उन लोगों में होते जो पेड़ लगाते हैं, पेड़ों व जानवारों के लिए अपनी जान कुर्बान करते हैं। तुमसे छुपकर मैं घर की छत पर रोज दाने डालती थी 'पानी रखती थी कि कहीं तुम्हें होने वाले पाप से छुटकारा मिल जाए। हम गरीब हैं मगर अच्छा सोच तो सकते हैं। अच्छा कर भी सकते हैं। बड़े लोगों को बुरा करते देखकर हम भी बुरे बन जाएं ये तो ठीक बात नहीं, अपने कर्म ही तो साथ जाते है ना'। नसीब कौर की बातों ने एक रास्ता निकाल दिया। जीने का एक ही विकल्प नहीं होता, अगर आदमी चाहे तो बुराई अधिक नहीं टिक सकती। इस आधी सर्द रात में दर्शन सिंह दहाड़े मार-मार कर रोने लगा, सारा घर जाग गया। दर्शन सिंह अपनी बेटी से लिपट कर रो रहा था। बेटी तेरा आलना तो मैंने उजाड़ दिया। मेरे बुरे कर्मों का फल तू भी भोग रही है। मैं क्या करता मंदे की मार ने कहीं का ना छोड़ा। आज मेरे अंदर का वो आदमी जाग गया है जो जानवरों को भी जीने का हक देना चाहता है। मैं तेरे उस बच्चे को तो नहीं लौटा सकता पर पाप कर्म को तो छोड़ ही सकता हूँ। आंसू और मुस्कान से लबरेज बहुत से चेहरे घर के आंगन में खड़े थे और चांद की रोशनी में चमक रहे थे।

दिन निकला तो दर्शन सिंह के चेहरे पर ग्लानि, पश्चाताप, उदासी सब एक साथ झलकने लगे। उसने एक नजर कुल्हाड़ों, आरियों, रस्सों, हथोड़ों, छेनियों पर डाली मगर उन्हें छुआ तक नहीं, वह अनमना-सा होकर घर से बाहर निकल गया। दो तीन घंटे बाद जब वापिस लौटा तो उसके पास काम था, उत्साह था, उसके भीतर एक इंसान था। वह लम्बरदारों के ट्रैक्टर का ड्राइवर बन गया था। बेटा अस्सी हजार रुपयों में सालभर के लिए मजदूर लग गया। बेटी ने पानी का गिलास पकड़ाते हुए कहा ''पापा नरमे की चुगाई के समय मुझे बुला लेना, मैं भी कुछ सहारा लगा दूंगी। बाप ने बेटी को गले लगा लिया, तभी नीम के पेड़ पर बहुत से पक्षी चहचहा उठे, आज नए घोंसले बनाने का दिन जो आया था।

दोपहर ढल गई थी, लू के तेवर ढीले पड़ चुके थे, आकाश में कहीं-2 बादल घिरने लगे थे। दर्शन सिंह मन ही मन बुदबुदाया, फिर हल्की मुस्कान के साथ अपने आप से बोला- 'अपने गुजरे हुए दिनों को याद करते-करते मैं तो भूल ही गया था कि शहर तो मैं बेटियों की शादी के कार्ड छपवाने आया था, कहाँ ख्यालों में खोकर रह गया।' उसके पावों में जैसे बिजली दौड़ रही थी वह तेजी से पीपल की छाया से बाहर निकला और सड़क पर लगभग दौड़ने लगा एक क्षण के लिए उसे लगा जैसे वह माँ के आंचल से दूर निकल आया है। वही कोलतार की सड़कें फन फैलाए खड़ी है, गाड़ियों की चिल्ल पोंऽऽऽ भागमभाग, गंदगी के ढेर सब कुछ है परन्तु एक आदमी भी है जो अब इस भीड़ का हिस्सा नहीं रहा। वह अपनी गरीबी के साथ, ईमान के साथ पूरा आदमी है। उसका अधूरा पन बीत गया। अब वह प्रकृति के साथ जीएगा। उसने पीछे मुड़कर देखा, पीपल अब भी हंस रहा है वह सड़क के किनारे रुका, अपनी आंखें पौंछी और भीड़ में ही कहीं गुम हो गया।

-सुरेन्द्र सुन्दरम्
व्याख्याता (हिन्दी), श्रीगंगानगर
मो. 9414246712

पर्यावरण रक्षक व चिंतक गुरु जाम्भोजी की भगवत्ता

पर्यावरण संरक्षण मानव जीवन के लिये बहुत महत्पूर्ण है, इसका संरक्षण और रख रखाव करना अति आवश्यक है। सुखद और स्वच्छ पर्यावरण के बिना मानव जीवन असम्भव है और स्वांस लेना भी कठिन है। प्रत्येक मानव को पर्यावरण संरक्षण करने में और प्रदूषण दूर करने में अपना पूरा-पूरा सहयोग देना चाहिए वरना हमारा जीवन सुखद व सरल नहीं बन सकता।

पर्यावरण शब्द का जन्म परि+आवरण दो शब्दों के संगम से हुआ है। परि का अर्थ है चारों ओर अर्थात् सर्वत्र। आवरण से अभिप्राय है पर्दा, वातावरण एवं परिस्थितियाँ व प्रकृति, जिसके तत्व है - धरती, आकाश, तेज, जल तथा वायु हैं। हम चारों ओर से इन से घिरे हुये हैं। दोनो एक दूसरे से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते। इसलिये हम इन से दु:खी और परेशान भी होते हैं और हमें खुशियाँ भी मिलती हैं। यदि हम इनकी आकृति बिगाड़ते हैं या नष्ट करते हैं तो हमें हानियां और दु:ख ही मिलते हैं। अगर पर्यावरण अपने मूल रूप में रहे और हम इसके साथ छेड़-छाड़ न करें तो हमें लाभ और खुशियां मिलती हैं। पर्यावरण पर जब प्रदूषण की मार पड़ती है तब पर्यावरण की बुरी दशा हो जाती है। प्रदूषण कई तरह से प्रभावित करता है, जैसे वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, धरती प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण आदि। अधिकतर हम औद्योगिकीकरण द्वारा ही प्रभावित होते हैं। जब ऐसा होता है तब पर्यावरण प्रदूषण की विकट समस्या आन खड़ी होती है और यह विकराल रूप धारण कर लेती है।

समस्त विश्व में आजकल पर्यावरण प्रदूषण की धूम मची है। संसार में कोई भी स्थान ऐसा नहीं है जहाँ पर प्रदूषण का बोल बाला ना हो। आज के युग में पर्यावरण प्रदूषण को समाप्त करने तथा पर्यावरण को संतुलित करने के लिये अनेकों उपाय किये जा रहे हैं, हरे वृक्षों को ना काटने के उपदेश दिये जा रहे हैं और नये हरे वृक्षों को लगाया जा रहा है।

भारत सरकार तथा राज्य सरकारें पर्यावरण संरक्षण के लिये प्रोजेक्ट बना रहे हैं तथा उन पर लाखों रुपये खर्च किये जा रहे हैं। प्रदूषण दूर करने के लिये भरसक प्रयास किये जा रहे हैं। सारा संसार इससे परेशान है, परन्तु बिश्नोई समाज के प्रवर्तक परम पूज्य गुरु जाम्भोजी ने आज से लगभग 531वर्ष पूर्व पर्यावरण संरक्षण तथा प्रदूषण दूर करने पर और जीव रक्षा करने पर विशेष बल दिया था। हरे वृक्षों को ना काटने का उपदेश दिया था, आज के युग में भी उनके सिद्धान्त लागू होते हैं और कसौटी पर पूर्ण रूप से खरे उतरते हैं। इन नियमों का पालन बिश्नोइयों ने किया भी है, इस बात की साक्षी हमारी जाम्भाणी साखियां देती हैं। खेजड़ी वृक्ष रक्षार्थ सर्वप्रथम रैवासाड़ी गाँव कै चौराहे पर आकर दो महिलाओं ने सबके सामने आत्म बलिदान दिया था जिनकी साक्षी वील्हो जी अपनी साखी में देते हैं।

गुरु जाम्भोजी ने सबदवाणी द्वारा जीव रक्षा व समाज सुधार के लिये उपदेश दिये थे। उनके यौवनकाल में पीपासर ग्राम में बहुत जोर का सूखा पड़ा था, चारों ओर घास सूख गई थी। चारे की कमी के कारण जानवर जीव-जन्तु भूखे मरने लगे, इसलिए लोगों ने लाचार होकर पेड़ काटने शुरू कर दिये। बच्चे भी भूख के मारे तड़पने लगे। ऐसी दशा में ग्रामवासी अन्न, पानी व चारे की तलाश में ग्राम छोड़कर अन्य स्थानों पर चले गये। इस समय गुरु जाम्भोजी ने आत्मचिन्तन किया और इस नतीजे पर पहुँचे कि जिस समय धरती पर अधिक मात्रा में पेड़ लगे थे उस समय धरती की सहने की क्षमता अधिक थी। आत्मचिन्तन पर अधिक बल दिया और कहा- 'रुंख लिलो नहीं घावै' अर्थात् हरे वृक्ष नहीं काटने चाहिये। हरे वृक्षों में और जीवों की भाँति जीव निवास करते हैं, इसलिये वह फूलता-फलता है। काटने पर सूख जाता है, पानी देने पर फिर हरा हो जाता है। हरा पेड़ सबके लिये परोपकारी है। वह सब को छाया, फल, फूल लकड़ी आदि देता है। पेड़ मानव तथा जीव-जन्तुओं को प्राण वायु भी देता है और उनकी छोड़ी हुई श्वास को स्वयं पी लेता है। हरे वृक्ष वर्षा को भी अपनी ओर खींचते हैं। जहां पर हरे पेड़ अधिक होंगे वहां पर वर्षा अधिक होगी। जहां पर पेड़ों की कमी होगी वहां पर वर्षा कम होगी। सूखा व अकाल पड़ने की भी अधिक संभावना होगी। पेड़ों से जमीन का कटाव भी रुकता है। इसलिये पेड़ नहीं काटने चाहिये। गुरु जम्भेश्वर भगवान ने इन सब बातों को ध्यान में रखकर पेड़ रोपन व रक्षा पर विशेष बल दिया है।

इन सब विषयों पर चिन्तन व मंथन करने के बाद हम कह सकते हैं कि गुरु जाम्भोजी पर्यावरण रक्षक व

चिंतक हैं और गुरु जम्भेश्वर की भगवत्ता पूर्णरूप से विराजमान है।

बिश्नोई समाज विश्व इतिहास में वृक्षों की रक्षा करने में और जीवों की रक्षा करने के लिये प्रसिद्ध है।

जीव रक्षा व पर्यावरण है बिश्नोई समाज का विधान।
समस्त विश्व में इसी से होती है बिश्नोई की पहचान॥
हरे पेड़ कोई काटे तो हंसते-हंसते दे देते हैं अपनी जान।
जीव हत्या यदि कोई करे तो विबनोई हर लेते हैं उसके प्रान॥

प्राचीनकाल से ही पर्यावरण संरक्षण और जीव रक्षा के लिये बिश्नोई समाज अपने कर्त्तव्य का पालन करता चला आ रहा है और पूर्ण रूप से सतर्क, जागरूक एवं सक्षम है। पर्यावरण संरक्षण के लिये हम जगह-जगह पर अधिकाधिक पेड़ लगायें तथा उनकी रक्षा करें। इस बात का भी ध्यान रखें कि असामाजिक तत्व इन्हें किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचा सकें।

आओ आज हम प्रेम भाव व सद्भाव को अपनाकर देश और समाज की प्रगति के लिये कार्य करे तथा खेजड़ली बलिदान से प्रेरणा लेकर अपने आपको पर्यावरण संरक्षण के लिये पूर्ण रूप से समर्पित करें, जिससे आगामी पीढ़ी सुख व चैन से जी सकें और पुरानी पीढ़ी को दोष न दे सके। इसी में हमारा, समाज और देश का कल्याण और भलाई है।

संदर्भ-

जाम्भा पुराण पृष्ठ न-153

सबदवाणी दर्शन -पृष्ठ न 152 (पर्यावरण)

-ओ.पी. बिश्नोई 'सुधाकर'
प्रधान, अ.भा. जीव रक्षा बिश्नोई सभा, दिल्ली
गुरु जम्भेश्वर शोध संस्थान भवन,
सिविल लाइन्स, दिल्ली-110054
मो. 9891098790

भावी पीढ़ी को दें प्रदूषण मुक्त समाज का तोहफा

लगभग हर सप्ताह के बाद मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार प्रदूषण का स्तर सामान्य से अधिक बना रहेगा। मैं पूछता हूँ सामान्य था ही कब ? प्रदूषण हर व्यक्ति के जीवन में न चाहते हुए भी जबरन उसकी साँसों में घुलता जा रहा है। शहर इस कदर प्रदूषण की चपेट में है कि इसका असर इस हद तक बढ़ गया कि लोग घरों में या तो एयर प्यूरीफायर लगवा रहे हैं या तो कुछ समय के लिए पलायन कर रहे है। अब सबसे संजीदा और महत्वपूर्ण सवाल यह उठता है कि इसका जिम्मेदार है कौन ? और जिसका सीधा सा जवाब आता है कि और कौन 'आप और मैं', इस बात पर भोहें सिकोड़ने की कोई आवश्यकता नहीं। ऐसा कुछ तो है जिसे हम प्रतिपल नजर-अंदाज करते जा रहे है और जिसका खामियाजा हमें प्रदूषण की चोट सह कर चुकाना पड़ रहा है। कोई बहुत बड़ी चीज नहीं बस छोटी-छोटी चीजों पर लगाम कस कर इस समस्या से निजात पाया जा सकता है। अब कई विद्वान बंधु कहते हैं कि मेरे और आपके चाहने से क्या होगा या फिर किसी एक के बदलने से क्या होगा। अरे मेरे भैया एक से ही होगा, आप शुरुआत तो करो इस समस्या से निजात पाने के लिए, हमें भेड़चाल की रणनीति अपनानी होगी। जब कोई एक करेगा तो देखा देखी दूसरा भी उसके साथ हो लेगा।

वो मंजर अभी तक मेरी आँखों के सामने अब तक नाच रहा है, बात यह थी कि एक रोज सुबह जब मैं किसी काम से जा रहा था तो सड़क पर करीब पाँच-छः साल का एक बच्चा अपनी माँ के साथ टहल रहा था और उसने अपने मुंह पर प्रदूषण मास्क लगा रखा था और बार-बार मास्क को खींचते हुए अपनी माँ से लड़खड़ाती जुबाँ में एक ही सवाल किए जा रहा था कि 'मम्मी ये क्यों लगा दिया आपने मुझे, मुझे नहीं लगाना'। आखिर उसकी माँ भी क्या जवाब देती बस चुप करा दिया उसे।

मुझे समझ नहीं आता की आखिर ये क्या होता जा रहा है जो उम्र खुले आसमान में आजाद पंछी सरीखे उड़ने की है उसमें घुट-घुट जीने को मजबूर है, ऐसे ही तमाम बच्चे और युवा। ये हम कैसा समाज तैयार कर रहे है अपनी भावी पीढ़ी के लिए जो खुल कर सांस भी नहीं ले पा रही ? अब ये कहना कतई कटाक्ष नहीं होगा कि अब तो हमारे समाज को दो ही प्राणी बचा सकते है एक तो हम खुद और दूसरी गौ माता क्योंकि हमारे बीच वही एक ऐसी अनूठी जीव है जो सांस के माध्यम से ऑक्सीजन ही लेती हैं और ऑक्सीजन ही छोड़ती है।

अंत की ओर ले जाते हुए एक बात जरूर चाहूंगा कि पिछले कई वर्षों में जो हुआ सो हुआ पर अब इस वर्ष में हम सब दृढ़ निश्चय के साथ एक प्रण लें कि हम अपनी भावी पीढ़ी को आने वाले वर्षों में एक प्रदूषण मुक्त समाज का तोहफा अवश्य देंगे।

-दीपक पाल, छात्र
आई.पी. विश्वविद्यालय, दिल्ली

वृक्ष लगाओ और पर्यावरण बचाओ

भारतीय संस्कृति वन प्रधान है। धर्म और संस्कृति की ऋचाओं का शोध और बोध का कार्य वनों में ही हुआ है। भारत ऋषि व मुनियों की तपोभूमि है। परमात्मा के शाश्वत् दर्शन करने वाले ऋषि महात्माओं की कर्मभूमि भी यही वन रहे हैं। वन हमारी संस्कृति के अग्रदूत हैं। वन सम्पदा की सुरक्षा और संरक्षण का मोह हमारे मन में अतीत काल से रहा है। समाज में रहने वाला मनुष्य सामाजिक प्राणी है। वह पर्यावरण में ही जन्म लेता है और उसी में ही मृत्यु को प्राप्त करता है। मानव के हाथों में कुछ नहीं है। यह जन्म-मरण तो उस परमात्मा की देन है जिसने इस सृष्टि का निर्माण किया है।

पर्यावरण क्या है? परि+आवरण। पर्यावरण हमारे चारों ओर का वह वातावरण है जिसमें हम जीवित रहते हैं। इसमें भूमि, जल, वायु, प्रकाश और खाने योग्य पदार्थ शामिल हैं। पर्यावरण प्रदूषण जनसंख्या की वृद्धि व वृक्षों की अंधाधुंध कटाई से बढ़ता ही जा रहा है। इस समय पर्यावरण प्रदूषण मानव जीवन के लिए बड़ा आतंकवादी (खतरा) बन गया है। जिससे बच पाना असंभव है। लेकिन फिर भी हम सबको मिलकर पर्यावरण प्रदूषण के लिए एकजुट होकर प्रयास करना होगा, तभी मानव जाति का भावी जीवन सुखमय व आनंदमयी बन सकेगा।

गुरु जम्भेश्वर भगवान ने वि.सं. 1542 में कलश स्थापना कर बिश्नोई पंथ का प्रवर्तन किया था। सभी इच्छुक जन-समुदाय को पाहल पिलाकर बिश्नोई पंथ में शामिल किया। गुरु जी ने अपने जीवन काल में मुक्ति पाने वाली वाणी का कथन किया। गुरु जी ने 120 सबदों व 29 धर्म नियमों का निर्माण किया। जिसमें 18वें नियम में जीव दया पालणी व 19वें नियम में हरे वृक्षों की रक्षा करने का सन्देश दिया। बस यहीं से पर्यावरण चिंतन की शुरूआत होती है। गुरु जी ने कहा कि पेड़ों में भी जीवन है। लेकिन इस बात को कोई समझना नहीं चाहता और हरे-भरे वृक्षों को काट दिया जाता है।

हम छोटे बच्चों को समझा सकते हैं, लेकिन क्या बड़ों को नहीं समझाया जा सकता कि हरे वृक्षों को नहीं काटना चाहिए। इन्हीं वृक्षों से हमें ऑक्सीजन, दवाइयां, फल-फूल, लकड़ियां, पत्ते, जड़ी-बूटियां इत्यादि मिलते हैं। इन्हीं पेड़ों से हमें तपती धूप में ठण्डी छांव मिलती है। इन्हीं पेड़-पौधों से हमारा जीवन है। ये सभी पेड़-पौधे काट दिए जाएंगे तो हम सांस कैसे ले पाएंगे। हम जीवित कैसे रह पाएंगे? ये जो मानव जीवन है ये तो नष्ट ही हो जाएगा। इस धरा पर क्या रह जाएगा। इसलिए हमें पेड़ों को नहीं काटना चाहिए। पेड़ों की रक्षा करनी चाहिए तभी तो ये मानव जाति जीवित रह पाएगी तभी तो ये संसार चलता रहेगा। इसलिए कहते हैं कि -

काट-काट कर पेड़ों को, खाली कर देना जंगल को।
यह तो अच्छी बात नहीं, यह तो अच्छी बात नहीं॥
पौधे लगा देना उपवन में, पेड़ लगा देना घर-घर में।
यह तो अच्छी बात रही, (हां) यह तो अच्छी बात रही॥

बिश्नोई पंथ में कालांतर में एक ऐतिहासिक घटना घटी जिसमें 363 अनुयायियों ने पर्यावरण को बचाने के लिए हंसते-हंसते अपने प्राणों की आहुति दी। जो घटना समस्त विश्व में एकमात्र अद्वितीय घटना है। जो आज भी इतिहास के पन्नों पर स्वर्णिम अक्षरों में लिखित हैं। यह घटना सन् 1730 में जोधपुर जिले के खेजड़ली गांव में महाराजा अभय सिंह के शासनकाल में घटित हुई। राजा के महल निर्माण में लकड़ी की आवश्यकता हुई, तब राजा के भंडारी गिरधरदास ने गांव खेजड़ली में वृक्षों को काटने का आदेश दिया और राजा के कर्मचारी खेजड़ी काटने

पहुंचे बिश्नोइयों के विरोध करने पर गिरधरदास नहीं माना और पेड़ काटना जारी रखा। तभी अमृता देवी ने पेड़ों से चिपक कर कहा कि यह पेड़ तो हमारे भाई हैं। हम इन्हें नहीं काटने देंगे। अमृता देवी ने कहा- 'सिर सांटे रूंख रहे तो भी सस्तो जाण' कि एक पेड़ को बचाने के लिए अगर सिर भी कटवा लिया जाए तो वह भी सस्ता है। तभी राजा के सैनिकों ने पेड़ों पर कुल्हाड़ियां चलाई। तब अमृता देवी के समेत 363 बच्चे, बूढ़े, महिलाएं गुरु जम्भेश्वर की जय बोलते हुए पेड़ों से चिपक गए और उनकी गर्दन धड़ से अलग होती गई। अमृता देवी के पति उनकी तीन बेटियां तथा 83 गांवों के 363 बिश्नोइयों (69 महिलाएं और 294 पुरुषों) ने पेड़ों की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बलि दी। बिश्नोइयों के खून से धरती माता लथपथ हो गई थी। इस सारी घटना को सुनते ही राजा ने हुक्म दिया कि पेड़ों की कटाई को रोक दिया जाए और भविष्य में जोधपुर में हरे वृक्षों की कटाई पर पाबंदी लगा दी गई। यह घटना आज भी याद की जाती है। प्रतिवर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में मनाया जाता है। खेजड़ली बलिदान से प्रेरणा पाकर 1982 ई. में कर्नाटक में चिपको आन्दोलन द्वारा वृक्षों की कटाई को रोका गया। भारत सरकार ने 5 जून, 1988 को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर खेजड़ली बलिदान के महत्व को स्वीकार किया है।

एक बार एक पुजारी शेर के चंगुल में फंस गया था। तब पुजारी ने शेर से बचने के लिए पेड़ राजा से कहा कि पेड़ राजा मुझे इस शेर से बचाओ। तभी पेड़ राजा ने गुस्से में कहा कि मैं तुम्हें क्यों बचाऊँ किसलिए बचाऊँ। जब मैं तुम्हें इतने फल, लकड़ियां, फूल, छांव सब कुछ देता हूं लेकिन फिर भी तुम मुझे काट डालते हो। मेरे इस प्रश्न का उत्तर है तुम्हारे पास। नहीं, कोई उत्तर नहीं है तुम्हारे पास। तुम्हें आने वाले भविष्य का कोई पता नहीं है। इसलिए शेर तुम्हें खा जाए, मैं तुम्हारी कोई सहायता नहीं करूंगा। मैं भी बोलता रहता हूँ, चिल्लाता रहता हूँ कि मुझे मत काटो, मुझे मत काटो!

आओ! आज हम विश्व पर्यावरण दिवस पर गुरु जाम्भोजी द्वारा बताए गए 'जीव दया पालणी' 'रूंख लीलो न घावै' के नियम पर चलने का संकल्प लें ताकि पर्यावरण की समस्या स्वत: ही हल हो जाए और पर्यावरण का संतुलन बना रहे।

इसलिए सभी को अपने जीवन में एक पेड़ अवश्य लगाना चाहिए। तभी तो हमारा जीवन सफल हो पाएगा। पर्यावरण बचेगा तभी तो हम बच पाएंगे।

"जीव दया रो पाठ पढ़ावे रक्षा करो पेड़ां री,
हवा मिलसी ताती थाने रहसी शान खेड़ां री"

पेड़ लगाओ विश्व में बिश्नोई पंथ की अलग पहचान बनाओ।

पेड़ लगाओ, पर्यावरण बचाओ।
वृक्ष लगाओ, भारत बचाओ।

-श्रीमती माया एवं डॉ. कृष्ण कुमार जौहर,
गांव मंगाली सुरतिया, हिसार

मैं भगवान को प्रकृति में, जानवरों में, पक्षियों में और पर्यावरण में खोज सकता हूँ।

-पैट बकले

--00--

यह कोशिश करें कि जब आप इस पृथ्वी पर आये थे, यहां से जाने के बाद इसको एक बेहतर स्थान के रूप में छोड़कर जाएं।

-सिडनी शेल्डन

प्राकृतिक संस्कृति वाली जीवन पद्धति के महासूत्र हैं बिश्नोई पंथ के 29 नियम

जाम्भोजी की कृपा बिनु, मोक्ष मिले ना कोय।
उन्नतीस नियम धारण करे, नाम बिश्नोई होय॥

सृष्टि के सृजनकाल से ही प्रकृति ने अपने अनुरूप जीवन पद्धति को समय, परिस्थिति तथा परिवर्तनों के आधार पर विकसित किया, लेकिन जैसे-जैसे प्राकृतिक संरचना में मानवीय हस्तक्षेप बढ़ता गया वैसे-वैसे पर्यावरणीय परिवर्तन होते गये। पर्यावरणीय समस्याओं का निरन्तर फैलाव पारिस्थितिकी तन्त्र को तहस-नहस करने लगा, जैव विविधता असंतुलित होने लगी तथा जलवायु परिवर्तन का चुनौतीपूर्ण दुष्प्रभाव दिखाई देने लगा, तब सरकारें सोती रही और एक दिव्य अवतार के रूप में गुरु जम्भेश्वर भगवान ने धरती पर अवतरित होकर प्राकृतिक संस्कृति वाली जीवन पद्धति को संचालित करने हेतु उन्नतीस नियमों वाली आचार संहिता बनायी। उस समय प्राकृतिक संरचना में मानवीय हस्तक्षेप न के बराबर था। तब अपनी दार्शनिक दूरदर्शिता के द्वारा गुरु जम्भेश्वर महाराज ने प्रकृति हितैषी संस्कृति वाली जीवन पद्धति को उन्नतीस नियमों में संजोकर आचार संहिता के रूप में स्थापित किया जो आज भी अक्षरत: प्रासंगिक है।

वैश्विक समुदाय में तो पर्यावरण की चिन्ता वर्ष 1972 ई. में हुई जब स्वीडन की राजधानी स्टाकहॉम में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित हुआ तथा आयोजन वाले दिन यानि पाँच जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाये जाने की मान्यता प्रदान की। मात्र 45 वर्ष में दुनिया के प्रदूषण में बेहताशा वृद्धि हुई है जिसके दुष्परिणामों की आशंका 430 वर्ष पूर्व गुरु जम्भेश्वर भगवान को हो गयी थी और भविष्य की चिन्ता करते हुए एक ऐसी जीवन पद्धति निर्मित की जो आचार संहिता के रूप में पर्यावरण हितैषी हैं। हमारे देश में वर्ष 1927 ई. में भारतीय वन अधिनियम बनाया गया, जब लगा कि वन क्षेत्र कम हो रहा है और पर्यावरणीय संतुलन बिगड़ रहा है। लेकिन वर्ष 1730 ई. में मरूस्थल के जोधपुर के राजा द्वारा पेड़ कटान कराये जाने के विरुद्ध धरती का पहला 'चिपको आंदोलन' बिश्नोई पंथ के अनुयायियों द्वारा गुरु जाम्भोजी की वाणी 'सर साटे रूंख बचे, तो भी सस्तो जान' का अनुपालन करते हुए 363 बिश्नोइयों ने अपने सर कटवाकर पेड़ों की रक्षा की। खेजड़ली बलिदान की वृक्ष रक्षार्थ गौरवशाली गाथा विश्व की अद्वितीय प्रेरणादायी घटना है जो उदाहरण पेश करती है कि गुरु जाम्भोजी का विधान पेड़ बचाने के लिए कानून से भी बड़ा होकर वेदवाक्य की तरह है जो पेड़ बचाने के लिए जान न्यौछावर करने में कोई संकोच न हो।

जन्म से मृत्यु तक, जागने से सोने तक, परिवार में और समाज में, प्रकृति के साथ और जीव मंडल में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना के साथ कैसे समायोजित होना है। इसके लिए सर्वग्राह्य और व्यवहारिकता वाले नियमों के माध्यम से संचालित होने वाली पद्धति ही सुदृढ़ रूप से बनानी होती है जिसका प्रभाव हमेशा कल्याणकारी हो। ऐसी ही आचार संहिता के रूप में गुरु जम्भेश्वर भगवान ने हमें उन्नतीस नियमावली देकर सम्पूर्णता प्रदान की है। जीवों के प्रति दया का भाव रखना और उसे अपनी जीवन पद्धति का हिस्सा बना लेना, इसकी सीख बिश्नोई पंथ में ही मिलती है, व्यसनों से दूर रहना हर कोई चाहता है और हर धर्म गुरु व सन्त ने शराब, भांग, अफीम, मांसाहार, झूठ, निन्दा, कपट, ईर्ष्या इत्यादि से दूर रहने का पाठ पढ़ाया है लेकिन वो सब उपदेश देने तक ही सीमित रहा। गुरु जम्भेश्वर भगवान ने सभी सामाजिक बुराइयों से दूर रहने की सुनिश्चितता उन्नतीस नियमों वाली जीवन पद्धति अपनाकर प्रमाणिकता सिद्ध की है।

गुरु जम्भेश्वर भगवान की उन्नतीस नियमावली की सार्थकता पर्यावरणीय कानून के रूप में एक व्यवहारिक दस्तावेज है। हर नियम पर्यावरण के किसी घटक की रक्षा करता है वो भी बिना किसी दण्ड और सजा के प्रावधान किए बिना। प्रत्येक नियम अधिनियम के रूप में कार्य करता है, चाहे वृक्ष संरक्षण का मामला हो, चाहे जीव सुरक्षा, मातृशक्ति के जननी हित की चिन्ता हो या बैल बधियाकरण पर रोक लगवाकर सुरक्षा प्रतिबन्धित कराना। उन्नतीस नियमों को मानने वाला पर्यावरण का अपराध नहीं कर सकता क्योंकि वह व्यवहारिकता में प्रकृति हितैषी जीवन पद्धति का अंग बन जाता है और ऐसा अभिन्न अंग जो अद्वितीय उदाहरण बन सामाजिक सरोकारों का प्रेरणा स्रोत बन जाता है। इस तथ्य को वैसे तो प्रमाणित करने की आवश्यकता नहीं है फिर भी जहां बिश्नोई समाज की आबादी रहती है वहां का पर्यावरण शुद्ध होता है। यह गुरु जाम्भोजी की उन्नतीस नियमावली को पर्यावरण रक्षक के रूप में सिद्ध करता है।

दुनिया पाँच जून को, मनाये पर्यावरण दिन।
बिश्नोई इसे मनाते, हर रोज गिन गिन॥

- ग्रीन मैन विजयपाल बघेल
एच. 206, गोविन्दपुरम, गाजियाबाद (यू.पी.)
मो. 9312644122, 9412860010

पर्यावरण जागरूकता में संचार साधनों की भूमिका

पर्यावरण?

पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 में पर्यावरण को परिभाषित करते हुए कहा गया है- पर्यावरण में एक ओर पानी, वायु तथा भूमि और उनके मध्य अंत:सम्बन्ध विद्यमान है, और दूसरी ओर मानवीय प्राणी, अन्य जीवित प्राणी, पौधे, सूक्ष्म जीवाणु और संपत्ति सम्मिलित है। अर्थात् पर्यावरण से अभिप्राय हमारे चारों ओर का विद्यमान वातावरण है जिनमें जैविक और अजैविक सभी घटक शामिल हैं तथा जो हमारी दैनिक दिनचर्याओं को पूरा करने और उन्हें सकारात्मक और नकारात्मक रूप में प्रभावित करने की क्षमता रखता है। यह वातावरण वायुमंडल, जलमंडल और स्थलमंडल के रूप में उपस्थित है जिनके दरमियान मानवीय जीवन, वनस्पति जगत तथा प्राणी जीवन की विभिन्न क्रियाएं उत्पन्न, विकसित और निष्पन्न होती है। उपर्युक्त घटकों की सामान्य और निर्धारित प्रक्रियाओं में अगर किसी तरह की बाधा अथवा विपन्नता आती है तो इसका अर्थ है कि अमुक स्तर पर व्यवधान पैदा हुआ है। वर्तमान भौतिक जगत में तो ऐसे व्यवधानों की गणना करना ही मुश्किल साबित हो रहा है। पर्यावरण की जैविक एवं अजैविक क्रियाओं में आ रही रूकावटों तथा परिवर्तन को ही पर्यावरण विकृति या प्रदूषण की संज्ञा दी जा रही है।

जाहिर तौर पर पर्यावरण में विकृति असाधारण रूप धारण कर चुकी है। इसका प्रत्येक अंग बुरी तरह से दूषित और प्रदूषित हो चुका है। मानव एवं प्राणी जगत को जीवन प्रदान करने की पर्यावरणीय क्षमता निचले स्तर पर जा चुकी है। ऐसे में समय रहते सचेत नहीं हुए तो धरती पर जीवन का विनाश निश्चित है। फ्रांस के राष्ट्रपति का यह कथन-हमारा अब एक ही उद्देश्य है- 'इस पृथ्वी को अगली पीढ़ी के लिए सुरक्षित करके सौंपना'। लेकिन ऐसा तभी संभव हो सकेगा जब हम इसे वर्तमान में सुरक्षित एवं संरक्षित रख पाएंगे। इसके लिए आम जनमानस की भागीदारी तथा उसके जागरूकता के स्तर में वृद्धि करनी होगी और ऐसा संचार माध्यमों के द्वारा ही संभव है।

संचार माध्यम : संचार के रूपों में अंत:व्यक्तिक संचार से लेकर जनसंचार तक को शामिल किया गया है। जो अलग- अलग शैली और विविध रूपों में मानव जीवन के आचरण को प्रभावित करते हैं। अत: स्पष्ट है कि पर्यावरण जागरूकता में संचार के विभिन्न स्वरूपों के प्रभावी एवं व्यवहारिक तरीकों का प्रयोग सहायक साबित हो सकता है। अनिल कुमार ने अपने अध्ययन (कुमार 2015: 184-185) में लिखा है कि संचार माध्यमों के कारण ग्रामीण जीवन के सामाजिक-सांस्कृतिक पहलू, सामाजिक संस्थाओं-परिवार, विवाह, सामाजिक संस्तरण, शिक्षा, जाति आदि के साथ ही ग्रामीण अभिवृत्तियों-सामूहिकता, पारस्परिक सहयोग, पारस्परिक अवलंबन, मितव्ययिता, संचय, धार्मिकता और सामाजिक नियंत्रण आदि में निरंतरता की अपेक्षा परिवर्तन अधिक देखा जा रहा है। भारत में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता की चर्चा वेद, पुराण, रामायण, महाभारत काल से ही देखी जा सकती है। कौटिल्य ने भी अपने अर्थशास्त्र में पर्यावरण की महत्ता की ओर संकेत किया है।

जनमाध्यमों की भूमिका

जनमाध्यमों से अभिप्राय उन माध्यमों से है जो एक साथ एक ही समय में विविध और विस्तृत क्षेत्र में फैले जनसमुदाय तक जानकारी एवं सूचना का संप्रेषण करने में सक्षम हैं। इन माध्यमों में खास तौर पर प्रिंट मीडिया जिसमें समाचार पत्र व पत्रिका, इलेक्ट्रोनिक मीडिया जिसमें रेडियो, टीवी एवं सिनेमा तथा डिजीटल मीडिया जिसमें इंटरनेट एवं न्यू मीडिया को वर्गीकृत किया जाता है। ये माध्यम सूचना एवं जानकारी देने के साथ-साथ जनसमुदाय को शिक्षित एवं उनका मनोरंजन भी करते हैं। पर्यावरण जागरूकता में ये माध्यम किस तरह से अपनी भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं इसको जानने के लिए इनके द्वारा अब तक चलाए गए कार्यक्रमों का अवलोकन करते हैं-

प्रिंट मीडिया : हालांकि वर्तमान दौर में डिजीटल मीडिया का प्रसार और पहुंच व्यापक हो चुकी है फिर भी समाचार पत्र और पत्रिकाओं की उपयोगिता और पाठक संख्या में किसी प्रकार की कमी नहीं आई है। हाल ही में ऑडिट ब्यूरो ऑफ सर्कुलेशन के द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार पिछले एक दशक में अखबार के पाठकों की संख्या में 3.28 करोड़ की अप्रत्याशित वृद्धि दर्ज की गई है। वर्तमान में भारत में प्रमुख 19 भाषाओं के अतिरिक्त 100 से अधिक भाषाओं और स्थानीय बोलियों में समाचार पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही हैं। अत: स्पष्ट है कि प्रिंट मीडिया पर्यावरण संरक्षण में अहम भूमिका निभा सकता है तथा

निभा भी रहा है। उतर भारत के बड़े अखबार की पहचान रखने वाले दैनिक भास्कर ने इस कड़ी में उल्लेखनीय कार्य किया है। अखबार ने सामाजिक जिम्मेवारी के तहत 'जल बचाओ अभियान' चलाया था, जिसके तहत स्कूलों, कॉलेजों और विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में रैलियों तथा प्रतियोगिताओं का आयोजन करवाना, पर्यावरण तथा जल संरक्षण से जुड़ी खबरों को प्रमुखता से प्रकाशित करना एवं पाठकों से सूखी होली खेलने का संकल्प करवाना आदि इस अभियान के उद्देश्य रहे। इसके अलावा प्रतिष्ठित समाचार पत्र दैनिक जागरण भी समय-समय पर सामाजिक सरोकारों से जुड़े मुद्दे जिनमें विशेष रूप से पर्यावरण को लेकर 'मुद्दा' शीर्षक से विशेष अंक निकालता है तथा वृक्षारोपण एवं जलसंरक्षण से जुड़ी सफल कहानियों को एंकर स्टोरी के रूप में प्रकाशित किया है। सेंटर फॉर इनवायरमेंट एंड साईंस की पत्रिका डाउन टू अर्थ, विज्ञान प्रगति, परिबोध जैसी राष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाओं के अलावा राज्य व स्थानीय स्तर पर प्रकाशित पत्रिकाओं में पर्यावरण से जुड़े मुद्दों पर शोधपरक आलेख तथा जागरूकता अभियानों की खबरों को प्रमुखता से प्रकाशित किया जाता है।

इलेक्ट्रोनिक मीडिया : देश की 93 प्रतिशत आबादी तक पहुंच रखने वाले रेडियो तथा 90 प्रतिशत से ज्यादा घरों में उपस्थिति दर्ज कराने वाला टेलिविजन पर्यावरण जागरूकता के प्रसार में उल्लेखनीय भूमिका निभा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के रेडियो पर प्रसारित कार्यक्रम 'मन की बात' के द्वारा स्वच्छ भारत अभियान को लांच किया गया तथा कुछ ही समय में हर व्यक्ति की जुबान पर इस कार्यक्रम की चर्चा होना यह जाहिर करता है कि इस माध्यम की पहुंच कितनी व्यापक है। पर्यावरण संरक्षण संबंधी राष्ट्रीय नीतियों एवं कार्यक्रमों, प्रदूषण निवारण के उपायों, कृषि और औद्योगिक विकास, सतत् विकास और पर्यावरणीय जागरूकता आदि से संबंधित संदेशों को जन-जन तक पहुंचाने में रेडियो की सशक्त भूमिका है। हाल ही में दिल्ली में वन एवं पर्यावरण मंत्रालय के सौजन्य से आकाशवाणी एफएम ने किनारे-किनारे तथा 'आओ दिल्ली संवारे' पर्यावरण संरक्षण एवं जागरूकता अभियानों का आयोजन किया था, जो काफी सफल रहा था।

इसी प्रकार टेलिविजन के विभिन्न चौनलों जिनमें प्रमुखत: दूरदर्शन पर पर्यावरण जागरूकता से जुड़े सरकारी कार्यक्रमों, परियोजनाओं, पर्यावरण क्षेत्र में काम कर रही गैर-सरकारी संस्थाओं की उपलब्धियों, डाक्यूमेंट्री तथा शार्ट फिल्मों के प्रसारण के माध्यम से इस दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया जा रहा है। दूरदर्शन पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के सहयोग से भी समय-समय पर पर्यावरण शिक्षा के लिए 'विरासत, 'क्रेस टू सेव प्लांट', 'टेराक्विज' तथा 'अर्थ' जैसे कार्यक्रमों का प्रसारण करता रहा है।

जहां तक निजी चैनलों का संबंध है हाल ही में एनडीटीवी ने एनडीटीवी-टोयोटो ग्रीन अभियान चलाया जिसमें लगातार 24 घंटों तक प्रसारित कार्यक्रमों में नामी-गिरामी हस्तियों ने हिस्सा लिया तथा पर्यावरण से जुड़े मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की। इसी कड़ी में हाल ही में गोदरेज समूह तथा एनडीटीवी ने संयुक्त रूप से 'ग्रीन चैंपियन' शीर्ष से एक रिएलिटी शो शुरू किया था। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से प्रकृति तथा वनस्पति संरक्षण के विभिन्न विषयों पर फोकस किया गया तथा यह भी जताने की कोशिश की गई। अब पृथ्वी पर भविष्य में जीवन का अस्तित्व सिर्फ युवाओं के हाथों में है। जी-मीडिया कारपोरेशन लिमिटेड ने भी 'माई अर्थ, माई डयूटी' के नाम से पर्यावरण जागरूकता अभियान चलाया था। जी-मीडिया अब तक ऐसे चार अभियानों का आयोजन कर चुका है। इस अभियान के तहत जनसमुदाय को पर्यावरण संरक्षण तथा पृथ्वी को विनाश से बचाने के लिए आगे आने के लिए प्रोत्साहित किया गया। विगत में अंतर्राष्ट्रीय चैनल 'बीबीसी' ने भी अपने कार्यक्रम 'अर्थ रिपोर्ट' में पर्यावरण तथा इससे जुड़े विभिन्न विषयों पर विस्तार से जानकारी प्रसारित की थी।

डिजीटल मीडिया (इंटरनेट एवं सोशल मीडिया) : प्रदूषण का शिकार हो रहे पर्यावरण के विभिन्न घटकों को बचाने में प्रिंट तथा इलेक्ट्रोनिक मीडिया के अलावा डिजीटल मीडिया भी महती भूमिका निभा रहा है। इंटरनेट पर अनेक सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाओं के पोर्टल, सोशल मीडिया जिसमें विशेष रूप से फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, व्हाटसअप आदि के द्वारा पर्यावरण से जुड़े विषयों, समस्याओं, अभियानों तथा उनके समाधानों पर जबरदस्त एवं प्रभावी तरीके से सूचनाओं का आदान-प्रदान हो रहा है। लोग अपने आस-पास प्रदूषण के कारकों का विडियो बनाकर भी अपलोड कर रहे ताकि अन्य लोग इस तरह की गतिविधियों से दूर रहें। इंटरनेट पर विद्यमान वेबसाइट जैसे http://indiawaterportal.org पर पानी बचाने एवं जल संरक्षण के लिए चलाए जा रहे विभिन्न अभियानों बारे विस्तार से जानकारी उपलब्ध है। इसके अलावा पानी बचाने से जुड़े कई ताजा शोध, देश भर के

अखबारों की जल संरक्षण से जुड़ी खबरों की क्लिपिंग भी इस पर मौजूद है। ग्लोबल वार्मिंग के खतरों से आगाह करने के लिए जानकारी परक शोध देखने के लिए आप www.ffifts.org पर लॉग ऑन कर सकते हैं। यह साइट दुनिया की कई दर्जन भाषाओं में जानकारी उपलब्ध कराती है।

परंपरागत माध्यम : परंपरागत माध्यम अथवा लोक माध्यमों की ग्रामीण तथा सुदूर इलाकों में रहने वाले आदिवासियों के बीच गहरी पैठ है। इनके माध्यम से न केवल ग्रामीण जन-जीवन की सामाजिक-सांस्कृतिक अभिव्यक्ति होती है बल्कि ये माध्यम पर्यावरण संरक्षण और पर्यावरणीय चेतना के प्रसार में भी सहायक साबित हो रहे हैं। विभिन्न गैर-सरकारी संस्थाओं तथा सरकारी विभागों द्वारा प्रभावी पर्यावरण जागरूकता के लिए संबंधित क्षेत्र के लोक कलाकारों से अनुबंध कर लोकगीतों, नुक्कड़ नाटकों, प्रदर्शनी, लोकनृत्य, नौटंकी, कठपुतली आदि लोक माध्यम के साधनों का प्रयोग पर्यावरण संदेशों को प्रसारित करने में किया जा रहा है। ये माध्यम श्रोताओं से सीधा संपर्क बनाते हैं। अत: इनके माध्यम से पर्यावरणीय सूचना और संदेश प्रभावी ढंग से संप्रेषित हो जाते हैं।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि पर्यावरणीय संदेशों एवं जागरूकता कार्यक्रमों को जन-जन तक पहुंचाने में संचार साधनों की अत्यधिक भूमिका है। इनके अभाव में ऐसे किसी भी कार्यक्रम की सफलता संदिग्ध है। दुनिया आज पूरी तरह से ग्लोबल गांव में तब्दील हो चुकी है। अमरीका अथवा देश के किसी दूर-दराज इलाके में बैठा व्यक्ति महज एक कॉल या सोशल मीडिया की एक क्लिक जितना ही दूर है। जाहिर है ऐसे में पारंपरिक व आधुनिक मीडिया के संतुलित समावेश से ही पर्यावरण संरक्षण जैसे अत्यधिक गंभीर विषय के वांछित परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं।

-मनबीर, शोधार्थी
गुरु जंभेश्वर विश्वविद्यालय, हिसार
मो.: 9416128792

पेड़ (गज़ल)

पेड़ों से कौन है बढ़कर, जिनकी बातों में वजन हो जाए।
करे कुर्बान खुद जब वो, देख सब नमन हो जाए॥
दवा हर मर्ज की इनमें, पहचानो उन औषधियों को।
करे उपभोग जो इनका, रोग हर गमन हो जाए॥
पाया था ज्ञान बुद्ध ने भी, पेड़ों की आत्मा में रमकर।
पेड़ सब बोधी हो गये, धम्म भी गगन हो जाए॥
करते हैं जीव सभी आराम, इन्हीं पेड़ों की छाया में।
होता है प्राण वायु का संचरण, सभी दु:ख दमन हो जाए॥
कहा था जाम्भोजी ने भी, काटो न हरे वृक्ष तुम।
पेड़ों की महिमा तुम जानो, तपन हर शमन हो जाए॥
पेड़ों पर बलिदान का रूतबा, जानो तुम बिश्नोइयों से।
जहां में पेड़ बच जाए, जिन्दगी चमन हो जाए॥
काटो न तरवर को तुम कभी, मजहब सब यही सिखाते हैं।
मानो सब बातें ग्रंथों की, विश्व में अमन हो जाए॥

-डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई
बीकानेर (राज.)
मो.: 9460002309

धरती दुखियारी

धरती दुखियारी.....
आ तौ खुद ही अब शरमाये, इण पर प्रेम रमण ने आवै,
इका पेड़ा न कटवावे, धरती दुखियारी रे.... ।

1. धरती जन्म दियो पेड़ा न, दुष्ट जन कटवावे है ब्याने,
   ट्रक भर बेच दिया है छगने, जेब भरी दुष्टा री। धरती....
2. बिरखा बिन पेड़ नी होवे, धरती जासी मरती रोवे,
   इमें उपज कठा सूं हौवे।
3. धरती भूखी जासी बोले, इंकी दु:खी आत्मा डोले,
   अब थे क्यों बैठ्या हो ओले, करो सब तैयारी। धरती.....
4. मुझको कुछ नहीं आता-जाता, लेकिन याद 'अमृता माता'
   और है धरती सबकी माता। धरती दुखियारी
5. अमृता देवी शीश कटायौ, पर पेड़ा न है बचायो,
   बांके बलिदान सूं गावा। धरती दुखियारी
6. अब थे उजड़ा बाग लगाओ, इगे फेर खुशबू लाओ,
   निरखा भर चौमासो पावो, बणा दो फलवारी। धरती....
7. आतो खुद ही शरमावे, इण पर प्रेम रमण न आवे,
   इंका पेड़ा न कटवावे। धरती दुखियारी रे.....

-ओमप्रकाश थापन
आदर्श सेकेण्डरी स्कूल, लूणकरणसर
बीकानेर, मो.: 9413168535

वर्तमान समय में पर्यावरण एवं जीव संरक्षणः बिश्नोई समाज के लिए चुनौती

सिकुड़ता वन क्षेत्र और घटते वन्यजीव मानव जाति के लिए चिंता का विषय तो है ही, लेकिन बिश्नोई बाहुल्य इलाके में वन्यजीवों की घटती संख्या और भी चिंतनीय है। हरियाणा राज्य के चार जिलों हिसार, फतेहाबाद, सिरसा व भिवानी जिलों में जहां सरकार द्वारा घोषित कोई भी संरक्षित क्षेत्र नहीं है लेकिन संरक्षित क्षेत्रों से बाहर विशेषत: बिश्नोई बाहुल्य इलाकों में अनुसूचि 1 के वन्यजीवों जैसे राज्यपशु कालाहिरण, चिकांरा, नीलगाय, राज्य पक्षी काला तीतर, राष्ट्रीय पक्षी मोर आदि स्वच्छंद विचरण करते हैं। इसी तरह राजस्थान, पंजाब, मध्यप्रदेश राज्यों में कहीं वन्यजीव खेतों में विचरण करते दिखाई दें तो सहज ही बिश्नोई बाहुल्य इलाका होने का आभास हो जाता है। लेकिन दु:ख का विषय है कि मात्र गत एक दशक में ही इनकी संख्या हजारों से मात्र सैंकड़ों में आ गई है। अगर हिरणों की संख्या इसी तरह से सिकुड़ती रही तो चंद ही वर्षों में समाज अपनी पहचान खो देगा ? घटते वन्य जीवों के मुख्य कारण सिंचाई माध्यमों के कारण बढ़ रहा कृषि क्षेत्र और सिकुड़ता वन्य जीव आवास, अवारा मासांहारी कुते, ब्लेडनुमा धारदार तारों की बाड़बंदी आदि है। एक तरफ तो दृश्य है जिसमें बिश्नोई माताएं हिरण शावकों को दूध पिला रही है, कुछ किसान खेत में हिरणों के चरने को शुभ मानते हैं और दूसरी तरफ बिश्नोई किसान के समक्ष भी वन्य जीवों के संरक्षण के साथ-साथ अपने पेट पालने नौबत आन खड़ी है। फसल सुरक्षा के लिए तरह-तरह की बाड़, बांवरी जाति के रखवाले, घोड़ों व खतरनाक कुत्तों से वन्यजीवों को खदेड़ना आदि तरीके अपनाए जा रहे हैं। अधिकतर वन्यजीव जैस काला हिरण, चिकांरा, नीलगाय, तीतर, राष्ट्रीय पक्षी मोर, शैहा, लोमड़ी, गीदड़ आदि टिब्बों की जमीन पर बने कुदरती आवासों में रहते आए हैं लेकिन गत दस बीस वर्षों में सिंचाई के माध्यम जैसे ट्यूबवैल व लम्बी पाइपलाइन आदि के कारण ये टिब्बे/कुदरती आवास सिकुड़ते जा रहे हैं। ये दुर्भाग्य ही है कि कुदरत ने रहने के लिए जगह सभी जीवों को दी है पर कागजों में मालिकाना हक इंसानों के नाम दर्ज है। जीवों के नाम जो जमीन बणी/गौचारन के नाम पर बची थी उस पर भी इंसान कब्जे किए जा रहा है।

बुजुर्ग बताते हैं कि पहले गांवों के चारों तरफ हिरणों की डार होती थी लेकिन अब गिनती के ही जीव बचे हैं जो जान छिपाते फिर रहे हैं। एक मादा हिरणी 14 माह के समय अंतराल में दो बार बच्चे देती है। बिश्नोई समाज के लोग हर सम्भव व भरसक प्रयास कर रहे हैं लेकिन परिणाम ढाक के तीन पात हैं और संख्या दिनोंदिन घट ही रही है।

गत 5 सालों के मेरा व्यक्तिगत कार्यानुभव रहा है जिससे मेरे सामने कुछ कारण व तथ्य आए हैं, जिनके अभाव में वन्यजीवों का संरक्षण नहीं हो पा रहा है। पहले समाज का हर व्यक्ति जीवों के प्रति भाव रखता था और जीव को बचाने के लिए अपने स्तर पर प्रयास करता था चाहे वो शिकार की घटना हो, कुत्तों या अन्य दुर्घटना में घायल जीव हो लेकिन गत 10-20 वर्षों में समाज में जीव रक्षा के नाम पर कुछ संगठन खड़े हुए जिनका प्रारम्भिक उद्देश्य समाज की सहायता से ही सगंठित होकर वन्यजीव संरक्षण का कार्य रहा होगा लेकिन हुआ ये कि उनके बार-बार स्वप्रचार के चलते आम बिश्नोईजन उन्हें ही जीव रक्षा के ठेकेदार समझने लगे और घटना होने पर स्वयं कुछ करने की बजाय जीव रक्षा संस्थाओं पर ही निर्भर रहने लगे। इन सभाओं के खण्ड/जिला/राज्य स्तर के पदाधिकारियों ने भी प्रचार लिप्सा में लोगों को अपने सम्पर्क देने का अभियान शुरू किया। संस्थाओं के पास कोई भी संसाधन जैसे कि चिकित्सा के उपकरण, एमरजेंसी चिकित्सा सुविधा, घायल वन्यजीव का कैसे बचाव किया जाए, पशु परिवहन के साधन, दवाइयां और यहां तक पदाधिकारियों को वन्यजीव कानून की भी कोई जानकारी नहीं है। शिकार की घटना होने की सूचना मिलने पर सैंकड़ों बिश्नोईजन इकट्ठे हो जाते हैं, दबाव बनाते हैं, मामला दर्ज हो जाता है लेकिन उसके बाद क्या रहा ? क्या लिखित शिकायत दी गई, शिकायत में ऐसे क्या तथ्य लिखे गए जिससे केस मजबूती से न्यायालय में गया हो ? गवाह कौन बने, क्या गवाही दी, सजा हुई या नहीं इत्यादि पर कोई गौर नहीं करता। भारत में न्यायिक प्रक्रिया लम्बी चलती है जिसका फायदा अवश्य ही शिकारी उठाते हैं। लम्बी प्रक्रिया व दबाव/डर आदि से गवाह भी प्रभावित होते हैं। कुल मिलाकर परिणाम ये हुआ कि वन्यजीवों की संख्या घटती गई, आम बिश्नोई भी अपेक्षित परिणाम ना मिलने

पर हताश हो रहा है।

क्या होना चाहिए?

वन्यजीवों व पशुओं से संबंधित बहुत से कानून है जिनकी जानकारी समाज के जागरूक लोगों को होना बहुत जरूरी है। धैर्य व सहजता से कानूनी सीमा में रहकर अच्छे परिणाम हासिल किए जा सकते हैं। समाज की जीव रक्षा संस्थाओं द्वारा जागरूक लोगों की गांव स्तर पर ही इकाई गठित करनी चाहिए जो कि अपने अधिकार क्षेत्र में वन्यजीव संरक्षण कर सकें, जीव रक्षा संस्थाएं उन्हें कानूनी जानकारी, चिकित्सा के उपकरण, एमरजेंसी चिकित्सा सुविधा, घायल वन्यजीव की कैसे रक्षा की जाए, पशु परिवहन के साधन, दवाइयां आदि सुविधाएं व प्रशिक्षण उपलब्ध करवाएं। शिकार आदि की घटना पर समझदारी से काम लेते हुए शुरू दिन से शिकायत से लेकर कानूनी कार्यवाही तक जीव रक्षा सभाएं साथ दें। समाज के लोगों को वन्यजीवों से संबंधित कानूनी व सरंक्षण प्रक्रिया की जानकारी विशेष कैम्प व शिविर लगाकर दें जैसा कि जाम्भाणी साहित्य अकादमी द्वारा किया जा रहा है। जीव रक्षा संस्थाओं की खण्ड व जिला स्तर की इकाइयां गठित हो। खण्ड स्तर पर कम से कम दो पशु एम्बुलेंस व एक रेस्क्यु सेंटर जहां घायल जीव के बहाल होने तक की व्यवस्था हो, की सुविधा समाज के सहयोग से की जाए। कम से कम जिला स्तर पर अमर शहीद बहन अमृता देवी के नाम पर फलदार पौधों की नर्सरी स्थापित हो, समाज के स्वयंसेवक ग्रीन ब्रिगेड के रूप में एकजुट होकर अपने क्षेत्रों में फलदार पौधारोपण करें। फलदार पौधों से मानव के साथ-साथ पशु-पक्षियों को खानपान के साथ-साथ आश्रय भी मिलता है। साधु समाज को खण्ड स्तर पर पशु एम्बुलेंस व एक रेस्क्यु सेंटर के सुचालन के लिए कथा आयोजन करके आर्थिक सहायता करनी चाहिए। समाज के साधन सम्पन्न लोग, व्यवसायी व नौकरी पेशा लोग जीव रक्षा संस्थाओं को भी आर्थिक सहायता प्रदान करें। 2 से 5 फरवरी तक गुरुग्राम मे हिन्दु सेवा संस्थाओं का मेला आयोजित हुआ। उसी तर्ज पर बिश्नोई समाज की सेवा संस्थाएं अपने कार्यों का ब्यौरा व लेखा जोखा मुकाम मेले के दौरान समाज के सामने प्रस्तुत करें।

-**विनोद कड़वासरा**, महासचिव
पर्यावरण एवं जीव रक्षा बिश्नोई सभा, हरियाणा
गांव बड़ोपल, फतेहाबाद
मो. : 09812181008

मनुष्य के क्रियाकलापों से उत्पन्न अपशिष्ट उत्पादों के रूप में पदार्थों एवं ऊर्जा के विमोचन से प्राकृतिक पर्यावरण में होने वाले हानिकारक परिवर्तनों को प्रदूषण कहते हैं।

-राष्ट्रीय पर्यावरण अनुसंधान परिषद्, 1976

पर्यावरण प्रहरी

1. प्लास्टिक मुक्त भारत के लिए,
   कई हजार किलोमीटर जमीन नापे है।
   जनजागरण के लिए जरुरी समझकर,
   प्लास्टिक बैनर भी छापे है॥
2. पेड़ जरुरी है, यह सन्देश घर-घर
   पहुँचाने में सभी आगे है।
   प्रचार सामग्री बनवाने में,
   कई सारे पेड़ों की आहूति भी मांगे है॥
3. छेड़ा अभियान बड़ा भारी,
   पौधे लगाकर फोटो जरूर खिंचवाये है।
   सोशल मीडिया के शूरमा,
   पानी को तरसते पौधे छोड़ आये है॥
4. थामकर प्रचार की पतवार,
   नाव पर्यावरण की सारे जहान में खेते है।
   देखेंगे जरूर कभी हमें भी,
   यह सोचकर आस-पड़ोस इंतजार करते हैं॥
5. मिल जायेंगे जरूर, कई सच्चे पर्यावरण प्रहरी
   जो निस्वार्थ काम करते है।
   परवाह नहीं कोई पहचाने उन्हें,
   हो हल्ले से दूर जो निशदिन खपते है॥

-सी.ए. मांगीलाल बिश्नोई
मुम्बई (महाराष्ट्र)

पर्यावरण प्रदूषण को कैसे रोकें?

पर्यावरण चारों ओर के सम्पूर्ण जड़ और चेतन पदार्थों का सम्मिलित नाम है। सामान्य पर्यावरण में एक संतुलन विद्यमान रहता है जो जीवन और जगत के लिए हितकारी है। पर्यावरण का प्रदूषण जीवन के लिए घातक है। प्रदूषण का अर्थ है दूषित करना, अपवित्र करना और विकृत करना। वातावरण की भौतिक, रासायनिक और जैविक अवस्था में ऐसा परिवर्तन जिससे मनुष्यों, पशुओं, पक्षियों, जलचरों, वनस्पतियों अथवा सुन्दर स्थानों और भवनों को हानि हो। जैसे वायु, जल, भूमि, आकाश और ध्वनि का प्रदूषण आज समस्त भूमंडल की मानव जाति के लिए घोर चिन्ता का विषय और संकट का कारण है।

प्रकृति सदा पवित्र है। वह विकृत होने पर प्रदूषण का रूप धारण कर लेती है। जो भगवान् की समस्त जड़ और चेतन सृष्टि के लिए हानिकारक है। युग-युगान्तर से थोड़ी बहुत उथल-पुथल धरती पर होने के कारण भी प्राकृतिक संतुलन बना रहा। वातावरण अधिक प्रदूषित नहीं होता था। किन्तु वैज्ञानिक आविष्कारों, प्रोद्यौगिकी के अन्धाधुंध विकास, शस्त्रीकरण, विशेषकर परमाणु हथियारों के निर्माण, अनियोजित औद्योगिकीकरण के कारण सारे संसार में पर्यावरण के प्रदूषण की समस्या गंभीर रूप धारण करती जा रही है। यदि पर्यावरण जल, वायु और भूमि शुद्धि पर अविलम्ब ध्यान नहीं दिया गया तो मानव जाति के भविष्य के लिए एक बड़ा खतरा उत्पन्न हो जाएगा।

आज सारे संसार में आतंकवाद का खतरा बढ़ रहा है किन्तु पर्यावरण के संरक्षण पर ध्यान नहीं दिया गया तो बढ़ती हुई आबादी के कारण मानव जाति का अस्तित्व अंधकारमय हो जाएगा। आज संसार के बड़े-बड़े वैज्ञानिक, दार्शनिक, पर्यावरणविद् और महापुरुष इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि महानगरों में जीवन हरियाली वन, बागों और वृक्षों के अभाव के कारण नारकीय रूप बढ़ता जा रहा है। जहां पीने के लिए निर्मल जल और श्वास लेने के लिए शुद्ध वायु का अभाव होता जा रहा है। भयंकर ध्वनि प्रदूषण भी वाहनों, कारखानों की अधिकता के कारण बढ़ रहा है।

एक समय विश्वभर में पर्वत हरियाली से ढके रहते थे। भारत में कभी सघन वन थे, निर्मल नदियां थी, गांवों में पशुओं के लिए गोचर भूमि और निर्मल सरोवर थे जिनके तट या पाल पर विशाल बड़ और पीपल होते थे। भारत की वन संपदा धीरे-धीरे काल के गाल में समा गई है। वन संपदा के साथ सुन्दर पक्षियों और वन्य जन्तुओं की प्रजातियां भी विलुप्त होती जा रही हैं। वृक्ष पर्यावरण के सबसे बड़े रक्षक हैं। विश्वव्यापी पर्यावरण की रक्षा के लिए और भारत मे पर्यावरण की रक्षा के लिए प्रदूषण को रोकने के लिए अनेक कानून हैं। मानव पर्यावरण संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन स्टॉकहोम में 5 से 16 जून तक सन् 1970 में हुआ था। इसमें यह विचार किया गया कि पर्यावरण के सम्बन्ध में सामान्य दृष्टिकोण की और सामान्य सिद्धान्तों की आवश्यकता है जिसके फलस्वरूप विश्व के मानवों को प्रेरणा और पथ-प्रदर्शन हो जिससे वे मानव-पर्यावरण का संरक्षण और संवर्धन करें।

संयुक्त राष्ट्र संघ का सम्मेलन पर्यावरण और विकास के सम्बन्ध में रायो-डे जेनेरो में दिनांक 3 से 14 जून, 1997 में आयोजित किया गया था जिसमें स्टाकहोम घोषणा की पुष्टि की गई और जलवायु परिवर्तन जैविक विविधता पर भी गंभीरतापूर्वक विचार किया गया।

भारतीय दंड संहिता (1860) सितंबर 2008 को यथा विद्यमान में उल्लेख है। भारतीय दंड संहिता में लोक-न्यूसंस के नियंत्रण का प्रावधान है। ध्वनि-नियंत्रण का प्रावधान दण्ड प्रक्रिया संहिता 1973 के अन्तर्गत धारा 133 में हैं। दण्ड प्रक्रिया संहिता की धारा 144 के अन्तर्गत वह प्रावधान है।

भारत में भी जल संरक्षण प्रदूषण नियंत्रण के लिए 1974 और 1981 में अधिनियम पारित किये थे। इस प्रकार भारत में वायु प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण एक्ट 1981 में पारित किया गया था। इसी प्रकार केन्द्रीय और राज्यों के बोर्ड वायु प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण के लिए गठित किए गए थे। पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के लिए वनों की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण है। दुर्भाग्य से वनों का भौतिक विकास के कारण अंधाधुंध विनाश किया जा रहा है। इसलिए भारत में वन सुरक्षा अधिनियम 1920 में पारित हुआ था।

पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम 1986 में पारित हुआ था। इस एक्ट का उद्देश्य पर्यावरण की रक्षा, सुधार और उससे सम्बन्धित मामलों से था जो संयुक्त राष्ट्र संघ का सम्मेलन स्टॉकहोम में जून 1972 में हुआ था। उसमें भारत ने भी भाग लिया था जिसका लक्ष्य पर्यावरण की सुरक्षा-सुधार और मानवों, अन्य जीवित प्राणियों, सूक्ष्म जीवों, वृक्षों, वनस्पतियों और सम्पत्ति और अनेक बाधाओं, खतरों और आपदाओं से रक्षा करना था। पर्यावरण के प्रदूषण पदार्थ है, ठोस, तरल, गैस सम्बन्धी पदार्थ, उपस्थित, संकलित हों जो पर्यावरण के लिए हानिकारक हों।

केन्द्रीय सरकार की पर्यावरण की सुरक्षा, सुधार पर्यावरण के प्रदूषण पदार्थ को रोकने, नियंत्रित करने के लिए सामान्य शक्तियों का इस एक्ट के अंतर्गत प्रावधान है।

संयुक्त राष्ट्र संघ का एक सम्मेलन रायो डे जेनरो में जून 1992 में हुआ, जिसमें भारत की भी भागीदारी थी। जिसका उद्देश्य प्रदूषण से पीड़ितों और अन्य पर्यावरण से सम्बन्धित हानियों से क्षतिपूर्ति करना था, तदनुसार इसकी अनुपालना के लिए भारत सरकार ने राष्ट्रीय पर्यावरण न्यायधिकरण के लिए एक एक्ट 1995 में पारित किया जिसका लक्ष्य पर्यावरण प्रदूषण से हानि और दुर्घटनाओं से सम्बन्धित पीड़ितों को मुआवजा देने का प्रावधान है।

भारत सरकार ने राष्ट्रीय पर्यावरण अपील प्राधिकरण एक्ट को 1997 में पारित किया था जिसका उद्देश्य उन उद्योगों की स्थापना को रोकना और कारखानों के सुरक्षोपाया के बारे में अपीलार्थियों को सुनना था। भारत के संविधान के अनुच्छेद 32 और 226 के अंतर्गत पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रावधान है कि कोई भी व्यक्ति जनहित याचिका के माध्यम से न्यायालय में याचिका दायर कर सकता है।

भारत के संविधान के अनुच्छेद 51ए में भारतीय नागरिकों के मूल कर्त्तव्यों का प्रावधान है। उसके अंतर्गत (छ:) में उल्लेख है। प्राकृतिक पर्यावरण को जिसके अंतर्गत वन, झील नदी और वन्य जीव है। रक्षा करें और उनका संवर्धन करें तथा प्राणीमात्र के प्रति दया भाव रखें। भारतीय ऋषि-मुनि, साधु-संत पर्यावरण के संरक्षण के लिए पौधारोपण के लिए जोर देते आये हैं। प्राकृतिक पर्यावरण का संरक्षण जीवों की रक्षा, समस्त भारतीय धर्मों और सम्प्रदायों का धार्मिक और सांस्कृतिक विषय रहा है।

भारत का माननीय सर्वोच्च न्यायालय भी पर्यावरण संरक्षण और संवर्धन का प्रबल पक्षधर हैं। युगयुगान्तर से वैज्ञानिक अविष्कारों और तकनीकी का विकास मानव जाति के हित और सुख-सुविधा के लिए होता रहा है। पर लोगों के स्वार्थ और लोभ के वशीभूत होने के कारण इसके दुरूपयोग के कारण, यह केवल समस्त मानव जाति के लिए ही नहीं अपितु पशु-पक्षियों, वृक्ष-वनस्पतियों, सूक्ष्म जीवों और अन्य जीव-जन्तुओं, कीड़े-मकोड़ों के विनाश और संकट के कारण उत्पन्न हो गये हैं।

धरती की उपजाऊ मिट्टी प्रदूषित होकर जहरीली हो गई है। आकाश में ओजोन परत फट चुकी है जिसके कारण किरणों से चमड़ी कैंसर का भय उत्पन्न हो गया है। वैश्विक ग्लोबल वार्मिंग के कारण धरती का तापमान बढ़ गया, ग्लेशियर पिघलने लगे हैं। समुद्र तट का जलस्तर ऊँचा होता जा रहा है जिसके कारण समुद्र तट के टापू समुद्र के उदर में समा रहे हैं। प्रकृति भयंकर विकृत रूप धारण कर रही है। बेमौसम की वर्षा होने लगी है। कहीं अकाल पड़ रहे हैं तो कहीं

भूकम्प आ रहे हैं, कहीं सुनामी लहरों का ताण्डव नृत्य हो रहा है। कहीं नदियां सूख रही हैं। कहीं ओलों की बरसात है। उत्तराखण्ड और कश्मीर की आपदाएं प्रकृति से छेड़छाड़ का ही परिणाम है।

प्रकृति या पर्यावरण के संरक्षण और संवर्धन के अनेक अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय कानून हैं। नि:सन्देह एक प्रकार से वे पर्यावरण संरक्षण में बड़े सहायक हैं। इन कानूनों में दण्ड- विधान का प्रावधान भी है। वस्तुत: भूमिगत यथार्थ यह प्रकृति संरक्षण और प्रदूषण नियंत्रण के लिए केवल कानूनों का प्रावधान और निर्माण पर्याप्त नहीं है। कभी-कभी कुछ कानून पुस्तकों तक ही सीमित रह जाते हैं। कानूनों का अनुपालना भी आवश्यक है। आज पर्यावरण का संरक्षण और संवर्धन केवल मानव जाति ही नहीं अपितु समस्त भूमण्डल के जीव-जगत जड़ और चेतन के अस्तित्व का प्रश्न है। प्रकृति और पर्यावरण का संरक्षण हमारा मानवाधिकार ही नहीं अपितु समस्त मानव जाति का पावन कर्त्तव्य है। हमारे इस पावन कर्त्तव्य का पालन करना हम सभी का दायित्व है।

पर्यावरण प्रदूषण के रोकने के कुछ उपाय इस प्रकार हैं-

1. पर्यावरण-संरक्षण और संवर्धन के जितने भी कानून हैं, उनकी दृढ़ता और कठोरता से अनुपालना हो। उसमें केवल सरकार, न्यायालय की भूमिका भी बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती है।
2. भारत के किसान और सैनिक पर्यावरण संरक्षण और संवर्धन के सबसे बड़े सहायक हैं। किसानों में जागरण और उनका उचित मार्गदर्शन हो। उन्हें सरकार नि:शुल्क पौधे सरकारी नर्सरियों, पौधशालाओं से प्रदान करें।

आज भारत का किसान बहुत दु:खी और दिशाहीन है। किसान का कर्त्तव्य केवल अन्न और सब्जी उत्पादन ही नहीं है, उसका कर्त्तव्य पशुपालन और वृक्षारोपण भी है। केवल भारत का किसान ही भारत में हरित क्रान्ति अभियान चलाकर इस सुन्दर देश को हरियाली से ओतप्रोत कर सकता है।

पुलिस और फौज के जवान भी पर्यावरण प्रदूषण को दूर कर देश की हरित क्रान्ति में महत्वपूर्ण भागीदार हो सकते हैं। स्कूलों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों के छात्र, छात्राएं, महानगरों, नगरों और गांवों में वृक्षारोपण करके पुण्य के भागी बन सकते हैं।

आज पर्यावरण प्रदूषण केवल भारत की समस्या नहीं है। यह समस्त धरती की समस्या है। संयुक्त राष्ट्र संघ और समस्त संसार के राष्ट्र पर्यावरण संरक्षण और संवर्धन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह कर सकते हैं। प्रदूषण को रोकने के लिए वृक्षारोपण ही सबसे बड़ा उपाय है। वृक्ष ऑक्सीजन देते हैं और कार्बन-डाई-आक्साइड का भक्षण करते हैं। संसार के बड़े राष्ट्रों संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन सबसे अधिक कचरा फैंकते हैं। परमाणु बमों का कचरा भी प्रदूषण का जनक है। अमेरिका और चीन में अधिक कचरा न फैंकने के लिए पिछले दिनों समझौता हुआ है। पर्यावरण-संरक्षण और प्रदूषण निवारण के लिए यज्ञों का अनुष्ठान भी आवश्यक है। यह भारत की प्राचीन वैदिक परम्परा है।

-डॉ. ब्रह्मानन्द
पूर्व विभागाध्यक्ष (हिन्दी)
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

पर्यावरण सम्पूर्ण बाह्य परिस्थितियों एवं प्रभावों का जीवधारियों पर पड़ने वाला सम्पूर्ण प्रभाव है जो उनके जीवन, विकास एवं कार्यों को प्रभावित करता है।

-हर्षकोविट्स

--00--

पर्यावरण का अर्थ उन दशाओं के योग से होता है जो मनुष्य को निश्चित समय में निश्चित स्थान पर आवृत करती है।

-पार्क

बिश्नोई समाज के प्रमुख धाम

जाम्भाणी पर्व एवं अमावस्या

सम्वत् 2074 आषाढ़ की अमावस्या

लगेगी-23.6.2017, शुक्रवार, प्रात: 11.49 बजे

उतरेगी-24.6.2017, शनिवार, प्रात: 8.00 बजे

सम्वत् 2074 श्रावण की अमावस्या

लगेगी-22.7.2017, शनिवार, सायं 6.27 बजे

उतरेगी-23.7.2017, रविवार, सायं 3.15 बजे

सम्वत् 2074 भाद्रपद की अमावस्या

लगेगी-20.8.2017, रविवार, रात्रि 2.09 बजे

उतरेगी-21.8.2017, सोमवार, रात्रि 11.59 बजे

उनतीस धर्म नियम

- तीस दिन सूतक रखना।
- पांच दिन ऋतुवन्ती स्त्री का गृहकार्य से पृथक् रहना।
- प्रतिदिन सवेरे स्नान करना।
- शील का पालन करना व संतोष रखना।
- बाह्य और आन्तरिक पवित्रता रखना।
- द्विकाल संध्या-उपासना करना।
- संध्या समय आरती और हरिगुण गाना।
- निष्ठा और प्रेमपूर्वक हवन करना।
- पानी, ईंधन और दूध को छान कर प्रयोग में लेना।
- वाणी विचार कर बोलना।
- क्षमा-दया धारण करना।
- चोरी नहीं करनी।
- निन्दा नहीं करनी।
- झूठ नहीं बोलना।
- वाद-विवाद का त्याग करना।
- अमावस्या का व्रत रखना।
- विष्णु का भजन करना।
- जीव दया पालणी।
- हरा वृक्ष नहीं काटना।
- काम, क्रोध आदि अजरों को वश में करना।
- रसोई अपने हाथ से बनानी।
- थाट अमर रखना।
- बैल बधिया नहीं कराना।
- अमल नहीं खाना।
- तम्बाकू का सेवन नहीं करना।
- भांग नहीं पीना।
- मद्यपान नहीं करना।
- मांस नहीं खाना।
- नीला वस्त्र व नील का त्याग करना।

RNI No. : 12406/57
POSTAL REGD. NO. : L/Regd. NP/HSR/01/2017-2019
L/WPP/HSR/03/17-19

POSTAGE PREPAID IN CASH
POSTED AT : HISAR H.O.
POSTING DATE : 1st OF EVERY MONTH

REAP CODE : 65

Lets make the future...

ADMISSIONS OPEN

BRANCHES

B.Tech.
- Petroleum Engg.
- Civil Engg.
- Electrical Engg.
- Electronics & Comm. Eng.
- Mechanical Engg.
- Computer Science

M.Tech.
- VLSI and Embedded System Design

ITI
- Electrician

Polytechnic Diploma
- Civil
- Electrical
- Mechanical
- Electronics & Communication
- Mechanical Automobile
- Computer Science

With all Basic Facilities Like
- Hostel
- Transportation
- ATM
- Sport & Activities
- Library
- Practical Labs

पिनाका कार बना नेशनल रेस चैम्पियन में राजस्थान को दूसरा स्थान

कॉलेज के मैकेनिकल इंजीनियरिंग के छात्रों कि दस सदस्यी टीम ने 'पिनाका कार बनाकर मेगा एटीवी चैम्पियनशिप में शानदार प्रदर्शन करते हुए प्रदेश स्तर पर दूसरा स्थान प्राप्त किया।

WHY WE ARE IN NEWS

बालकिशन रहा राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय की मैरिट में

SLBS के इलेक्ट्रीकल एण्ड इलेक्ट्रोनिक्स इंजिनियरिंग ब्रांच के अन्तिम वर्ष के छात्र बालकिशन ने राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय में पूरे राजस्थान में चौथा स्थान प्राप्त करते हुए SLBS का ही नहीं अपितु जोधपुर का नाम गौरान्वित किया।

STUDENTS SELECTED IN GOVERNMENT DEPARTMENT

STUDENTS PLACED IN VARIOUS COMPANIES

SLBS EDUCATION
(Approved by AICTE & Affiliated To RTU Kota)

SLBS
ENGINEERING COLLEGE
JODHPUR

NH-112, Jaipur-Jodhpur National Highway
Dangiyawas, Jodhpur

slbseducation@gmail.com www.slbsjodhpur.com
https://www.facebook.com/slbsengineeringcollege.jodhpur

Ph.: 0291-2271190/91
Cell : 98291-43285, 96369-41130, 83849-51661

DOREX Printers 9896011117

मुद्रक, प्रकाशक प्रदीप बैनीवाल, प्रधान, बिश्नोई सभा, हिसार ने डोरेक्स ऑफसेट प्रिंटर्स, हिसार से बिश्नोई सभा, हिसार के लिए मुद्रित करवाकर 'अमर ज्योति' कार्यालय, श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार से दिनांक 1 जून, 2017 को मुख्य डाकघर, हिसार से प्रेषित किया।